स्मरण कला

गुजराती लेखक

शतावधानी पं. धीरजलाल टोकरसी शाह

हिन्दी अनुवादक

शतावधानी मुनि मोहनलाल 'शार्दूल'

प्रकाशक

देवेन्द्र राज मेहता

सचिव, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान,
जयपुर (राज)

□

स्मरण कला

प धीरजलाल टो शाह

मुनि मोहनलाल 'शार्दूल'

□

मूल्य

पन्दरह रुपये

□

प्रथमावृत्ति १६८०

□

प्राप्ति स्थान

राजस्थान प्राकृत भारती स स्थान

गोलेछा हवेली, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
ज य पु र (राजस्थान) ३०२००३

□

मुद्रक

अर्चना प्रकाशन,

अ ज मे र (राजस्थान)

प्रका ीय

प्राकृत भारती सस्थान का चौथा प्रकाशन—'स्मरण कला' प्रस्तुत है।

पाश्चात्य मनोविज्ञान के आधार पर स्मृति को विकसित करने हेतु कई पुस्तके प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत प्रकाशन मे स्मृति विकास हेतु भारतीय परम्परा के अवधान सिद्धान्त पर प्रारम्भिक प्रकाश डाला गया है। आज भी, विशेष रूप से जैन परम्परा के कई अनुयायी अवधान प्रणाली के आधार पर विकसित स्मृति प्रदर्शित करते है। इन व्यक्तियो मे एक साथ सौ प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जिन्हे वे उसी प्रकार पुन उद्धृत कर देते है। इससे यह ज्ञात होता है कि स्मृति का कितना असाधारण विकास हो चुका है। ऐसे ही एक व्यक्ति धीरजभाई टोकरसी है। इन्हे प्राकृत भारती सस्थान की ओर से स्मरण कला पर स्वलिखित गुजराती पुस्तक का हिन्दी मे अनुवाद करवाने और उसका इस सस्थान की ओर से प्रकाशन करने का अनुरोध किया। उनकी स्वीकृति प्राप्त करने मे राजस्थान साहित्य के प्रमुख विद्वान् श्री अगरचन्द जी नाहटा का विशेप प्रयास रहा। हिन्दी अनुवाद-श्री मोहनलाल मुनि "शार्दूल" ने किया जो स्वय भी लेखक की तरह शतावधानी हैं। लेखक एव अनुवादक के प्रति सस्थान बहुत ही आभारी है क्योंकि उनके प्रयासो के फलस्वरूप स्मृति-कला सम्बन्धी परम्परागत भारतीय सिद्धान्त विशेष रूप से हिन्दी-जगत् मे प्रकाश मे आये हैं।

डॉ सिन्हा (जो राजस्थान विश्वविद्यालय मे मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष हैं) ने इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। इस सम्बन्ध मे उनको निवेदन इस आधार पर किया गया था कि पाश्चात्य मनोविज्ञान के विशेषज्ञ के रूप मे पराम्परागत स्मृति-कला के सिद्धान्त जो इस पुस्तक मे प्रस्तुत हैं, उन पर उनके विचार-प्राप्त हो सकें।

पुस्तक प्रकाशन मे डॉ बद्रीप्रसाद पचोली, सस्थापक, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, महोपाध्याय विनयसागर, सयुक्त सचिव, राजस्थान प्राकृत भारती सस्थान, जयपुर और श्री पारस मसाली के प्रति भी सस्थान आभारी है।

देवेन्द्रराज मेहता

सचिव

आमुख

1—शतावधानी विद्वानो ने जीवन दर्शन, ग्र थो के आलेख मे स्मृति जैसी मौलिक एव आधारभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से सम्बन्धित अत्यन्त ही गूढ एव गहन चितन प्रस्तुत पुस्तक मे उपलब्ध है। जैन मुनियो ने अपनी दूरदर्शिता एव ग्रहणशीलता को आधार बनाकर आज से सदियो पूर्व सीमित साधन एव वैज्ञानिक प्रगति के न होने पर भी बीज रूप से उच्च मानसिक क्रियाओ के गत्यात्मक पक्षो को सहज रूप से उजागर करने की सराहनीय चेष्टा की है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने पच्चीस पत्रो की शृ खला मे सरस रूप से हर कडी मे प्रत्येक पत्र द्वारा 'स्मरण कला' के आधार को अभिव्यक्त किया है। इस पुस्तक मे सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्मरण क्रिया एव उससे सम्बन्धित अनेक प्रक्रियाओ को एक कला के रूप मे स्वीकार किया है। कला की अभिव्यक्ति को जैसे सजाया व सवारा जा सकता है, ठीक उसी भाँति स्मृति को भी विकसित किया जा सकता है।

2—पत्रो की शृ खला द्वारा व्यक्त गहन विचारो के परम शुद्ध रूप से जिज्ञासु प्रणाली के परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करने का अनूठा एव अनुपम प्रयास है। भारतीय सदर्भ मे नचिकेता की ज्ञान-पिपासा को शात करने की यह विधि तथाकथित वैज्ञानिक विधियो से सर्वोपरि है।

3—मनोवैज्ञानिक सप्रत्ययो मे पाश्चात्य वैज्ञानिकता को समाविष्ट करने हेतु वस्तुपरक दृष्टिकोण का निर्माण कर हम स्मृति जैसी जटिल मानसिक प्रक्रियाओ को कहाँ अध्ययन कर उसकी सूक्ष्मता एव गूढता को जान पाये है यह आज भी एक विचारणीय प्रश्न बना हुआ है।

4—पाश्चात्य जगत् के वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिको ने स्मृति सुधार पर किये गये अनेक शोधो के आधार पर केवल 'स्मृति प्रशिक्षण' की बात की है-दूसरी ओर मौलिक रूप से स्मृति के सबध मे चिंतन कर विश्लेषणात्मक विचारो के आधार पर इस पुस्तक के सत प्रवर्तक ने 'स्मृति-साधना' की सोपान को लाकर खडा कर दिया है।

5—मेरे विचार मे इस कृतित्व का मूल्याकन पाश्चात्य जगत् के विचारको के मतो से तुलनात्मक विधि को अपनाकर उनमे समता और

विषमता ढूँढना यथोचित नही होगा। 'स्मृति साधन' के पच्चीस पत्र वस्तुत एक माला के मणियो की भाँति है—क्योकि हर पत्र पत्र स्मृति प्रक्रिया के किसी न किसी पक्ष पर समुचित रूप से प्रकाश डालता है—तथा कई मौलिक तत्वो को उजागर करता है।

6—प्रत्येक पत्र मे प्रस्तुत किये गये प्रमुख तथ्यो का सारस्प से विश्लेषण करना अनिवार्य है। प्रथम पत्र मे स्मृति को विकसित करने के लिये चार बातो का होना आवश्यक माना गया है सकल्प, अभ्यास, एकाग्रता तथा विविध विकल्पो के समाधान करने की तत्परता Readiness for differential cue selection, दूसरे पत्र मे स्मृति को पतजलि के चिंतन के अनुसार चित्त को आतरिक साधन की सज्ञा दी गई है एव चित्त को निम्नलिखित पाच वृत्तियो मे सम्मिलित किया गया है . 1) प्रमाण, 2) विपर्यय, 3) विकल्प, 4) निद्रा, 5) स्मृति। स्मृति को मन के तीन प्रकार के व्यापारो—बुद्धि एव विचार प्रधान व्यापार, Cognitive Memorizing, भाव प्रधान व्यापार Emotional Memorizing एव इच्छा या अभिलाषा प्रधान व्यापार Motivated Memorizing से सम्बन्धित माना गया है। प्रतीति (Percept) के द्वारा सस्कार (Impression) जिसे शरीर क्रिया मनोवैज्ञानिक engrams कहते हैं, उसका निर्माण होता है और इनके पुन. सक्रियण Re-activations से स्मृति विकास होता है। तीसरे पत्र मे स्मरण के नैदानिक पक्षो, जिसकी चर्चा गीता मे भी की गई है, का उल्लेख करते हुए कहा है, 'स्मृतिभ्रशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।' आधुनिक मनोवैज्ञानिक इसे कहते है कि 'Memory offers a basis of cognitive development चौथे पत्र मे स्मरण के प्रकार को अतिमद, मद, विभागीय मद, तीव्र एव तीव्रतम श्रेणियो मे विभाजित किया गया है। सार रूप से यह स्वीकार किया गया है कि शक्ति क्षमता Capacity की अभिव्यक्ति से विचलनशीलता है। स्मृति प्रसार के सप्रत्यय मे स्मृति सुधार की सभावना निहित है। पाचवे पत्र मे स्मरण का विश्लेषण करते हुए स्मृतिलोक के दो प्रमुख वैज्ञानिक कारको की चर्चा की गई है। उत्तर स्मृति भ्रश और पूर्व स्मृति भ्रश जिसे आधुनिक मनोवैज्ञानिक retro active तथा Proactive स्वीकार करते है। इसके अतिरिक्त विस्मरण के चित्त की पाच Interference के रूप मे अवस्थाओ मे एकाग्रता को मुख्य माना गया है। छठे पत्र मे एकाग्रता की आवश्यकतायें तथा विषय को केन्द्र स्थान मे रखकर उसका वर्ग, अवयव गुण, स्वानुभव से विचार करना,

आमुख

1—शतावधानी विद्वानो ने जीवन दर्शन, ग्र थो के आलेख मे स्मृति जैसी मौलिक एव आधारभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से सम्बन्धित अत्यन्त ही गूढ एव गहन चितन प्रस्तुत पुस्तक मे उपलब्ध है। जैन मुनियो ने अपनी दूरदर्शिता एव ग्रहणशीलता को आधार बनाकर आज से सदियो पूर्व सीमित साधन एव वैज्ञानिक प्रगति के न होने पर भी बीज रूप से उच्च मानसिक क्रियाओ के गत्यात्मक पक्षो को सहज रूप से उजागर करने की सराहनीय चेष्टा की है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने पच्चीस पत्रो की श्रृ खला मे सरस रूप से हर कडी मे प्रत्येक पत्र द्वारा 'स्मरण कला' के आधार को अभिव्यक्त किया है। इस पुस्तक मे सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्मरण क्रिया एव उससे सम्बन्धित अनेक प्रक्रियाओ को एक कला के रूप मे स्वीकार किया है। कला की अभिव्यक्ति को जैसे सजाया व सवारा जा सकता है, ठीक उसी भाँति स्मृति को भी विकसित किया जा सकता है।

2—पत्रो की श्रृ खला द्वारा व्यक्त गहन विचारो के परम शुद्ध रूप से जिज्ञासु प्रणाली के परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करने का अनूठा एव अनुपम प्रयास है। भारतीय सदर्भ मे नचिकेता की ज्ञान-पिपासा को शात करने की यह विधि तथाकथित वैज्ञानिक विधियो से सर्वोपरि है।

3—मनोवैज्ञानिक सप्रत्ययो मे पाश्चात्य वैज्ञानिकता को समाविष्ट करने हेतु वस्तुपरक दृष्टिकोण का निर्माण कर हम स्मृति जैसी जटिल मानसिक प्रक्रियाओ को कहाँ अध्ययन कर उसकी सूक्ष्मता एव गूढता को जान पाये है यह आज भी एक विचारणीय प्रश्न बना हुआ है।

4—पाश्चात्य जगत् के वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिको ने स्मृति सुधार पर किये गये अनेक शोधो के आधार पर केवल 'स्मृति प्रशिक्षण' की बात की है-दूसरी ओर मौलिक रूप से स्मृति के सबध मे चितन कर विश्लेषणात्मक विचारो के आधार पर इस पुस्तक के सत प्रवर्तक ने 'स्मृति-साधना' की सोपान को लाकर खडा कर दिया है।

5—मेरे विचार मे इस कृतित्व का मूल्याकन पाश्चात्य जगत् के विचारको के मतो से तुलनात्मक विधि को अपनाकर उनमे समता और

विषमता ढूंढना यथोचित नही होगा । 'स्मृति साधन' के पच्चीस पत्र वस्तुत एक माला के मणियो की भाँति है—क्योंकि हर पत्र पत्र स्मृति प्रक्रिया के किसी न किसी पक्ष पर समुचित रूप से प्रकाश डालता है—तथा कई मौलिक तत्वो को उजागर करता है ।

6—प्रत्येक पत्र मे प्रस्तुत किये गये प्रमुख तथ्यो का साररूप से विश्लेषण करना अनिवार्य है । प्रथम पत्र मे स्मृति को विकसित करने के लिये चार बातो का होना आवश्यक माना गया है सकल्प, अभ्यास, एकाग्रता तथा विविध विकल्पो के समाधान करने की तत्परता Readiness for differential cue selection, दूसरे पत्र मे स्मृति को पतजलि के चिंतन के अनुसार चित्त की आतरिक साधन की सज्ञा दी गई है एव चित्त को निम्नलिखित पाच वृत्तियो मे सम्मिलित किया गया है · 1) प्रमाण, 2) *विपर्यय*, 3) *विकल्प*, 4) *निद्रा*, 5) *स्मृति । स्मृति को मन के तीन प्रकार* के व्यापारो—बुद्धि एव विचार प्रधान व्यापार, Cognitive Memorizing, भाव प्रधान व्यापार Emotional Memorizing एव इच्छा या अभिलाषा प्रधान व्यापार Motivated Memorizing से सम्बन्धित माना गया है । प्रतीति (Percept) के द्वारा सस्कार (Impression) जिसे शरीर क्रिया मनोवैज्ञानिक engrams कहते हैं, उसका निर्माण होता है और इनके पुन. सक्रियण Re-activations से स्मृति विकास होता है । तीसरे पत्र मे स्मरण के सैद्धानिक पक्षो, जिसकी चर्चा गीता मे भी की गई है, का उल्लेख करते हुए कहा है, 'स्मृतिभ्रशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।' आधुनिक मनोवैज्ञानिक इसे कहते है कि 'Memory offers a basis of *cognitive development* चौथे पत्र मे स्मरण के प्रकार को अतिमद, मद, विभागीय मद, तीव्र एव तीव्रतम श्रेणियो मे विभाजित किया गया है । सार रूप से यह स्वीकार किया गया है कि शक्ति क्षमता Capacity की अभिव्यक्ति से विचलनशीलता है । स्मृति प्रसार के सप्रत्यय मे स्मृति सुधार की सभावना निहित है । पाचवे पत्र मे स्मरण का विश्लेषण करते हुए स्मृतिलोक के दो प्रमुख वैज्ञानिक कारको की चर्चा की गई है । उत्तर स्मृति भ्र श और पूर्व स्मृति भ्र श जिसे आधुनिक मनोवैज्ञानिक retro active तथा Proactive स्वीकार करते है । इसके अतिरिक्त विस्मरण के चित्त की पाच Interference के रूप में अवस्थाओ मे एकाग्रता को मुख्य माना गया है । छठे पत्र मे एकाग्रता की आवश्यकतायें तथा विषय को केन्द्र स्थान मे रखकर उसका वर्ग, अवयव गुण, स्वानुभव से विचार करना,

यौगिक उपाय—दस प्रकार के साधन बताये गये है। सातवें एव आठवें पत्रो मे साधक की परिचर्या की चर्चा की गई है। नवे एव दसवें पत्रो मे स्मृति के सवेदनात्मक पक्षो की चर्चा करते हुए इन्द्रियो की कार्यक्षमता एव इन्द्रिय-निग्रह की परीक्षा की गई है। ग्यारहवें एव बारहवें पत्रो मे स्मृति मे कल्पना के योगदान की चर्चा करते हुए सृजनात्मकता (Creativity) के विकास को इगित किया गया है। तेरहवें पत्र मे कल्पना के विकास और उसके उपयोग मे स्मृति शिक्षण एव सृजनात्मकता शिक्षण को सम्बन्धित किया है। इस सम्बन्ध को पुष्ट करने के लिये आधुनिक पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक भी Momory Training का Creativity Training. से सबध जोडने के लिये शोध पर बल देते है। चौदहवें, सत्रहवें पत्रो मे स्मृति मे साहचर्य की स्वीकृति भूमिका की विस्तार पूर्वक चर्चा एव विश्लेषण किया गया है। अठारहवें से बाइसवें पत्रो मे स्मृति के क्रम की उपयोगिता की चर्चा की गई है। तेइसवें एव चौबीसवें पत्रो मे स्मृति को सुधारने के के लिए एक वैज्ञानिक प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है, जिसे अवधान प्रयोग Interference reduction के सोपानो के रूप मे दर्शाया गया है। है। अतिम पत्र मे स्मरण कला की समग्र विवेचना का सार प्रस्तुत करते हुए यह बताया गया है कि किसी भी विषय को याद रखने का आधार उसकी विधि सग्रह पर निर्भर करता है।

अत मे उपरोक्त विवेचना के आधार पर मेरा सविनय निवेदन है कि इस पुस्तक मे प्रस्तुत किये गये सैद्धान्तिक पक्षो की प्रायोगिक पुष्टि की सभावना निहित है। इस दिशा मे किये गये मौलिक शोध कार्य का नितान्त अभाव है, और शोध प्रयास लाभप्रद होगे।

विनीत

जयपुर 7-3-80

सच्चिदानन्द सिन्हा
Professor of Psychology.
University of Rajsthan
JAIPUR

शतावधानी पं. धीरजलाल टोकरसी शाह

का

संक्षिप्त परिचय

शतावधानी मन्त्रमनीषी शताधिक ग्रन्थो के लेखक प धीरजलाल टोकरसी शाह जैन साहित्य और मन्त्र साहित्य के प्रौढ विद्वान् हैं। प्रस्तुत पुस्तक के गुजराती मे मूल लेखक होने से आपके जीवन की सक्षिप्त रूपरेखा यहाँ प्रस्तुत करना अनुपयुक्त न होगा।

श्री धीरजलाल टोकरसी शाह का जन्म सौराष्ट्र प्रदेश के सुरेन्द्रनगर के समीप दाणावाड मे 18-3-1906 फाल्गुन कृष्णा अष्टमी वि स 1962 को हुआ था। इनके पिता टोकरसी और माता मणी बहन धर्म प्रिय व्यक्ति थे। अन्य गुजराती परिवारो की तरह माता की धर्म-निष्ठा अधिक थी। इनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र थी। अचानक इन के पिता की मृत्यु वि स 1970 की कार्तिक शुक्ला 1 को हुई। उस समय अवस्था अत्यन्त छोटी थी। माता ने कठिन परिश्रम करके इनके परिवार का लालन-पालन किया था।

गाव मे प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करके श्री अमृतलाल गोविन्दजी रावल की प्रेरणा से अहमदाबाद मे सेठ चिमनलाल नगीनदास शाह छात्रावास मे 30-6-1971 को प्रवेश लिया। इसके बाद महात्मा गाँधी की प्रेरणा से अग्रेजी स्कूल छोडकर प्रोप्रायटरी हाई स्कूल मे प्रवेश लिया। वहाँ रहते हुये कई विद्वानो के सम्पर्क मे आने का भी आपको सौभाग्य मिला, इनमे से काका कालेलकर, अध्यापक कौसाम्बी, आचार्य कृपलानी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सन् 1924 मे आपने गुजराती विद्यापीठ मे प्रवेश लिया। वहाँ रहते हुए गाधीजी के विचारो से काफी प्रभावित हुए। अपनी निश्चित दिनचर्या बनाकर धार्मिक शिक्षा, चित्रकला, सगीत आदि का आपने भली भाँति अध्ययन किया। काश्मीर, ब्रह्मदेश, यूनान, चीन की सीमा रेखा तक देश के कई भागो मे आपने भ्रमण किया। साहित्यिक सशोधन की दृष्टि से भी आपने बगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक प्रदेश मे अनेक प्रवास किये।

चित्रकला के प्रति आपकी बडी अभिरुचि रही। गुजरात विद्यापीठ मे रहते हुए आपने चित्रकला का अच्छा अध्ययन किया। आगे चलकर सर्व

श्री नानालाल, रस ज्ञानी एव रविशंकर रावल के अधीन रहकर भी आपने चित्रकला के लिये कार्य किया।

छोटी अवस्था मे ही लेखन, गायन पत्रकारिता, चित्रकला आदि मे आपकी रुचि रही थी। छात्रजीवन मे आपने 'छात्र' एव 'प्रभात' नामक पत्रो का सचालन और सम्पादन किया। बाद मे इनको मिला कर 'छात्र-प्रभात' नामक पत्र निकाला। 'जैन-ज्योति' नामक पत्रिका भी प्रकाशित की। 'जैन-मन्दिर पावापुरी', 'अजन्ता नो यात्री' नामक खण्डकाव्य लिखे। आपने अब तक 362 छोटी-बडी पुस्तकें लिखी हैं, जिनकी 25 लाख से भी अधिक प्रतियाँ छप चुकी हैं। यह बात आपकी लोकप्रियता और प्रतिभा को स्पष्टत इ गित करती है। 1934-35 मे अहमदाबाद मे स्वतन्त्र रूप से 'ज्योति कार्यालय' के नाम से प्रकाशन सस्था स्थापित कर प्रथम बार मुद्रण कार्य आरम्भ किया किन्तु बाद मे इसे बन्द कर देना पडा। कालान्तर मे धीरजभाई बम्बई जाकर रहने लगे। सन् 1948 मे वहाँ सेठ अमृतलाल कालीदास दोशी के सम्पर्क मे आकर 'जैन साहित्य विकास मण्डल' नामक सस्था की स्थापना की। वहाँ प्रतिक्रमण सूत्र की प्रबोध टीका को तीन भागो मे तैयार कराया। मुनिराज यशोविजय जी की प्रेरणा से 'धर्मबोध ग्रन्थमाला' की 10 पुस्तके तैयार की।

वि स 2014 श्रावण अष्टमी को श्री धीरजलाल भाई ने स्वतन्त्र रूप से 'जैन साहित्य प्रकाशन मन्दिर' की स्थापना की और जैन धर्म, जैन सस्कृति तथा जैन साहित्य से सम्बद्ध साहित्य सृजन की धारा को निरन्तर प्रवाहशील रखा।

जैन शिक्षावली की तीन श्रेणियो मे 36 पुस्तिकायें लिखकर आपने समस्त जैन वाङ्मय की आवश्यक प्राथमिक जानकारी को बडे ही सरल रूप मे प्रस्तुत कर दिया। श्री वीर वचनामृत (गुजराती) तथा श्री महावीर वचनामृत (हिन्दी) प्रकाशित किये। इन ग्रन्थो का सार अग्रेजी मे 'दि टीचिंग्स ऑफ लॉर्ड महावीर' के रूप मे प्रस्तुत हुआ।

पाठको के लिये आपने 'जिनोपासना, नमस्कार मन्त्रसिद्धि, भक्तामर रहस्य, श्री ऋषि मण्डल आराधना' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो की रचना की और मन्त्र-तन्त्र की अटपटी साधना को सुबोध बनाने के लिये 'मन्त्र चिन्तामणि' तथा 'मन्त्र दिवाकर' नामक मननपूर्ण ग्र

जैन साहित्य प्रकाशन मन्दिर की स्थापना के तीन चार वर्षों के बाद आपने 'प्रज्ञा प्रकाशन मन्दिर' की स्थापना की। इसके माध्यम से विशिष्ट कोटि का साहित्य प्रकाशन आरम्भ किया। इसमे अब तक 10 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

काव्य, निबन्ध, टीका तथा आध्यात्मिक साहित्य की सृष्टि के समान ही, श्री धीरजलाल भाई ने नाट्य लेखन मे भी पूरी सफलता प्राप्त की है। आपके द्वारा सती दमयन्ती, शालिभद्र, सकल्पसिद्धि याने समर्पण, काचा सूतरना तातणे, बन्धन तूट्या, हजी बाजी छे हाथ मा, श्री पार्श्वप्रभाव, कारमी कसौटी, जागी जीवनमा ज्योति जैसी अनेक रचनायें लिखी गई और क्रमश पुस्तक प्रकाशन समारोह के अवसरो पर सफलतापूर्वक मच पर प्रदर्शित हुई। आपने जीवन मे सदा गतिमान रहने मे ही आनन्द माना है। यही कारण है कि अनवरत कुछ न कुछ लेखन चलता ही रहा है। ग्रन्थावली, पत्र-पत्रिकाएँ तथा अन्यान्य पुस्तिकाओ के सम्पादन के अतिरिक्त अनेक ग्रन्थो, स्मारक ग्रन्थो, विशेपाको आदि का सुरुचिपूर्ण सम्पादन भी आपके हाथो से सम्पन्न हुआ है।

भारत की प्राच्य विद्याओ मे रुचि रखने वाले तथा प्रतिभा के धनी प धीरजलाल भाई ने अपने स्वाध्याय एव श्रम से अनेक प्रकार की विद्याओ को आत्मसात् किया है। विद्यार्थी वाचनमाला मे श्रीमद् राजचन्द्रजी का जीवन चरित्र लिखते हुए आपके मन मे शतावधानी बनने की रुचि जागृत हुई। बाद मे प सन्तबालजी के समागम से मार्ग-दिर्देशन प्राप्त कर सतत प्रयत्न करते हुए आप 'शतावधानी' बने। बीजापुर गुजरात मे सकल सघ के समक्ष दिनाक 29-9-1953 ई मे आपने प्रथम बार शतावधान के प्रयोग किये और वहीं आपको सम्मानपूर्वक 'शतावधानी' पदवी से विभूषित किया गया।

इस विद्या के साथ ही आपने गणित के आश्चर्यजनक प्रयोगो मे अच्छा कौशल प्राप्त किया और अनेक प्रयोगो के प्रदर्शन द्वारा बडे-बडे गणितज्ञो को चकित कर दिया। आपके शतावधान एव गणित के प्रयोगो का प्रदर्शन भारत के अनेक शहरो मे सफलतापूर्वक होता रहा है। इस विपय मे आपने गणित चमत्कार, गणित रहस्य, गणित सिद्धि और स्मरण कला नामक चार ग्रन्थ लिखे। इनमे 'स्मरण कला' हिन्दी मे अनुवादित होकर पाठको को प्रस्तुत है।

▷◁

श्री नानालाल, एम जानी एव रविशकर रावल के अधीन रहकर भी आपने चित्रकला के लिये कार्य किया।

छोटी अवस्था से ही लेखन, भाषण, पत्रकारिता, चित्रकला आदि मे आपकी रुचि रही थी। छात्रजीवन मे आपने 'छात्र' एव 'प्रभात' नामक पत्रो का सचालन और सम्पादन किया। बाद मे इनको मिला कर 'छात्र-प्रभात' नामक पत्र निकाला। 'जैन-ज्योति' नामक पत्रिका भी प्रकाशित की। 'जल-मन्दिर पावापुरी', 'अजन्ता नो यात्री' नामक खण्डकाव्य लिखे। आपने अब तक 362 छोटी-बडी पुस्तके लिखी है, जिनकी 25 लाख से भी अधिक प्रतियाँ छप चुकी है। यह बात आपकी लोकप्रियता और प्रतिभा को स्पष्टत इ गित करती हैं। 1934-35 मे अहमदाबाद मे स्वतन्त्र रूप से 'ज्योति कार्यालय' के नाम से प्रकाशन सस्था स्थापित कर प्रथम बार मुद्रण कार्य आरम्भ किया किन्तु बाद मे इसे बन्द कर देना पडा। कालान्तर मे धीरजभाई बम्बई जाकर रहने लगे। सन् 1948 मे वहाँ सेठ अमृतलाल कालीदास दोशी के सम्पर्क मे आकर 'जैन साहित्य विकास मण्डल' नामक सस्था की स्थापना की। वहाँ प्रतिक्रमण सूत्र की प्रबोध टीका को तीन भागो मे तैयार कराया। मुनिराज यशोविजय जी की प्रेरणा से 'धर्मबोध ग्रन्थमाला' की 10 पुस्तके तैयार की।

वि स 2014 श्रावण अष्टमी को श्री धीरजलाल भाई ने स्वतन्त्र रूप से 'जैन साहित्य प्रकाशन मन्दिर' की स्थापना की और जैन धर्म, जैन सस्कृति तथा जैन साहित्य से सम्बद्ध साहित्य सृजन की धारा को निरन्तर प्रवाहशील रखा।

जैन शिक्षावली की तीन श्रेणियो मे 36 पुस्तिकायें लिखकर आपने समस्त जैन वाङ्मय की आवश्यक प्राथमिक जानकारी को बडे ही सरल रूप मे प्रस्तुत कर दिया। श्री वीर वचनामृत (गुजराती) तथा श्री महावीर वचनामृत (हिन्दी) प्रकाशित किये। इन ग्रन्थो का सार अग्रेजी मे 'दि टीचिंग्स ऑफ लॉर्ड महावीर' के रूप मे प्रस्तुत हुआ।

पाठको के लिये आपने 'जिनोपासना, नमस्कार मन्त्रसिद्धि, भक्तामर रहस्य, श्री ऋषि मण्डल आराधना' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो की रचना की और मन्त्र-तन्त्र की अटपटी साधना को सुबोध बनाने के लिये 'मन्त्र चिन्तामणि' तथा 'मन्त्र दिवाकर' नामक मननपूर्ण ग्रन्थ लिखे।

जैन साहित्य प्रकाशन मन्दिर की स्थापना के तीन चार वर्षों के बाद आपने 'प्रज्ञा प्रकाशन मन्दिर' की स्थापना की। इसके माध्यम से विशिष्ट कोटि का साहित्य प्रकाशन आरम्भ किया। इसमे अब तक 10 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

काव्य, निबन्ध, टीका तथा आध्यात्मिक साहित्य की सृष्टि के समान ही, श्री धीरजलाल भाई ने नाट्य लेखन मे भी पूरी सफलता प्राप्त की है। आपके द्वारा सती दमयन्ती, शालिभद्र, सकल्पसिद्धि याने समर्पण, काचा सूतरना तातणे, बन्धन तूट्या, हजी बाजी छे हाथ मा, श्री पार्श्वप्रभाव, कारमी कसौटी, जागी जीवनमा ज्योति जैसी अनेक रचनाये लिखी गई और क्रमश पुस्तक प्रकाशन समारोह के अवसरो पर सफलतापूर्वक मच पर प्रदर्शित हुई। आपने जीवन मे सदा गतिमान रहने मे ही आनन्द माना है। वही कारण है कि अनवरत कुछ न कुछ लेखन चलता ही रहा है। ग्रन्थावली, पत्र-पत्रिकाएँ तथा अन्यान्य पुस्तिकाओ के सम्पादन के अतिरिक्त अनेक ग्रन्थो, स्मारक ग्रन्थो, विशेषाको आदि का सुरुचिपूर्ण सम्पादन भी आपके हाथो से सम्पन्न हुआ है।

भारत की प्राच्य विद्याओ मे रुचि रखने वाले तथा प्रतिभा के धनी प धीरजलाल भाई ने अपने स्वाध्याय एव श्रम से अनेक प्रकार की विद्याओ को आत्मसात् किया है। विद्यार्थी वाचनमाला मे श्रीमद् राजचन्द्रजी का जीवन चरित्र' लिखते हुए आपके मन मे शतावधानी बनने की रुचि जागृत हुई। बाद मे प सन्तबालजी के समागम से मार्ग-दिर्देशन प्राप्त कर सतत प्रयत्न करते हुए आप 'शतावधानी' बने। बीजापुर गुजरात मे सकल सघ के समक्ष दिनाक 29-9-1953 ई मे आपने प्रथम बार शतावधान के प्रयोग किये और वही आपको सम्मानपूर्वक 'शतावधानी' पदवी से विभूषित किया गया।

इस विद्या के साथ ही आपने गणित के आश्चर्यजनक प्रयोगो मे अच्छा कौशल प्राप्त किया और अनेक प्रयोगो के प्रदर्शन द्वारा बडे-बडे गणितज्ञो को चकित कर दिया। आपके शतावधान एव गणित के प्रयोगो का प्रदर्शन भारत के अनेक शहरो मे सफलतापूर्वक होता रहा है। इस विषय मे आपने गणित चमत्कार, गणित रहस्य, गणित सिद्धि और स्मरण कला नामक चार ग्रन्थ लिखे। इनमे 'स्मरण कला' हिन्दी मे अनुवादित होकर पाठको को प्रस्तुत है।

▷◁

अनुक्रम

रगा   ल

कार्य-सिद्धि के आवश्यक अंग

प्रिय बन्धु !

भगवती सरस्वती का स्मरण और वन्दन पूर्वक जिज्ञासा पूर्ण तुम्हारा पत्र यथा समय मिल गया है। इसमे तुमने स्मरण-शक्ति को विकसित करने की और उसके लिये मेरे सहयोग प्राप्ति की जो अभिलाषा प्रकट की है, उसका मै योग्य सम्मान करता हूँ। अनुभव का उचित विनिमय मेरे लिए आनन्द का विषय है, इसलिए आभार ज्ञापन की कोई आवश्यकता नही।

अब मुद्दे की बात। अगर तुम्हे स्मरण शक्ति का विकास करना ही हो तो उसके लिए सबसे पहले दृढ निश्चय करना पडेगा। यथार्थ मे दृढ निश्चय के बिना किसी भी कार्य की सिद्धि नही हो सकती। "चलो, प्रयास कर ले, कार्य सम्पन्न होगा तो ठीक और न होगा तब भी ठीक" इस प्रकार के ढीले-ढाले, अधकचरे विचारो से कार्य आरम्भ करने वाला थोडी-सी उलझन, जरा-सी प्रतिकूलता और तनिक सी मुसीबत आते ही पीछे हट जाता है। इसलिए ही प्राज्ञ पुरुष ने "देह वा पातयामि कार्यं वा साधयामि" यह सकल्प-मय भावना-सूत्र प्रसारित किया है। इसलिए इस बात का तुम दृढ निश्चय करो कि—"मै अपनी स्मरण-शक्ति को अवश्य विकसित करूँगा।"

तुम्हारा यह निश्चय कोई शेख-चिल्ली का विकल्प नही है, कुतुहल-प्रिय मन की तरग मात्र नही है, किन्तु सबल आत्मा की दृढ-प्रतिज्ञा है। ऐसा विचार निरन्तर रखोगे तो सफलता का द्वार सत्वर ही खुल जायगा। इसलिए एक नोट-बुक लेकर उसके प्रथम पत्र के ऊपरी भाग मे निम्नलिखित शब्द अ कित करो—

प्रतिज्ञा

'मै अपनी स्मरण शक्ति को अवश्य विकसित करूँगा।'

तिथि-मिति तारीख

और नीचे के भाग मे यह पक्ति लिखो—

"प्राण टले पर प्रतिज्ञा न टले, यही वीर का धर्म है।

इस पक्ति पर सुबह-शाम एक बार अवश्य मनन करो। दृढ निश्चय के बाद दूसरी जरूरत है प्रयास की। प्रबल पुरुषार्थ की। यह पुरुषार्थ सुव्यवस्थित होना चाहिए। प्रारम्भ मे भारी उत्साह और बाद मे उसकी विस्मृति, यह कार्य करने की सुचारु पद्धति नही है, वैसे ही किसी प्रकार की व्यवस्था अथवा पद्धति का अनुसरण करते हुए कार्य मे अधा-धुन्ध लग जाना भी कार्य करने की रीति नही है। वृक्ष तक पहुँचने की शर्त मे मन्दगति कछुए ने त्वरितगामी खरगोश को हरा दिया था, इसका मर्म बार-बार विचार मे उतार लेना चाहिए। इसलिये स्मरण-शक्ति पुष्ट बनाने का दृढ निश्चय करने के बाद निरन्तर उसके लिए थोडा समय लगाना और उसके बीच जिन-जिन विषयो मे अभ्यास करना आवश्यक हो, वह नियमित रीति से करना बहुत जरूरी है।

अभ्यास से जैसे-जैसे अधूरे और अटपटे कार्यों की भी सिद्धि हो जाती है। अभ्यास से मनुष्य एक डोर पर चल सकता है। अभ्यास के द्वारा लहरो से उफनते सागर मे मीलो तक तैरा जा सकता है और अभ्यास से प्राणहारी विष को भी पचाया जा सकता है। सुज्ञ पुरुषो की मूल्यवान् वाणी है—

अभ्यासेन स्थिर चित्तमभ्यासेनानिलच्युति।
अभ्यासेन परानन्दो ह्यभ्यासेनात्मदर्शनम्।

अभ्यास से चित्त को सुस्थिर किया जा सकता है। अभ्यास से (शरीरस्थ) वायु पर नियत्रण पाया जा सकता है। अभ्यास के द्वारा परम आनन्द की प्राप्ति हो सकती है और अभ्यास से आत्म-दर्शन किया जा सकता है।

कार्य-सिद्धि का तीसरा अ ग मन का एकाग्र मूड (मिजाज) है। किसी वस्तु को सिद्ध करने की तैयारी हो परन्तु मन की प्रवृत्ति एकाग्र न रहे, बार-बार बदलती रहे तो उस कार्य मे सिद्धि नही मिल सकती अथवा सिद्धि-प्राप्ति मे अत्यन्त परिश्रम करना पडता है और बहुत समय लगता है पर मर्कट जैसा चचल मन एकाग्र कैसे रहे ? यह एक गूढ प्रश्न है ? इसलिए इसके सम्बन्ध मे कुछ एक सूचनाएँ प्रस्तुत करता हूँ—

(१) यह कार्य मै कर सकूँगा या नही, ऐसी शका मन मे नही लानी चाहिए। उसके बदले यह कार्य मै अवश्य कर सकूँगा—ऐसा आत्म-विश्वास रखना।

(२) इस कार्य के बदले कोई दूसरा कार्य करूँ तो ठीक रहे, इस प्रकार की विचारणा नही करनी चाहिए। उसके बदले स्वीकृत कार्य बहुत उत्तम है, ऐसी प्रतीति (निष्ठा) रखना।

(३) यह कार्य वास्तव मे फलदायी होगा या नही, ऐसी विचिकित्सा (आशका) नही करना। उसके बदले यह कार्य पूर्ण रूप से फलदायक है और इसकी सिद्धि से मैं अपने जीवन मे अद्भूत प्रगति कर सकूँगा ऐसा दृढ-विश्वास रखना।

(४) तुम्हारे स्वीकृत कार्य की कोई निन्दा करे और दूसरे के कार्यो की प्रशसा करे तो उसके प्रलोभन मे नही पडना। ' भिन्न-रुचयो लोका " लोक भिन्न-भिन्न रुचि वाले होते है इस कारण एक को एक वस्तु प्रिय लगती है, तो दूसरे को दूसरी वस्तु प्रिय लगती है—यह जान कर अपने निश्चय मे स्थिर रहना।

(५) जो अपने ध्येय को सिद्ध करने के लिए किसी प्रकार की साधना नही करते है, अथवा साधना से भ्रष्ट हो गये हैं, उनकी बातो का विश्वास नही करना। उनकी बातो मे रस नही लेना। उनके साथ किया गया परिचय अन्त मे अपनी साधना मे विघ्न डालता है, इस लिए बन सके जहाँ तक उन से दूर रहना चाहिये और उनके कार्य-कलापो से उदासीन रहना चाहिये तथा उसके बदले जिन्होने अपूर्व पुरुषार्थ से अपने कार्यो की सिद्धि की है, उनके साथ परिचय करना, उनकी बातो से उत्साह प्राप्त करना और उनकी तरह अपने कार्य को सिद्ध करने का मनोरथ रखना उचित है।

सक्षेप मे १ शका, २ काक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ अन्य प्रशसा और ५ कुसग ये पाँच बाते मन की एकाग्रता को भग करने मे निमित्त रूप है। तथा १ आत्म श्रद्धा, २ प्रतीति, ३ दृढ-विश्वास ४ स्थिरता और ५ सत्सग ये मन की धारा को एकाग्र रखने के उत्तम उपाय हैं।

यहाँ पर एक स्पष्टीकरण कर देना भी उचित समझता हूँ कि मन मे उठते विविध विकल्पो के समाधान प्राप्त करने की तत्परता रखनी चाहिए। यह किसी भी प्रकार की कार्य सिद्धि मे बाधक नही प्रत्युत साधक है। यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि प्रश्न उनके नही उठते है, जो सम्पूर्ण ज्ञानी है, या फिर पूरे-पूरे मूढ हे। इन दोनो स्थितियो की बीच की स्थिति वाले मनुष्यो के तो प्रश्न अवश्य उठते हे और उनका समाधान होता है तभी मनुष्य आगे बढ सकता है। इसीलिए अनुभवी पुरुषो ने बुद्धिमान् होने के लिए निम्नोक्त आठ गुणो को प्रमुख स्थान दिया है—

१ शास्त्र विज्ञान) श्रवण की इच्छा
२ शास्त्र को समझना
३ मन मे उतारना
४ याद करना
५ उस पर तर्क करना
६ उस पर विविध प्रकार से चिन्तन करना।
७. तर्क पर योग्य समाधान प्राप्त करना।
८ उसके सम्बन्ध मे अन्त करण मे दृढ निश्चय करना।

इस (विषय) के सम्बन्ध मे तुम्हे जो जो प्रश्न उठे, उन्हे बिना सकोच मुझे सूचित करना। उनके उत्तर अपने अध्ययन और अनुभव के मुताबिक देता रहूँगा। ये उत्तर कई बार सक्षेप मे तो कई बार विस्तार से मिलते रहेगे। इनका आधार प्रश्न की योग्यता और तुम्हारी विषय-ग्रहण करने की शक्ति पर निर्भर होगा।

मै मानता हूँ कि तुम आवश्यक प्रश्नो का समाधान प्रथम प्राप्त करोगे तो सफलता शीघ्र मिलेगी।

मगलाकाक्षी
धी

मनन

प्रतिज्ञा—पार पाने के लिए व्यवस्थित पुरुषार्थ—मानसिक एकाग्रता की स्थिरता—कार्य सिद्धि।

पत्र-दूसरा

मन और उसके कार्य

प्रिय बन्धु !

तुमने मेरे पत्र को पुन पुन पढकर उस पर पर मनन किया, यह जान कर सतोप की अनुभूति करता हूँ। यही पद्धति चालू रखोगे तो प्रगति बहुत शीघ्र होगी।

तुम्हारे पूछे हुए प्रश्नो के उत्तर निम्नोक्त है—

प्रश्न—मन शब्द से क्या समझा जाये ?

उत्तर—अनुभूति का जो आन्तरिक साधन है, उसे मन कहा जाता है। हमे अपनी चेतना से अनुभव होता है। यह अनुभव जिस विषय मे अथवा जिन साधनो से होता है उनके मुख्य दो प्रकार है—एक बाह्य और दूसरा आन्तरिक। उनमे बाह्य प्रकार स्थूल है, जो दिखाई पडता है। उसके स्पर्शनेन्द्रिय, रमनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय और श्रोत्रेन्द्रिय ये पाँच विभाग है।

स्पर्शनेन्द्रिय द्वारा हमे शीत - उष्ण, कोमल-कठोर आदि स्पर्शो का अनुभव होता है।

रसनेन्द्रिय के द्वारा हमे कटुक, तीक्ष्ण, खट्टे, मीठे आदि रसो का अनुभव होता है।

घ्राणेन्द्रिय द्वारा हमे सुगध और दुर्गन्ध का बोध होता है। चक्षुरिन्द्रिय द्वारा हमे लाल, पीला, बादली आदि रगो का तथा चौरस, लम्ब चौरस, गोल, लम्ब गोल, त्रिकोण, चतुष्कोण, बहुकोण, समाकृति, विपमाकृति आदि आकारो का ज्ञान होता है। और वैसे ही श्रोत्रेन्द्रिय के द्वारा हमे मद, तीव्र, अति तीव्र, मधुर, कर्कश आदि स्वरो का ज्ञान होता है।

आन्तरिक प्रकार सूक्ष्म है। इसलिए इन चर्म चक्षुओ से दिखाई नही पडता, परन्तु अनुभव के द्वारा जाना जा सकता है। यही है सामान्य व्यवहार मे मति, बुद्धि, चित्त आदि शब्दो द्वारा पहचाना जाने वाला मन।

कितने ही तत्वज्ञ अनुभूति के इस आन्तरिक साधन को अन्त -करण की सज्ञा देते है और उसके चार विभाग करते है जैसे कि मन, वुद्धि, चित्त और अहकार। उसकी पहचान वे इस रीति से देते है कि जिसके द्वारा योग्य और अयोग्य का अथवा खोटे और खरे का निर्णय होना है, वह वुद्धि कहलाती है।

जिसके द्वारा विविध प्रकार का चिन्तन होता है, वह चित्त कहलाता है। जिसके द्वारा इच्छा का प्रवर्तन होता है और परिणाम स्वरूप कार्य मे प्रवृत्ति होती है, वह अहकार कहलाता है।

महर्षि पतजलि ने अनुभव के इस आन्तरिक साधन को चित्त सज्ञा दी हे और उसकी मुख्य वृत्तिया पाच गिनाई है। वे इस प्रकार है—प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति। दूसरे विद्वानो ने उसका विस्तार दूसरी प्रकार से किया है, परन्तु यह तो वाणी व्यवहार अथवा परिभाषा का प्रश्न है। मूल विषय मन आन्तरिक अनुभव का साधन है। इसमे किसी प्रकार का मतभेद नही है। यह अनुभव जिसको होता है अथवा जिसके द्वारा यह शक्य बनता है. उसे आत्मा या जीवात्मा कहा जाता है।

प्रश्न—मन क्या-क्या कार्य करता है ?

उत्तर—मन के कार्य, मन के व्यापार असख्य होने से तत्वत उनकी गणना हो सके, ऐसा सम्भव नही है। फिर भी व्यावहारिक सरलता के लिए अपनी समझ मे आ सके इसलिए मानस शास्त्रियो ने उन्हे तीन भागो मे विभक्त किया है वे निम्नलिखित है—

(१) वुद्धि प्रधान या विचार प्रधान व्यापार—उनमे पृथक-पृथक् सज्ञाये, प्रतीतियाँ, सस्कार, जिज्ञासा, तर्क, तुलना, अनुमान, कल्पना और स्मृति आदि का समावेश होता है।

(२) वृत्ति प्रधान अथवा भाव प्रधान व्यापार— कोई भी सज्ञा या विचार ग्रहण करने के बाद मन मे आनन्द, शोक, उत्साह, धैर्य, सुख, दु ख आदि जो सस्कार जन्मते है अथवा जो भाव उठते हैं उनका इस प्रकार मे समावेश होता है।

(३) इच्छा या अभिलाषा प्रधान व्यापार-मन मे उत्कट (एक प्रकार की) वृत्ति जागने के बाद, जो कार्य करने की इच्छा होती है, अभिलाषा उत्पन्न होती है और जो पूर्ण रूप से नाडी-तन्तुओ के माध्यम से शरीर की चेष्टा मे व्याप्त हो जाती है। इन सब का समावेश इस विभाग मे होता है।

ये व्यापार (भाव) एक के बाद एक उत्पन्न होते रहते है अथवा एक साथ भी अनेक व्यापारो का प्रवर्तन एकदम हो जाता है, इससे इनकी समग्र क्रिया बहुत ही अटपटी हो जाती है। इन मनो-व्यापारो का वेग कोई भी भौतिक फेरफार या व्यापार की अपेक्षा बहुत त्वरितगामी होता है। इसीलिए जब किसी भी वस्तु की शीघ्रता बतानी होती है तब उसकी समानता मानसिक वेग के साथ की जाती है। हम थोडी देर पहले किन्ही कल्पनाओ में विचरण कर रहे होते है कि एकाएक कितनी ही घटनाएँ (भाव) स्मृति पटल पर उतर आती हैं। उनके साथ कुछ वृत्तिया भी उत्पन्न हो जाती है और वे फिर अनेक अभिलाषाओ को जन्म देती रहती है। यह सब इतनी शीघ्रता से होता है कि अति कुशाग्र बुद्धि के सिवा उसे समझना बहुत मुश्किल है।

प्रश्न— मन दिखायी नही देता है तो उसके अस्तित्व का विश्वास कैसे हो ?

उत्तर— जिस वस्तु को देख न सकें परन्तु अनुभव कर सके, या समझ सके उसका अस्तित्व हो सकता है।

उदाहरण के तौर पर हवा को हम देख नही सकते पर स्पर्श के द्वारा अनुभव कर सकते हैं। इसलिए हवा का अस्तित्व है, ऐसा निश्चय किया जा सकता है। वैसे ही चैतन्य को तथा मन को देखा नही जा सकता परन्तु उसका निश्चय प्रतिकार* और

* पत्थर को तोडते, लकडी को चीरते, लोहे को काटते समय वे कोई प्रतिकार नही कर सकते। मछली को जब पकडते है, तो वह ऊँची नीची होती है। कुत्ते को मारा जाता है तो वह भूकने लगता है। कबूतर को पकडा जाता है तो वह सामने हो जाता है। मनुष्य को कोई भी नुकसान पहुँचाता है तो वह सुरक्षा का प्रयत्न करता है क्यो कि उनमे प्रतिकार शक्ति है। यह चैतन्य का लक्षण होने से पशु-प्राणियो मे चैतन्य है—यह समझा जा सकता है।

विचार रूप क्रियाओ के द्वारा हो सकता है। बुद्धि वृत्तियाँ और इच्छा आदि मन के अस्तित्व के सबल प्रमाण है।

प्रश्न— स्मरण या स्मृति किसे कहा जाता है ?

उत्तर—स्पर्श, रस, गध, रूप और शब्द वगैरह की सज्ञाओ (Sensations) वैसे ही विविध प्रकार की सज्ञाओ के मिलने मे उत्पन्न हुई विशिष्ट विषय की प्रतीति (Percept) के द्वारा अपने मन पर जो सस्कार (Physical impression) पडते है इन सस्कारो का जो उद्‌बोधक होता है, वे फिर से ताजे होते है वही स्मरण या स्मृति (Memory) कहलाती है।

मानसिक सृष्टि बडी विचित्र है, यह गहराई से ध्यान मे रहे।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

अनुभवो के बाह्य और आन्तरिक साधन, आन्तरिक साधन अर्थात् मन। मन के तीन प्रकार के व्यापार है- मनो व्यापार की विलक्षणता, मन के साक्ष्य स्मरण-शक्ति की व्याख्या।

तीसरा पत्र

स्मरण-शक्ति का महत्व

प्रिय बन्धु!

मैंने पिछले पत्र मे मन और उसके कार्यों के सम्बन्ध मे पूछे गये प्रश्नो के उत्तर दिये थे। उनमे स्मृति किसे कहा जाय यह भी स्पष्ट किया गया। अब शेष प्रश्नो के उत्तर इस पत्र मे दिये जा रहे है।

प्रश्न— स्मरण शक्ति की क्या महत्ता है?

उत्तर—स्मरण शक्ति की महत्ता योगीश्वर श्रीकृष्ण के शब्दो मे नीचे के अनुसार है। उन्होने गीता मे कहा है—

"स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।"

स्मृति का भ्रंश होने पर बुद्धि नष्ट हो जाती है, बुद्धिनाश होने पर पूरा पतन होता है। आधुनिक मानस-शास्त्रियो का अभिमत भी ऐसा ही है। प्रो० लाई सेट ने कहा है—"आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक इन तीन शक्तियो के क्षीण होने का प्रथम कारण स्मृति का अभाव है।" प्रो केन का कथन है—"समग्र शक्तियो मे स्मरण शक्ति अद्भुत है। वह न हो तो मनुष्य एक क्षुद्र जन्तु के समान बन जाये और जीवन के सर्वोत्कृष्ट आनन्दो से तथा प्रगति से वचित हो रहे।" ग्रीक लोगो ने स्मृति को स्वर्ग और पृथ्वी की पुत्री तथा साहित्य, सगीत एव कला पर अधिकार भोगने वाले नवभ्युजीज की माता मान कर उसकी अपूर्वता जाहिर की है। तत्त्वज्ञो ने उसे 'आत्मा की अन्नपूर्णा', 'विचारो की अदृश्य खान', 'समग्र क्रियाओ की अधिष्ठात्री,' 'प्रगति की माता' आदि भाव भरे विशेषणो से सम्बोधित किया है।

लार्ड टेनिसन ने अपनी एक काव्य कृति मे स्मृति देवी को अर्घ्य चढाते हुये कहा है कि भूतकाल के भण्डार मे से तेज पुंज को लेकर वर्तमान कारा को प्रकाशित करने वाले ओ स्मृति के मधुर प्रभात ! तुम मेरी कुछ भावनाओ की मुलाकात लो तथा मुझ अज्ञान मूर्च्छित को नया आलोक दो, नया वल दो ।

नीचे के मुद्दो पर विचार करने मे स्मरण-शक्ति का महत्त्व समझ सकोगे—

१ विद्यार्थी परीक्षा देने जा रहा है, पर कोई पाठ याद नही आ रहा है ।

२ वकील न्यायालय मे जा रहा है पर कानून के नियमो-उपनियमो को भूल रहा हे ।

३ चिकित्सक एक नुस्खे मे एक दवा के वदले मे दूसरी दवा लिख देता है ।

४ रंगमंच पर एक नट अभिनय कर रहा है, पर तैयार किया हुआ पाठ याद नही आता है ।

५ संगीतकार जलसा जमाने के लिये बैठा है पर संगीत की तर्ज ही भूल गया है ।

६ व्यापारी एक ग्राहक को एक के बदले दूसरा भाव बता देता है ।

७ सर्राफ दिवानी दावे मे कोर्ट की तारीख भूल जाता है जिससे अदालत मे हाजिर नही हो पाता है ।

८ एक बीमार अपथ्य और पथ्य का भेद भूल कर अपथ्य वस्तु का सेवन कर लेता है ।

९ नगर से अपरिचित मित्र बडे शहर मे आ रहा है, पर उसके सामने स्टेशन पर जाना भूल जाता है ।

१०. महत्त्वपूर्ण दस्तावेजो का गट्ठर गाडी मे ही रह जाता है ।

११ बैंक की चेक बुक जेब से गिर जाती है ।

१२ आवश्यक वस्तु रख कर भूल जाता है ।

१३ किसी को कोई वस्तु दी, वह याद नही आ रही है ।

१४ मित्र को लिखा पत्र पत्नी के लिफाफे मे और पत्नी को लिखा पत्र मित्र के लिफाफे मे डाल दिया जाय।

कहने की जरूरत नही कि ऊपर की परिस्थिति मे निर्वल स्मरण शक्ति के प्रताप से उसका मालिक कितने नुकसान, कितनी निराशा और कितनी बदनामी को भोगता है।

प्रश्न—स्मरण शक्ति को विकसित करने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर—स्मरण शक्ति सुधरे तो मनुष्य अपने विषय मे निष्णात बनकर यश और लाभ प्राप्त कर सकता है। वह कोई नया विषय सीखना चाहे तो बहुत शीघ्रता और सरलता से सीख सकता है। वैसे ही वह विषय दूसरो को सिखाना हो तो अच्छी तरह से सिखाया जा सकता है और भजन कीर्तन करना हो, बातचीत करनी हो, कहानी कहनी हो, उपदेश देना हो, प्रवचन करना हो तो सामान्य-व्यक्तियो की अपेक्षा स्मृति-समृद्ध व्यक्ति सुन्दर पद्धति से सम्पन्न करता है। सक्षेप मे स्मरण-शक्ति के विकास से मन की समग्र शक्तियाँ विकस्वर हो जाती हैं।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

स्मरण-शक्ति वुद्धि का आधार है। समस्त विकासो का मूल है। सव प्रवृत्तियो मे उपयोगी है। आगे बढने के लिये अत्यन्त सार्थक साधन है।

□

□

पत्र चतुर्थ

स्मरण- क्ति के कार

प्रिय वन्धु !

प्रस्तुत विपय मे तुम्हारा रस दिन-प्रति दिन वृद्धि पा रहा है; उसे देख कर आनन्दित हूँ। तुम्हारे प्रश्नो के उत्तर इस प्रकार है—

प्रश्न—स्मरण शक्ति कितने प्रकार की है ?

उत्तर—स्मरण-शक्ति मूल तो एक ही प्रकार की है, पर उसकी अवस्था के आधार पर उसके विभिन्न प्रकार हो जाते है। जैसे कि—अति मद, मद, विभागीय मद, तीव्र, तीव्रतम और अद्भुत आदि आदि।

प्रश्न—एक मनुष्य की स्मरण शक्ति तीव्र है और दूसरे की मन्द है—इस कथन का क्या अभिप्राय होता है ?

उत्तर—एक मनुष्य की स्मरण-शक्ति तीव्र है यह कहने का तात्पर्य है कि—

१ वह थोडे से प्रयत्न से याद रख सकता है।

२ वह बहुत अतीत की बात याद रख सकता है।

३ वह बहुत समय तक याद रख सकता है।

४. यदि जरूरत पडे तो वह बराबर स्मृति मे ला सकता है।

इसके विपरीत एक मनुष्य की स्मरण शक्ति मद है—इस कथन का अर्थ यह है कि—

१ उसे एक बात को याद रखने के लिए बहुत प्रयत्न करना पडता है।

२ बहुत प्रयत्न करने पर भी उसे वह वस्तु हूबहू याद नही रहती है। वह अथवा तत्सम्बन्धी महत्त्व की घटनाएँ स्मृति मे रख नही सकता ।

३ थोडे समय के बाद ही वह बिल्कुल याद नही कर सकता ।

४ ध्यान देने पर भी याद नही कर सकता है अथवा एक के बदले दूसरी बात प्रस्तुत कर देता है ।

प्रश्न—एक मनुष्य को एक बात बराबर याद रहती है और दूसरी बात बराबर याद नही रहती इसका क्या कारण है ? यदि स्मरण शक्ति तीव्र हो तो सब बाते बराबर याद रहनी चाहिये ।

उत्तर—यह प्रश्न विभागीय मदता से सम्बद्ध है । एक मनुष्य को एक बात बराबर याद रहती है और दूसरी अच्छे प्रकार से ध्यान मे नही रहती, इसका मुख्य कारण रस की न्यूनाधिकता है । जिस विषय मे उसको रस होता है, उस तरफ उसका लक्ष्य बराबर दौडता है, परिणाम स्वरूप उसमे एकाग्रता आ जाती है, इसलिए उस विषय के छोटे-मोटे अनेक पहलुओ को शीघ्रता से ग्रहण कर लेता है, परन्तु जिस विषय मे उसको रस नही होता है, उस तरफ उसका दुर्लक्ष्य हो जाता है, इसलिये उसमे सजग एकाग्रता नही आ पाती । परिणाम स्वरूप वह वस्तु उसको याद नही रहती ।

एक लडका सिनेमा का गायन जल्दी सीख जाता है । और एक या दो बार सुनकर ही उसको याद कर लेता है और बहुत बार तो उसको उसी लहजे मे गाता है, परन्तु कोई धार्मिक भजन या कीर्तन वह उतना जल्दी याद नही कर सकता, उसकी राग जल्दी ग्रहण नही कर सकता, इसका कारण यह है कि उस विषय मे उसको इतना रस नही हैं ।

एक लडके को यह पूछा जाए कि क्रिकेट का अन्तिम मेच जब खेला गया तब कौन-कौन खिलाडी थे, उन्होने कैसा खेल खेला ? और उस बार किसने कितने रन किये तो वह सब बराबर बता देगा, परन्तु उससे यदि यह पूछा जाए कि अपने देश के मत्री-मण्डल मे कितने सदस्य है, उनके क्या-क्या नाम हैं ? और वे देश के कौन कौन से भाग से आये हुए है ? तो वह अपना सिर खुज-लाने लगेगा। कारण कि उसने क्रिकेट मे पूरा-पूरा रस लिया है,

पर मन्त्रि-मण्डल की रचना मे उसने जरा भी रस नही लिया है। इससे उल्टा, एक राज्य कर्मचारी को यदि यह पूछा जाए कि अभी अभी प्रधान मडल मे कितने पार्षद है, और वे कौन से प्रान्तो से आये हुए है तो वह इसका उत्तर बराबर दे सकता है, और वह हरेक सदस्य की वास्तविकता तथा कार्य क्षमता के विषय मे भी जरूर कुछ बता सकता है, परन्तु क्रिकेट मेच के विषय मे वह सम्भवत उतना सतोषजनक जवाब न दे पाये। यह वस्तुस्थिति हरेक विषय मे समझ लेनी चाहिये।

कितनी ही बार इस रस की गाढता एक विषय मे इतनी अधिक बढ जाती है कि मनुष्य एक लक्षी बन जाता है। अर्थात् उसको अपने आस पास होने वाली घटनाओ का या अपने शरीर का भी पूरा भान नही रहता। उदाहरण के तौर पर महान् वैज्ञानिक एडिसन एक बार सरकारी आफिस मे कर (टेक्स) भरने के लिये गये हुए थे। वहाँ वे अपना नाम ही भूल गये। बहुत प्रयत्न करने पर भी याद नही आया। उनकी यह दिक्कत पास मे खडे एक चतुर मनुष्य ने ताड ली। इसलिये उसने उनको नाम पूर्वक सम्बोधन किया और तब वैज्ञानिक एडिसन को विस्मय के साथ अपना नाम याद आया। यह स्थिति बनने का कारण यह था कि उनका मन नये-नये आविष्कार और खोज करने मे इतना तल्लीन रहता कि बाकी के समग्र विषयो की तरफ उपेक्षा वृत्ति हो गई थी।

ऐसा ही एक उदाहरण महात्मा मस्तराम जी का है। वे वास्तव मे मस्त थे। इसलिये बहुताश मे उनका लक्ष्य आत्मा-भिमुखता ही रहता था और अन्य विषयो मे उपेक्षा रहती। वे एक बार सौराष्ट्र के एक ग्राम मे किसी भक्त के निमत्रण से उसके वहाँ भोजन करने गये। उस भक्त ने उनको जिमाने के लिये चूरमा बनाया था, परन्तु हुआ यह कि उसने उस दिन एक ओर नमक पीस कर एक थाली मे रख दिया था, उसके पास ही पिसी हुई मिश्री की थाली भी पडी थी। इसलिए भोजन के साथ चूरमे मे मिलाने के लिए मिश्री वाली थाली के बदले भूल से नमक वाली आ गई। नमक कितना कडुआ होता है यह समझा जा सकता है परन्तु महात्मा मस्तराम जी तो सब वस्तुओ को मिला कर खा गये। खाना खाते समय उनका अन्त करण प्रसन्न दिखाई पडता

था, भोजन करने के बाद आशीर्वाद देकर वे चले गये और गाँव से थोडी दूर जाकर एक वृक्ष के नीचे आराम करने लगे, इधर उस भक्त ने जीमते समय उसी थाली से चीनी ली तो पता चला कि उसने महात्मा मस्तरामजी को भूल से नमक ही परोसा है। इसलिए वह खाना खाये बगैर ही एकदम उठा और मस्तराम जी कहाँ होने चाहिये यह अनुमान करके उनको खोजने के लिये निकल पडा। थोडी देर मे ही उसे पता चला कि वे एक वृक्ष के नीचे प्रसन्नचित्त बैठे है। वह भक्त पहुँचते ही उनके चरणो मे गिर पडा और कहने लगा, "महाराज! आज भारी अनर्थ हो गया है आप को जिमाते समय चीनी के बदले नमक भूल से चूरमे मे डाल दिया। उसका मुझे बहुत भारी अनुताप है। अब पता नही आपके शरीर को क्या होगा।" उक्त बात सुन कर मस्तराम जी बोले—"भक्त! हमने मिश्री खाई या नमक यह तो मालूम नही, परन्तु रसवती अच्छी बनी थी। इतना ख्याल आता है।" ऐसी बात एक दम किसके गले उतरे? पर महात्मा मस्तराम के लिये यह बात एकदम सत्य थी। वे स्वाद के विषय मे बिल्कुल उदासीन बन गये थे। इस कारण क्या वस्तु खाई, उसका ख्याल तक नही रखते थे। तात्पर्य है कि 'रस' परिवर्तन के कारण एक मनुष्य को एक बात बराबर याद रहती है और दूसरी बात बराबर याद नही रहती।

प्रश्न—अद्भुत स्मरण शक्ति किसे कहते है? इसका कोई उदाहरण देगे?

उत्तर—कुछेक मनुष्यो की स्मृति इतनी अधिक तीव्र होती है कि वे एक बार पढ कर ही या एक बार सुन कर ही सैकडो क्या हजारो बातो को बराबर याद रख सकते हैं। उसे हम अद्भुत या असाधारण स्मरण शक्ति कह सकते है।

महाभारत की रचना श्री वेद व्यास ने मौखिक रूप मे ही की थी। तपोवन मे महर्षि सैकडो शिष्यो को मौखिक ही अध्ययन कराते और कौन से शिष्य को कौन-सा पाठ दिया है, वह सब बरावर स्मृति मे रखते।

विद्या के परम प्रेमी (शौकीन) मालवपति महाराजा भोज के दरबार मे ऐसे भी कवि थे कि जो एक बार सुनकर ही जैसे तैसे

पर मन्त्रि-मण्डल की रचना मे उसने जरा भी रस नही लिया है। इससे उलटा, एक राज्य कर्मचारी को यदि यह पूछा जाए कि अभी अभी प्रधान मडल मे कितने पार्षद है, और वे कौन से प्रान्तो से आये हुए है तो वह इसका उत्तर बराबर दे सकता है, और वह हरेक सदस्य की वास्तविकता तथा कार्य क्षमता के विषय मे भी जरूर कुछ बता सकता है, परन्तु क्रिकेट मेच के विषय मे वह सम्भवत उतना सतोषजनक जवाब न दे पाये। यह वस्तुस्थिति हरेक विषय मे समझ लेनी चाहिये।

कितनी ही बार इस रस की गाढता एक विषय मे इतनी अधिक बढ जाती है कि मनुष्य एक लक्षी बन जाता है। अर्थात् उसको अपने आस पास होने वाली घटनाओ का या अपने शरीर का भी पूरा भान नही रहता। उदाहरण के तौर पर महान् वैज्ञानिक एडिसन एक बार सरकारी आफिस मे कर (टेक्स) भरने के लिये गये हुए थे। वहाँ वे अपना नाम ही भूल गये। बहुत प्रयत्न करने पर भी याद नही आया। उनकी यह दिक्कत पास मे खडे एक चतुर मनुष्य ने ताड ली। इसलिये उसने उनको नाम पूर्वक सम्बोधन किया और तब वैज्ञानिक एडिसन को विस्मय के साथ अपना नाम याद आया। यह स्थिति बनने का कारण यह था कि उनका मन नये-नये आविष्कार और खोज करने मे इतना तल्लीन रहता कि बाकी के समग्र विषयो की तरफ उपेक्षा वृत्ति हो गई थी।

ऐसा ही एक उदाहरण महात्मा मस्तराम जी का है। वे वास्तव मे मस्त थे। इसलिये बहुताश मे उनका लक्ष्य आत्माभिमुखता ही रहता था और अन्य विषयो मे उपेक्षा रहती। वे एक बार सौराष्ट्र के एक ग्राम मे किसी भक्त के निमत्रण से उसके वहाँ भोजन करने गये। उस भक्त ने उनको जिमाने के लिये चूरमा बनाया था, परन्तु हुआ यह कि उसने उस दिन एक ओर नमक पीस कर एक थाली मे रख दिया था, उसके पास ही पिसी हुई मिश्री की थाली भी पडी थी। इसलिए भोजन के साथ चूरमे मे मिलाने के लिए मिश्री वाली थाली के बदले भूल से नमक वाली आ गई। नमक कितना कडुआ होता है यह समझा जा सकता है परन्तु महात्मा मस्तराम जी तो सब वस्तुओ को मिला कर खा गये। खाना खाते समय उनका अन्त करण प्रसन्न दिखाई पडता

था, भोजन करने के बाद आशीर्वाद देकर वे चले गये और गाँव से थोडी दूर जाकर एक वृक्ष के नीचे आराम करने लगे, इधर उस भक्त ने जीमते समय उसी थाली से चीनी ली तो पता चला कि उसने महात्मा मस्तरामजी को भूल से नमक ही परोसा है। इसलिए वह खाना खाये बगैर ही एकदम उठा और मस्तराम जी कहाँ होने चाहिये यह अनुमान करके उनको खोजने के लिये निकल पडा। थोडी देर मे ही उसे पता चला कि वे एक वृक्ष के नीचे प्रसन्नचित्त बैठे है। वह भक्त पहुँचते ही उनके चरणो मे गिर पडा और कहने लगा, "महाराज! आज भारी अनर्थ हो गया है आप को जिमाते समय चीनी के बदले नमक भूल से चूरमे मे डाल दिया। उसका मुझे बहुत भारी अनुताप है। अब पता नही आपके शरीर को क्या होगा।" उक्त बात सुन कर मस्तराम जी बोले—"भक्त! हमने मिश्री खाई या नमक यह तो मालूम नही, परन्तु रसवती अच्छी बनी थी। इतना ख्याल आता है।" ऐसी बात एक दम किसके गले उतरे? पर महात्मा मस्तराम के लिये यह बात एकदम सत्य थी। वे स्वाद के विषय मे बिल्कुल उदासीन बन गये थे। इस कारण क्या वस्तु खाई, उसका ख्याल तक नही रखते थे। तात्पर्य है कि 'रस' परिवर्तन के कारण एक मनुष्य को एक बात बराबर याद रहती है और दूसरी बात बराबर याद नही रहती।

प्रश्न—अद्भुत स्मरण शक्ति किसे कहते है? इसका कोई उदाहरण देगे?

उत्तर—कुछेक मनुष्यो की स्मृति इतनी अधिक तीव्र होती है कि वे एक बार पढ कर ही या एक बार सुन कर ही सैकडो क्या हजारो बातो को बराबर याद रख सकते है। उसे हम अद्भुत या असाधारण स्मरण शक्ति कह सकते है।

महाभारत की रचना श्री वेद व्यास ने मौखिक रूप मे ही की थी। तपोवन मे महर्षि सैकडो शिष्यो को मौखिक ही अध्ययन कराते और कौन से शिष्य को कौन-सा पाठ दिया है, वह सब बराबर स्मृति मे रखते।

विद्या के परम प्रेमी (शौकीन) मालवपति महाराजा भोज के दरबार मे ऐसे भी कवि थे कि जो एक बार सुनकर ही जैसे तैसे

क्लिष्ट श्लोक याद कर लेते। उनके समय के महाकवि धनपाल द्वारा रचित तिलक मजरी नामक ग्रन्थ राजा के आदेश से नष्ट किये जाने पर भी उनकी पुत्री तिलक-मजरी ने अक्षरश फिर से लिखा दिया था।

गुजरात के महान् ज्योतिर्धर श्री हेमचन्द्रसूरि जी आचार्य को लाखों श्लोक याद थे। वे बिना रुके अस्खलित गति से ग्रन्थ रचना कर सकते थे।

युक्त प्रान्त मे हुए बचु कवि को दो लाख पद्य याद थे। स्वामी विवेकानन्द, श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, महाकवि गट्टू लाल जी, श्रीमद् राजचन्द्र आदि अनेक महान् पुरुष अपनी अद्भुत स्मरण-शक्ति के लिये भारत भर मे विख्यात हैं।

विदेश की तरफ दृष्टि उठाये तो सायरस अपनी सेना के हर एक सैनिक को नाम पूर्वक पहचानता था। रोमन सेनेटर और फिलसूफ सेनेको २००० नाम सुनकर उन्हे क्रमश दुहरा सकता था। लॉर्ड मेकाले ने मात्र चार वर्ष की अल्पायु मे ही पत्र पढना सीख लिया था। वे समग्र उनको याद हो गये थे। वाल्टर स्काट के "ले ऑफ दी लास्ट मीन्सट्रल" को उन्होने एक बार पढ कर अपनी माता को अक्षरश सुना दिया था। दूसरे भी अनेक ग्रन्थ उन्हे इसी तरह याद हो गये थे।

फ्लोरेस के राज पुस्तकालय के ग्रन्थपाल (लायब्रेरियन) मेग्लीआबेची के अनेक पुस्तको का सार दिमाग मे भरा हुआ था। जिससे किसी भी पुस्तक का अवतरण वह स्मृति मात्र से दे सकता था।

अमेरिकन सिविल-वार के समय मत्री पद पर कार्य करने वाले मी स्टेन्टन प्रख्यात नवल कथाकार डीकन्स की कोई भी नई कहानी का कोई भी प्रकरण अक्षरश बोल सकते थे। ई स १८६८ मे एक भोजन प्रसग मे उन्होने इसका प्रयोग करके दिखाया था।

डा जहोन लेडन कलकत्ता आए, तब कानून का एक ऐसा प्रश्न उठा कि जिसमे पार्लमेंटरी कानून पुस्तिका के अक्षर अक्षर की जरूरत पडी, परन्तु कोर्ट मे उसकी नकल नहीं थी। ऐसी

स्थिति मे मि लेडन ने अपनी स्मृति के आधार पर समग्र विधान लिखाया। जो कि उसने अपना देश छोडने से पहले मात्र एक बार पढा था। एक वर्ष बाद विलायत से विधान की प्रति आई तब देखा गया कि वह विधान अक्षरश ठीक है (प्रमाणित हुआ)।

बेन जेन्सन, डेझ फ्रेइटस्, लीबनीट्ज, पास्कल, स्केलीजर्स, हेमील्टन, नोबुहर, मेकीन्टोश, उग्लास स्टुअर्ट ग्रोशीअस, युलर, डीन मेन्सेल आदि पुरुष अपनी अद्भुत स्मृति के लिए सुप्रसिद्ध हैं।

केरो के विश्वविद्यालय मे सम्पूर्ण कुरान शरीफ को कठस्थ रखने वाले अनेक विद्यार्थियो के नाम उज्ज्वल अक्षरो मे अ कित है। चीन के विद्यार्थी भी अपने खास ग्रन्थो को अक्षरश· याद रखने वाले सिद्ध हुए हैं।

तात्पर्य यह है कि ससार मे समय-समय पर अद्भुत स्मृति वाले पुरुष पैदा होते रहे है और आज भी पैदा हो रहे है, पर उनकी सख्या बहुत विरल है।

इन उदाहरणो से यह बात सिद्ध होती है कि स्मरण शक्ति की वास्तविक शक्ति अगाध है। कितनेक मनुष्यो को पूर्व-जन्म की बाते भी याद आ जाती है, और वे एक या दो को नही, पर अनेक जन्मो की। वर्तमान पत्र-पत्रिकाओ मे उद्धृत अनेक घटनाओ ने इस बात को पुष्ट किया है।

मैं मानता हूँ कि ये उत्तर तुम्हारी स्मरण शक्ति को सुधारने की प्रतिज्ञा मे प्रेरक सिद्ध होगे।

मगलाकाक्षी
धी०

म

स्मरण शक्ति के प्रकार अतिमद, मद, विभागीय मद, तीव्र और तीव्रतम (अद्भुत)। स्मरण शक्ति की वास्तविक क्षमता अगाध है।

□

पंचम

ि स रण

प्रिय बन्धु !

तुम्हारे पत्र की भावपूर्ण ललित पक्तिया ने मुझे प्रचुर आह्लादित किया है। यह सत्य है कि "सौ सुनी हुई बात और एक देखी हुई बात" उसी प्रकार यह बात भी सत्य है कि 'सौ देखी हुई बात और एक अनुभूत की हुई बात" अर्थात् सुनने से अधिक साक्षात् देखने से और देखने से अधिक करने से किसी भी बात की विशेष प्रतीति होती है। यदि समय-समय पर जगत मे अद्भुत स्मरण शक्ति वाले पुरुष पैदा नही होते तो ससार के मनुष्य स्मरण शक्ति के अद्भुत सामर्थ्य को शायद ही स्वीकार करते, परन्तु आज तक वह क्रम चालू रहा है इस कारण मानव समाज ने स्मरण शक्ति के अपूर्व बल को अंगीकार कर रखा है।

लाखो करोडो अरे अरबो सस्कारो के समूह मे से अमुक संस्कार को ही कुछ पलको मे मन मे जागृत करना यह कोई ऐसी-वैसी बात नही है। इस एक मुद्दे पर ही मनुष्य यदि गम्भीरता से विचार करे तो स्मृति की महत्ता उसके हृदय मे बैठे बिना नही रहेगी।

अभी तुम्हारे दिल मे विविध प्रश्न उठते है। इसलिये कि तुम्हारी जिज्ञासा पूरी-पूरी सन्तुष्ट नही हुई। पर मैं मानता हूँ कि अब थोडे समय मे ही तुम्हारे मन का सम्पूर्ण समाधान हो जायेगा और तुम क्रियात्मक समाधान के मार्ग मे शीघ्रता से चलने लगोगे।

तुम्हारे प्रश्नो के उत्तर निम्न हैं—

प्रश्न—हम भूल कैसे जाते है ?

उत्तर—हम बहुत बातों को भूल जाते है। उसका प्रथम कारण तो यह है कि हमे अपनी स्मरण-शक्ति मे जितनी श्रद्धा होनी चाहिये, नही है। दूसरा कारण यह है कि अपने बहुत सी बातो को याद रखने की इच्छा ही नही रखते। तीसरा कारण है कि अपने उसमे पूरा रस नही लेते। चौथा कारण है कि जिस वस्तु को हमने देखा उसको उतना समझा नही। अथवा समझा तो मन की चौखट मे उसे बराबर बिठाया नही। पचम कारण है कि उसको जितना देखा उतना गहराई से उस पर ध्यान नही दिया। छठा कारण यह है कि हमनें उसे साहचर्य के गाढ़ बन्धन मे जकडा नही और सप्तम कारण यह है कि उस पर समय-समय पर चिन्तन नही किया—पुनरावर्तन नही किया।

इस सकल कथन का फलितार्थ यह है कि यदि हमे कोई वस्तु सही ठीक से याद रखनी हो तो स्मृति-शक्ति मे दृढ विश्वास होना चाहिये। उसके सम्बन्ध मे खास इच्छा जागृत होनी चाहिये। उसमे पूरा रस पैदा होना चाहिये। उस पर एकाग्रता से ध्यान देना चाहिये। उसको गहराई से समझने का प्रयास करना चाहिये। उसको साहचर्य से समृद्ध करना चाहिये और उसका समय-समय पर योग्य पुनरावर्तन करना चाहिए।

प्रश्न—स्मृति-भ्र श किसे कहा जाता है और उसका स्वरूप क्या है ?

उत्तर—स्मृति का लोप होना, कुछ भी याद न आना, उसको स्मृति-भ्र श कहते है। यह स्थिति एक प्रकार की मानसिक बीमारी है। उसके मुख्य प्रकार दो हैं—

१—उत्तर स्मृति भ्र श और २—पूर्व स्मृति भ्र श।

जिसमे पूर्व के अनुभव याद होते है पर ताजी या वर्तमान की घटनाएँ याद नही रहती, उसे उत्तर-स्मृति भ्रंश कहते हैं और जिसमे पूर्व का कुछ भी याद नही रहता, पर वर्तमान का कुछ-कुछ याद रहता है, वह पूर्व-स्मृति-भ्रंश कहलाता है। जिसका चित्त सम्पूर्ण नष्ट हो जाता है। वह चाहे जितना प्रयत्न करने पर भी अपने पूर्व के अनुभवो को, सस्कारो को याद नही कर सकता, उससे वह पशु जैसा बन जाता है।

प्रश्न—एक बात को याद करना न चाहे तब भी याद आये तब क्या समझा जाए ?

उत्तर—मन का सामान्य सयोजन ही ऐसा है कि उपयोगी विषय याद रखें और बिना उपयोगी विषय भूल जाएँ। यदि ऐसा न हो तो उपयोगी, निरुपयोगी सस्कार याद आते ही रहे तो आवश्यकता की बात पकडी नही जा सकती। इसलिये निर्धारित बात को स्मृति मे लाना हो तब दूसरी बाते याद न आयें, यह बहुत अपेक्षित है। उदाहरण के लिये आठ वर्ष पूर्व घटी घटना का सन्दर्भ याद करना हो तो बीच के वर्षों के समग्र विषय भूल कर उसे ही याद करना होता है, तभी वह वैसा बन सकता है। इसके बदले यदि मध्यवर्ती वर्षों के विषय याद आने लगे तो लाखो करोडो विषय एकत्रित हो जाएँ और उन समस्त का कालक्रम से चिन्तन करते हुए दूसरे आठ वर्ष और लग जाएँ। इसलिये कोई भी कार्य करने के लिये विस्मरण की खास आवश्यकता है।

अगर मनोनिर्णीत विषयो मे सन्तुलन होता है तो जिसे याद करना न चाहे वह विषय याद न आये। यदि याद न करने योग्य विषय भी याद आते रहे तो यह मन के सन्तुलन की खराबी कही जायेगी। ऐसी खराबी बढ जाए तो मनुष्य अस्वस्थ बन कर अ त मे उन्माद का रोगी बन जाता है।

"तीव्र स्मरण शक्ति" और "याद नही करनी हो फिर भी कोई बात याद आये" इन दो बातो मे महान् भेद है। तीव्र स्मरण शक्ति मे नियत समय मे धारी हुई बात बराबर याद आती है। और दूसरी स्थिति मे आवश्यकता हो अथवा न हो पर एक विषय याद आता है। इसलिये पहली स्थिति इष्ट है, पर दूसरी स्थिति किसी भी दशा मे इष्ट नही है।

प्रश्न– एकाग्रता किसे कहा जाता है ?

उत्तर—मन की एक-वैषयिक चिन्तन स्थिरता को एकाग्रता कहा जाता है अर्थात् मन जब अन्य विषयो का विस्मरण करके कोई एक ही विषय का अवलम्बन लेता है, तब मन एकाग्र हो गया, ऐसा कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर अश्व पर मन को एकाग्र

करना हो तो उस समय अश्व का ही विचार किया जा सकता है, पर गधा, ऊंट या हाथी का विचार नही किया जा सकता। दूसरी प्रकार से यो भी कहा जा सकता है कि अश्व को ही केन्द्र मे रख कर जिस विचारधारा का अवलम्बन लिया जाता है, वह अश्व विषयक एकाग्रता है और उस समय उसके सिवाय जो भी कोई विकल्प उठते हैं वे सब विक्षेप है। इसलिये जो वस्तु भूलनी हो वह भूल जाये तब ही एकाग्रता सिद्ध होती है।

योग शास्त्र मे महर्षि पतजलि ने चित्त की पाच दशाएँ बताई है वे इस प्रकार है—

(1) क्षिप्त—खूब आन्दोलित अर्थात् बहुत ही अस्थिर

(2) मूढ—जड़-प्रमाद युक्त।

(3) विक्षिप्त—प्रस ग-प्रस ग पर स्थिरता का अनुभव करने वाला।

(4) एकाग्र—एकत्व के अवलम्बन से स्थिर रहने वाला।

(5) निरुद्ध—कोई भी तत्त्व के आलम्बन बिना स्थिर रहने वाला।

इस अवस्था में प्रमाद, विपर्यय, विकल्प, निद्रा या स्मृति आदि कोई भी वृत्ति नही रहती है। मात्र स स्कार ही शेष रहते है। इसलिये यहाँ एकाग्रता से भी मन की बहुत ऊंची स्थिति है, जो योग्य अभ्यास से साधी जा सकती है।

पूर्व पत्रो का पुन पुन वाचन हो यह इष्ट है।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

स्मरण शक्ति एक अजीब शक्ति। भूलने के सात कारण, स्मृतिभ्र श—उसके दो प्रकार, विस्मरण के लिए चित्त की पाच अवस्थाओ मे एकाग्रता मुख्य।

□

छठा

ए I I के उपा

प्रिय बन्धु !

तुम्हारा पत्र मिला। अक्षर पहले की अपेक्षा सुधरे हैं। विचार भी काफी व्यवस्थित बने हैं और प्रश्न अपने ठीक लक्ष्य को पकड रहे हैं। इसलिए तुम प्रगति के पथ पर हो, यह निश्चित है। पूछे हुए प्रश्नो के उत्तर निम्नलिखित है—

प्रश्न—एकाग्रता का स्मरण शक्ति के साथ क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—एकाग्रता का स्मरण शक्ति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैसे आन्दोलित पानी पर गिरने वाला चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब अस्थिर होता है। जैसे चचल चित्रपट पर गिरने वाला चित्र स्पष्ट दिखाई नही पडता है। जैसे निरन्तर हिलते फलक-(पाटिये) पर अभीष्ट अक्षर उकेरे (अकित) नही जा सकते, वैसे ही आन्दोलायमान मन पर सस्कार स्पष्ट नही जम पाते। इस कारण उनका चाहे जैसे, (चाहे उसे उस प्रकार से) स्मरण नही हो सकता। विद्यालय मे पढ़ते समय विषय गणित का चलता हो और विचार क्रिकेट या पतग के चलते हो, उस विद्यार्थी को यदि शिक्षक पूछ बैठे कि तुमने इस उदाहरण का भाव ठीक-ठीक समझा या नही, तो वह उन्हे क्या उत्तर देगा ? शिक्षक बोल रहा था, सरस पद्धति से समझा रहा था और ब्लेक बोर्ड पर लिख भी रहा था, परन्तु उन विद्यार्थियो का मन उनकी किसी भी बात पर एकाग्र नही था, इस लिये वे कुछ भी याद नही रख सके।

प्रश्न—एकाग्रता प्राप्ति के लिये क्या करना चाहिये ?

उत्तर—एकाग्रता को साधने के लिए अनुभवी पुरुषो ने अनेक उपाय बताये हैं, उनमे एक उपाय यह है कि जिस विषय पर एकाग्रता करनी हो, उसे केन्द्र मे स्थिर करना चाहिये और उसका विचार

(१) वर्ग (२) अवयव (३) गुण और (४) स्वानुभव इस क्रम से करना चाहिये। उदाहरण के तौर पर तुम्हे गाय पर मन को एकाग्र करना हो तो सर्वप्रथम गाय का चित्र मन मे खडा करना चाहिए। फिर उसके वर्ग के सम्बन्ध मे विचार करना चाहिये वह इस प्रकार कि गाय एक पशु है, वह एक चतुष्पद प्राणी है। भैस, बकरी, अश्व, ऊँट, हाथी आदि भी चतुष्पद प्राणी है। वह एक दुधारू जानवर है। जैसे भैस दूध देती है, बकरी दूध देती है, वैसे ही यह भी दूध देती है, आदि-आदि। जब इस रीति से वर्ग सबधी विचारणा पूरी हो जाए, तब उसके अवयव संबधी चिन्तन करना चाहिए, जैसे कि गाय के चार पैर है। सिर पर दो सीग है। गले मे गल-कम्बल है। पीछे लम्बा पूँछ है, वगैरह-वगैरह। उसके बाद उसके गुणो के सबध मे विचार करना चाहिये। जैसे कि गाय बहुत ममतामयी होती है। उसे अपने मालिक के प्रति बहुत ही ममता भाव होता है, उसको जहाँ बाधा जाता है बन्ध जाती है। इसलिए कहावत है कि 'गाय और लडकी को जहा भेजो चली जाती है।'

गाय को बहुत से लोग खूब पवित्र मानते है। उसके दूसरे कारण तो चाहे जो हो, पर उसका दूध, दही, घी, गोबर और मूत्र ये पाँच वस्तुएँ तो बहुत ही उपयोगी है एव बैलो की पूर्ति भी यही करती है आदि आदि। उसके बाद स्वानुभव से विचार करना। मैंने अमुक मित्र के यहाँ एक गाय देखी थी। वह रूप रग में ऐसी थी। उस प्रसंग मे उसने अमुक प्रकार का दृश्य खडा किया था, आदि आदि अथवा गाय के विषय मे जो कोई अनुभवो का सग्रह हुआ हो तो उन्हे एक के बाद एक स्मृति-पटल पर उतारना। इस प्रकार विचार करने से मन गाय के विचारो मे ही खो जाएगा, एकाग्र बन जाएगा। इस सारी प्रक्रिया के बदले मात्र जो गाय, गाय, गाय की रटन लगायेगा तो सभव है कि थोडे ही पलो मे भैस, बकरी, अश्व आदि शब्द उसका स्थान ले लेगे और गाय पर कोई एकाग्रता नही हो पायेगी।

दूसरे मे इस प्रणाली से विचार करने की आदत डालने से मन बहुत व्यवस्थित बन जायेगा। जिससे वह हरेक वस्तु का विचार पद्धति से ही करने लगेगा।

प्रश्न—एकाग्रता साधने के लिए खास उपाय क्या है ?

उत्तर—एकाग्रता साधने के लिएँ महर्षि पतजलि ने यम, नियम आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान आदि साधन बताए है। उनमे अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना) ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच यम है। शौच, सन्तोष तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान ये पाँच नियम है। शरीर स्थिर रह सके तथा मन व्याकुल न हो, ऐसी स्थिति मे बैठना आसन है। प्राण-पवन (श्वासोश्वास) को सर्व प्रकार से नियत्रण मे लेना प्राणायाम है। इन्द्रियो को अपने-अपने विषयो से निर्वतित करके चित्त के अनुकूल बनाना प्रत्याहार है। शरीर के हृदय आदि आन्तरिक भागो पर अथवा नासिका, भृकुटि आदि बाह्य भागो पर या देव गुरु की कोई मूर्ति विशेष पर एकतानता अनुभव करना ध्यान कहलाता है। ये साधन जो कि अति उच्च प्रकार की एकाग्रता साधने के लिए हैं तथापि इनके पीछे रहे सिद्धान्तो का उपयोग सामान्य एकाग्रता के लिए भी किया जा सकता है।

अब तुम जिनका प्रयोग कर सको वैसे कुछेक अनुभव-सिद्ध साधन बता रहा हूँ। उनका अभ्यास करने के लिए निम्नलिखित सूचनाएँ लक्ष्य मे रखना।

१ एकाग्रता के अभ्यास के लिए प्रतिदिन आधा घण्टा पृथक् निकालना।

२ अभ्यास करते समय शरीर और वस्त्र से शुद्ध होकर बैठना।

३ स्थान ऐसा पसन्द करना कि जहाँ तक बन सके घरघराट या हल्ला होने की सम्भावना न हो। प्रारभ मे इसकी खास जरूरत है।

४ आसन बिछाकर बैठना।

५ बैठने का ढग ऐसे रखना चाहिए कि जिससे मेरुदण्ड पर फैले ज्ञान तन्तु सजग रहे।

६ प्रात काल का समय अधिक अनुकूल माना जाता है।

प्रथम साधन

अंगुलि के पैरवो (पर्वो) पर १०८ की संख्या गिनो। उसके बीच मे किसी भी प्रकार का विक्षेप हो जाए, दूसरे विचार मन मे आ जाए तो भी इसका अभ्यास बराबर चालू रक्खो। यह गणना जब निर्विक्षेप सम्पन्न हो जाये तब इस संख्या को २५१ कर दो। इस रीति से क्रमश आगे बढाते हुए ५०१ और फिर १००१ तक ले जाओ।

द्वितीय साधन

कोई भी पुस्तक को खोल कर उसके एक पत्र मे कितने अक्षर अंकित हैं, उसकी गणना करो। ध्यान मे रखना कि गणना शब्दो की नही पर अक्षरो की करनी है। उत्तरोत्तर सूक्ष्म अक्षरो को गिनने का अभ्यास करो।

तृतीय साधन

इस पुस्तक के पचम पत्र की प्रतिलिपि करो। यह प्रतिलिपि एकदम बराबर होनी चाहिए। इसमे जिस प्रकार से वाक्य मुद्रित है, उसी रीति से वाक्य लिखने हैं। जहाँ अल्प विराम हो वहाँ अल्प विराम, जहाँ अर्ध विराम हो वहाँ अर्ध विराम और जहाँ पूर्ण विराम हो वहाँ पूर्ण विराम। दूसरे चिह्न भी यथा स्थान बराबर होने चाहिए। ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व न हो।

तुम्हारे द्वारा किया गया अनुलेखन कितना सही है, इसका निर्णय दूसरे के माध्यम से होने दो। प्रारम्भ मे अपनी भूले अपने आप अच्छी प्रकार से नही पकड सकोगे।

जब प्रतिलिपि एक दम शुद्ध हो जाए तब आगे बढो

चतुर्थ साधन

हथेली मे चने लेकर उनकी गिनती करो। फिर मूँग लेकर गणना करो, शेष मे चावल के दाने गिन सको, इतने आगे बढो।

यह विषय अभ्यास का है, इसलिए उसे सिद्ध करने के लिए बराबर कोशिश करो। भूल या अनिश्चितता बिल्कुल नही करो।

पंचम साधन

बराबर सम बैठकर आँखें बन्द करो। वातावरण में कौन सी कौन सी प्रकार की आवाज हो रही है, उनकी नोंध लो—मन मे सूची बनाओ और हर एक आवाज किस चीज की है, यह समझने का प्रयत्न करो। यह अभ्यास तब तक चालू रखो जब तक कि दूर की आवाज को भी बराबर सुन सको।

छठा साधन

अतीत काल के हुए व्यवहारो का पिछले क्रम से याद करो। उसी रीति से उसके अगले दिन मे भी याद करो। यह क्रम एक सप्ताह तक बनाओ। सात दिन तक की घटनाओं का इस क्रम से स्मरण करो।

सप्तम साधन

विगत महीने की खास खास घटनाओ को याद करो, फिर उसके अगले महीने की घटनाओ को भी याद करो। यह क्रम बारह मास तक ले जाओ, वह बराबर हो इसलिए इस क्रम को वर्ष बार पीछे ले जाओ। कुल सोलह वर्ष तक की घटनाओ को इस रीति से याद करो।

अष्टम साधन

आँखें बन्द करो। मन मे आठ पँखुडी वाले एक कमल की कल्पना करो। उसके मध्य भाग मे ॐकार की स्थापना करो, उसमे चित्त को एकाग्र करो। निरन्तर थोड़े समय के लिए यह अभ्यास चालू रखो।

म साधन

आँखे बन्द करो। किसी भी प्रकार के विचार मन मे न आए, वैसे प्रयत्न करो। इस अभ्यास का प्रारम्भ दो मिनट से शुरू करके ४८ मिनट तक ले जाओ।

दशम साधन

आँखे बन्द करो। निम्नलिखित विषयो के सिवाय कोई भी विषय पर विचारणा करो।

अश्व, वानर, स्त्री पैसा, मोटर, प्यार और औषधि । इन विषयो का विचार बिल्कुल न आये तो समझना कि तुम एकाग्रता साधने मे सफल हो गये हो ।

इन साधनो का उपयोग क्रमश करने पर विशेष लाभ होगा ।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

एकाग्रता की आवश्यकता, विषय को केन्द्र स्थान मे रखकर उसका वर्ग, अवयव, गुण और स्वानुभव से विचार, करना यौगिक उपाय दस प्रकार के साधन । साधन केवल पढ लेने के लिए नही, किन्तु अभ्यास करने के लिए हैं ।

□

पंचम साधन

बराबर सम बैठकर आँखें बन्द करो। वातावरण में कौन सी कौन सी प्रकार की आवाज हो रही है, उनकी नोध लो—मन मे सूची बनाओ और हर एक आवाज किस चीज की है, यह समझने का प्रयत्न करो। यह अभ्यास तब तक चालू रखो जब तक कि दूर की आवाज को भी बराबर सुन सको।

छठा साधन

अतीत काल के हुए व्यवहारो का पिछले क्रम से याद करो। उसी रीति से उसके अगले दिन मे भी याद करो। यह क्रम एक सप्ताह तक बनाओ। सात दिन तक की घटनाओ का इस क्रम से स्मरण करो।

सप्तम साधन

विगत महीने की खास खास घटनाओ को याद करो, फिर उसके अगले महीने की घटनाओ को भी याद करो। यह क्रम बारह मास तक ले जाओ, वह बराबर हो इसलिए इस क्रम को वर्ष बार पीछे ले जाओ। कुल सोलह वर्ष तक की घटनाओ को इस रीति से याद करो।

अ साधन

आँखें बन्द करो। मन मे आठ पँखुडी वाले एक कमल की कल्पना करो। उसके मध्य भाग मे ॐकार की स्थापना करो, उसमे चित्त को एकाग्र करो। निरन्तर थोडे समय के लिए यह अभ्यास चालू रखो।

नवम साधन

आँखें बन्द करो। किसी भी प्रकार के विचार मन मे न आए, वैसे प्रयत्न करो। इस अभ्यास का प्रारम्भ दो मिनट से शुरू करके ४८ मिनट तक ले जाओ।

दशम साधन

आँखे वन्द करो। निम्नलिखित विषयो के सिवाय कोई भी विषय पर विचारणा करो।

सप्तम

साध की परिच ि (१)

प्रिय बन्धु !

स्मरण-शक्ति के विकास के इच्छुक व्यक्ति को किस प्रकार की परिचर्या रखनी चाहिए, उसके कुछ नियम इस पत्र मे दे रहा हूँ।

१. योग और अध्यात्म का गहरा अनुभव रखने वाले भारत के महर्षियो ने छान्दोग्य-उपनिषद् मे कहा है कि 'सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृति ' सत्त्व की शुद्धि होने पर अखण्ड स्मृति की प्राप्ति होती है।' इस आर्ष वचन का व्यापक अर्थ शरीर और मन इन दोनो की पवित्रता अथवा नीरोग दशा है क्योकि स्मृति सुधार के लिए शरीर और मन की अवस्था नीरोग होना अभीष्ट है।

२ शरीर जब नीरोग हो, इन्द्रियाँ जब पूरी तरह सजग और स्वस्थ हो, तब ज्ञान-तन्तु बराबर सक्रिय होते है। इसी कारण उस समय जो कुछ ग्रहण करने मे आता है वह सम्यक् प्रकार से याद रह जाता है।

३ स्वस्थ शरीर वाला साधक एक आसन मे दीर्घ समय तक बैठ कर अपने विषय मे एकाग्र हो सकता है। जबकि छोटे-मोटे रोग वाले को बार-बार थूकने के लिए उठना पडता है। पैरो को पसारना और सकुचित करना पडता है। आलस मरोडना पडता है। इसलिए वे दीर्घ समय तक एक आसन मे नही बैठ सकते है। वैसे ही अपने विषय मे एकाग्र भी नही हो पाते हैं।

४ कितने ही रोग ऐसे होते हैं जो स्मृति पर सीधा असर डालते है। उदाहरण के तौर पर हार्ट का दर्द (फेफडे का अपस्मार)

उपदंश-क्षय की द्वितीय और तृतीय अवस्था, अनिद्रा, स्वप्नि‍ल निद्रा, सिर का दर्द, आँतो की व्याधि और बार-बार स्वप्न दोष आदि । ये रोग धीरे-धीरे स्मृति की तीव्रता को खोते चले जाते है और अन्त मे थोडा याद रखना भी मुश्किल हो जाता है । इन रोगियो को स्मृति-सस्कार के लिए पहले से ही रोगो का उचित उपचार करना चाहिए ।

५ जिनके जन्म से ही दिमाग की कमजोरी हो उनकी बात एक बार, एक तरफ रखें, परन्तु जिनको चक्कर आने से या धक्का लगने पर अथवा भारी बुखार आने पर या टाईफाइड जैसी बीमारी पीछे पडने पर ज्ञान-तन्तुओ मे निर्बलता आती है और उसी कारण से स्मृति मे मन्दता आती है । उन्हे बिना विलम्ब कुशल चिकित्सको की देख-रेख मे उपचार कराना चाहिये ।

६ शरीर, मानसिक विकास का प्रथम साधन है ।

७. गुलाबी निद्रा शरीर और मन को ताजगी देने के लिए उत्तमोत्तम दवा हैं । जो वैसी नीद लेने के लिए भाग्यशाली है, उनका मन प्रात काल उठते समय प्रसन्नता से भरपूर होता है । उसमे भी यदि यह समय सूर्योदय से डेढ या दो घडी पहले का हो, तो वायुमण्डल की सात्त्विकता से पूर्ण होकर भारी एकाग्रता अनुभव की जा सकती है, गहरा चिन्तन किया जा सकता है और सीखी हुई विद्या या अतीत के अनुभवो को सरल रीति से स्मृति मे लाया जा सकता है । इसके विपरीत, जो लोग रात्रि मे बहुत देर तक जागते हैं और सुबह विलम्ब से उठते हैं । उनके मनो मे राजस् और तमोगुण की वृद्धि हो जाती है, जिससे उनकी बुद्धि तथा स्मृति कुण्ठित हो जाती है । 'रात रहे ज्याहरे पाछली खट घडी, साधु पुरुष ने सूई न रहेवु ' यह पक्ति नरसिंह मेहता ने पूर्व पुरुषो की वैसे ही अपने अनुभव पर लिखी है ।

८ प्राचीन काल मे शीघ्र सोकर शीघ्र उठने की परिपाटी का सम्यक् प्रकार से अनुसरण होता था । इस कारण उनके शरीर नीरोग, मन मजबूत और हृदय सात्त्विकता से भरपूर रहते । जबकि आज धन्धे प्रधान और विलासी जमाने मे बहुत देर तक

नाटक-सिनेमा देखना, चाय-पानी पीना, ताश या जुआ खेलना आदि बुरी आदतों के कारण देर से उठने की कुटेव बढती चली जा रही है। इस कारण प्रात.काल का पवित्र समय जिसे कि ब्रह्म मूहूर्त कहा जाता है, उसका यथेष्ट लाभ नही लिया जा सकता।

९ सामान्य मनुष्य को सात घण्टे की नीद काफी है। कुछ साधक उतनी ही ताजगी पाच-साढे पाँच घण्टे की नीद से भी प्राप्त कर लेते है। इसमे मुख्य बात यह है कि जो नीद ली जाए, वह दिमाग को शान्त करने वाली होनी चाहिए। अनेक साहित्य-स्वामी, वैज्ञानिक और राज्याधिकारी पुरुष इस रीति से स्वल्प पर सुखद निद्रा लेकर, कार्य करने के लिये काफी समय बचा लेते है, जो उनके अग्रिम जीवन मे यश और लाभ देने मे उपयोगी सिद्ध होता है।

१०. शरीर मे से तमोगुण का प्रमाण बहुत घटने के बाद अल्पनिद्रा भी पूरी विश्रामदायक साबित होती है। योग सिद्ध पुरुष नीद लेते ही नही हैं। वैसा होने पर भी उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति सन्तुलित और सुदृढ बनी रहती है।

११ शीघ्र उठकर तुम्हे क्या-क्या करना है, यह भी समझ लेने की आवश्यकता है। उनका क्रम साधारणतया निम्नलिखित बनाया जा सकता है—

(क) उठते ही कुछ मिनटो तक इष्टदेव का स्मरण करना।
(ख) वह पूर्ण होते ही ॐकार का जप करना।

श्री छान्दोग्य-उपनिषद् मे ॐकार की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा है—

यथा शङ्कुना सर्वाणि पर्णानि सन्तृणान्येव
ॐङ्कारेण सर्वावाक् सन्तृणोकार एवेद सर्वम्।

ॐकार का अर्थ पृथक् पृथक् अनेक प्रकार से किया गया है, परन्तु उसका सर्व सामान्य अर्थ परमात्मा है। इसलिए उसका जाप कोई साम्प्रदायिक क्रिया नही है पर आत्म शुद्धि का परम मार्ग है।

(ग) उसके बाद प्रार्थना का आशय भावशुद्धि होना चाहिए। इस प्रार्थना के अन्त मे निम्न श्लोक से सरस्वती की स्तुति करनी चाहिये।

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता,
या वीणावर-दण्ड-मण्डित-करा या श्वेत-पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत-शकर–प्रभृतिभिर्देवै सदा वन्दिता,
सा मा पातु सरस्वती भगवती नि शेष-जाड्यापहा ।

अर्थात्—जो मोगरे के फूल, चन्द्रमा, हिम और मुक्ता हार के समान उज्ज्वल श्वेत है, जिसने शुभ्र श्वेत वस्त्र धारण कर रखे है, जिसके हाथ वीणा के उत्तम दण्ड से शोभित है, जो श्वेत कमल के आसन पर बैठी है, जो ब्रह्मा, विष्णु और शकर आदि के द्वारा सदा वन्दित है, वह अज्ञान का सर्वथा नाश करने वाली पूज्य सरस्वती मेरा रक्षण करे।

(घ) फिर 'ॐ ह्रॉ एँ ह्री ॐ सरस्वत्यै नम.' यह भारतवर्ष के सिद्ध सारस्वत-मन्त्र का १०८ बार या उससे अधिक जाप करना। ऐसा माना जाता है कि यह जाप ११००० बार होने पर मन्त्र सिद्धि हो जाती है। अनुभव के आधार पर भी इस मान्यता मे तथ्य जान पडता है।

(ङ) प्रात काल मे ही मल विसर्जन हो जाए यह उचित है। इस समय मे दस्त बराबर साफ हो जाए उस तरफ ध्यान देना चाहिए। अगर शौच बराबर नही होता हो तो भोजन मे उचित अदल-बदल करनी चाहिये। समय-समय पर ऐनिमा लेना अथवा रात्रि मे सोते समय ठण्डे पानी से मल-शुद्धि चूर्ण लेना चाहिये। इस चूर्ण से एक दस्त बराबर साफ आ जायेगा। मल शुद्धि चूर्ण बनाने की रीति निम्नोक्त है—सुखाडी हरड २ तोला, सोनामुखी २ तोला, रेवद चीनी २ तोला, सैन्धव नमक दो तोला, संचल नमक आधा तोला, काली मिरच आधा तोला, कुल साढे नौ तोला। इन वस्तुओ को अच्छी तरह देखकर लेना चाहिये तथा एकदम साफ करके बारीक कूट कर

एक शीशी मे भरले । इतना चूर्ण लगभग ५० बार काम मे आ सकता है । आवश्यकता अनुरूप इसके प्रमाण को को कम बेसी किया जा सकता है ।

यदि दूसरी कोई औषधि अनुकूल पडती हो तो प्रासगिक रूप से उसका उपयोग करने मे भी कोई आपत्ति नही है । परन्तु वह अधिक विरेचक (दस्तावर) नही होनी चाहिये, यह खास ध्यान मे रखें ।

मल विसर्जन के बाद मल-मूत्र के मार्ग तथा हाथ-पग आदि अवयवो की स्वच्छ जल से अच्छी तरह शुद्धि कर लेनी चाहिये । उसके लिये कहा गया है कि—

मेध्य पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशकम ।
पादयोर्मलमार्गाणा शौचाधानमभीक्ष्ण ॥

हाथ, पग और मल-मूत्र आदि के मार्गों को जल से स्वच्छ करना मेधाकारक, पवित्र, आयुष्यवर्धक और दारिद्र्य-विनाशक माना जाता है ।

(च) उसके बाद दान्तून से दाँत, जीभ और आँखो को स्वच्छ करना चाहिये । दाँतो की स्वच्छता के लिए बबूल की दान्तून तथा नमक उत्तम है । शास्त्रीय पद्धति से बना हुआ मजन भी प्रयोग मे लाया जा सकता है । उसके लिए आयुर्वेद का मन्त्र निम्नोक्त है—

कदम्बे तु धृतिर्मेधा, चम्पके दृढवाक्श्रुति ।
अपामार्गे धृतिर्मेधा प्रज्ञाशक्तिस्तथासने ॥

कदम्ब वृक्ष की दान्तून से धृति और मेधा, चम्पक की दान्तून से वाणी तथा श्रवण शक्ति, अपामार्ग-आगा आधीझाडा की दान्तून से धैर्य और बुद्धि और आसन (अश्वगध) की दान्तून से प्रज्ञाशक्ति विकसित होती है ।

सप्ताह मे एकाध वार माजुफल उबाल कर, उसमे थोडी फूली हुई फिटकरी डाल कर उससे कुल्ले करना हितप्रद है ।

इससे दात के ऊपर की पपडी और रस्सी दूर हो जाती है तथा दात के मसूडे मजबूत बनते है।

कब्ज, नि सत्त्व खुराक, अति गर्म और अति ठण्डे पदार्थो का सेवन तथा दूसरे कारणो से होने वाला दातो का दर्द मानसिक शक्ति मे भी बहुत विघटन पैदा करता है।

दन्त शुद्धि के साथ जीभ की शुद्धि भी होनी चाहिए। जिह्वा पर जमा हुआ मैल प्रतिदिन दूर कर देना चाहिये।

आँख की शुद्धि स्वच्छ जल के छबके (छीटे) मार कर अथवा मिट्टी के बर्तन मे रात्रि समय भीगे त्रिफला के शीतल जल से करनी चाहिए। त्रिफला सस्ती से सस्ती औषधि है। इतने सस्ते खर्च मे जो लाभ होता है वह बहुत अधिक है। ज्ञान वृद्धि मे आँखें अति उपयोगी है। इसलिए उनकी सुरक्षा ठीक करनी चाहिए।

(छ) मुख शुद्धि होने के बाद नासिका के द्वारा पानी पीना चाहिए, उसके लिए ग्रन्थो मे कहा गया है कि—

> विगतघन-निशीथे प्रातरुत्थाय नित्य,
> पिबति खलु नरो यो नासरन्ध्रेण वारि।
> स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्यो,
> बलिपलितविहीन. सर्वं रोगैर्विमुक्त ॥

मेघ रहित रात्रि बीतने पर शीतकाल और ग्रीष्मकाल मे प्रतिदिन प्रात काल उठते ही जो मनुष्य नासिका से जल पीता है, वह बुद्धि सम्पन्न, गरुड़ समान दृष्टिवाला, झुर्रियो और सफेद बालो से रहित तथा समग्र रोगो से मुक्त हो जाता है।

नासिका द्वारा पीया जाने वाला पानी रात्रि मे ताम्बे के लोटे मे भर कर रखा जाये और सुबह इसका प्रयोग किया जाय तो बहुत अधिक फलदायक होता है।

(ज) थोडी देर प्रात कालीन शुद्ध वायु का सेवन करना चाहिये। प्रात: परिभ्रमण के लिए कहा गया है कि

यत्तु चङ्क्रमणं नाति देहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥

जो पर्यटन, शरीर को बहुत पीडाकारक न हो अर्थात् बहुत अधिक तकलीफ देने वाला न हो तो वह आयु, बल, बुद्धि और पाचन शक्ति का वर्धक होता है और इन्द्रियो को प्रबुद्ध रखता है ।

(झ) फिर अनुकूल आसन करने चाहिये, उनमे शीर्षासन खास करना चाहिए। दोनो हाथो की हथेलियो पर सिर को नीचा रखकर पग आकाश मे अधर रखे जाये, उसे शीर्षासन कहते है। यह आसन करने से मस्तिष्क को प्रचुर मात्रा मे रक्त मिलता है जिससे मानसिक शक्तियो का उन्मेष सम्यक् प्रकार से होता है ।

(ञ) फिर प्राणायाम करना। प्राणायाम अर्थात् प्राण का आयाम, प्राण की कसरत, अर्थात् प्राण को नियन्त्रण की शिक्षा। इस सम्बन्ध मे वृहदारण्यक उपनिषद् और छान्दोग्य उपनिषद मे कहा है—

"वाणी, आँख, कान और मन इन सब मे प्राण श्रेष्ठ है इसलिए कि वाणी, आँख, कान और मन न हो तो प्राणी जी सकता है पर प्राण न हो तो प्राणी जीवित नही रह सकता।" तैत्तिरीय उपनिषद् (२-३) मे उल्लिखित है कि प्राण से ही देव, मनुष्य और पशु श्वासोश्वास लेते हैं ।

अनुभवियो का अभिमत है कि—"शारीरिक परिश्रम करने वालो की अपेक्षा मानसिक परिश्रम करने वालो के प्राणतत्त्व का व्यय अधिक होता है, इसलिए मानसिक विकास के अभिलाषियो को प्राणायाम अवश्य करना चाहिए ।

प्राण का मुख्य भण्डार मस्तिष्क मे स्थित ब्रह्म रन्ध्र मे, दिमाग मे और पृष्ठ वंश के भाग मे आया हुआ है। उसका चेतना उत्पन्न करने वाले ज्ञान तन्तुओ के साथ

निकट का सम्बध है और रक्त को शुद्ध रखना तथा मन को स्वस्थ रखना यह भी इसी का काम है।

इस विषय के मर्मज्ञो का अभिमत है कि 'प्राण जब अपनी स्वाभाविक गति को छोडकर बाँका-टेढा चलना शुरू करता है तब ही रोगो की उत्पत्ति होती है। खाँसी प्राण की विकृति का प्रथम चिह्न है। वीर्य का स्खलन तथा शक्ति का विनाश भी प्राण की विक्रिया का हो प्रताप है।

अपने चारो तरफ वायुमण्डल मे प्राण तत्त्व ठसाठस भरा हुआ है। पर उसका लाभ कितने लोग उठा पाते है?

यदि प्राण तत्त्व को उचित प्रकार से ग्रहण किया जा सके तो अनेक व्याधियाँ इस शरीर से अपने आप चली जाती है। परिणाम स्वरूप पैसा, समय की बर्बादी तथा व्यर्थ की तकलीफ से व्यक्ति बच जाता है। मुफ्त की कीमत कितनी है? विज्ञ मनुष्य इसका अकन जरा भी कम नही करते है, योग्य लाभ उठाना चाहिये।

प्राणायाम यह श्वासोश्वास की कसरत है, जो हृदय और मस्तिष्क को उद्दीप्त करने के लिए बहुत उपयोगी है। अपने देश मे बहुत प्राचीन काल से उसका महत्त्व पहचाना गया है। इसलिए ही महर्षि पतजलि ने उसको योग के आठ अङ्गो मे चतुर्थ स्थान प्रदान किया है।

प्राणायाम करने की पद्धति यह है कि सर्वप्रथम पद्मासन मे स्थिरता पूर्वक बैठना, फिर बायाँ हाथ बाये जानु पर सीधा लटकता रखना और दाहिना हाथ नाक के आगे लाकर उसकी चिटली अगुली नासिका के बाये भाग पर तथा अगूठा दक्षिण भाग पर रखना चाहिए। अब चिटली अगुली से उस भाग को दबाकर मात्र दक्षिण नासिका के द्वारा ही श्वास लेना प्रारम्भ करना चाहिए। इस रीति से पूरा श्वास लिया जाए तब तक अगूठे से दाहिनी नासिका बन्द रखनी चाहिए और श्वास को रोक

कर रखना चाहिए। थोडी देर बाद चिटली अंगुली उठा कर बायी नासिका से श्वास को धीरे-धीरे छोड देना चाहिए।

इतनी क्रिया का यह एक प्राणायाम हुआ। ऐसे पाच प्राणायामो से प्रारम्भ करके धीरे-धीरे बीस प्राणायामो तक आगे बढना चाहिए।

प्राणायाम करते समय इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये कि इस क्रिया से मुझे खूब लाभ मिल रहा है। मेरे मस्तिष्क के प्रत्येक भाग मे तथा रग-रग मे शुद्ध रक्त का सचार हो रहा है और दूषित मल बाहर निकल रहा है। मेरी प्राण शक्ति खूब सतेज हो रही है। मेरा शरीर तथा मन स्वास्थ्य से भरपूर बन रहा है।

प्राणायाम पर अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे गये है। इसलिए आवश्यकता महसूस हो तो उनमे से प्रमाणभूत एक-दो ग्रन्थ गहराई से पढ लेने चाहिये।

यह पत्र प्रमाण मे कुछ लम्बा हो गया है। इसलिए अब अधिक नही लिखकर यही समाप्त करता हूँ। साथ-साथ मैं ऐसी आशा रखता हूँ कि इनमे से जो-जो विषय आचरण मे लाने योग्य प्रतीत हो, उन्हे बिना विलम्ब आचरण मे उतारकर लाभ उठाओगे।

प्रात काल की इस क्रिया के बाद क्या करना चाहिए ? इसकी सूचना अब बाद के पत्र मे ज्ञापित करूँगा।

मगलाकाक्षी
धी०

□

अष्टम पत्र

साधक की चर्या (१)

प्रिय बन्धु!

तुम्हे गत पत्र की विज्ञप्ति के मुताबिक प्रात.काल की विधि के बाद के कार्यक्रम की रूपरेखा लिख कर भेज रहा हूँ। इन सूचनाओ का महत्त्व सही-सही पहचानना और अपनी जीवन चर्या मे अपेक्षित परिवर्तन करना।

१ लगभग सात बजे तक प्रात काल की समग्र क्रियाये सम्पन्न कर दुग्ध पान करना। इसका लाभ अनुभवी पुरुषो ने सौ सौ मुखों से गाया है। उन्होने बताया है—

दुग्ध सुमधुर स्निग्ध वात-पित्त-हर सरम्,
सद्य शुक्रकर शीत सात्म्य सर्वशरीरिणाम्।
जीवन बृहण बल्यं मेध्य बाजीकर परम्,
वय स्थापनमायुष्य सन्धिकारी रसायनम् ॥

दूध मधुर, स्निग्ध, वात पित्त नाशक, दस्त साफ लाने वाला, वीर्य को जल्दी पैदा करने वाला सब प्राणियो के लिए अनुकूल, जीवन रूप, पुष्टिकारक, बलदायक, मेधा वर्धक, धातु की पुष्टिकर्ता, आयुष्य की स्थिरता तथा वृद्धि करने वाला रसायन है। दूध के साथ दूसरी अनुकूल वस्तुये भी नाश्ते के रूप मे ली जा सकती है। चाय, कॉफी और कोकाकोला जैसे पेय पदार्थो का इन दिनो मे बहुत प्रचार हो गया है, पर दूध की तुलना मे सब निस्सार हैं, नि सत्त्व हैं। इनमे लाभ की अपेक्षा हानि की सम्भावना अधिक है। देश के उभरते बालको को

विद्यार्थियो को तथा युवकों को आवश्यक मात्रा मे दूध मिलता रहे, उसके लिए समाज और राज्य को समुचित व्यवस्था करने की अनिवार्य आवश्यकता है। जिस देश मे एक समय दूध और घी की नदियाँ बहती थी, इस देश की उभरती प्रजा को आज पूरा पीने जितना दूध भी नही मिलता है और जो मिलता है वह भी सब मिलावट वाला, यह बात कितनी खेदजनक है। इस स्थिति मे उभरती प्रजा बुद्धि-बल मे कितनी प्रगति कर सकेगी? कितनी सुचारु व्यवस्था बन सकेगी ?

भैंस की अपेक्षा गाय का दूध स्मृति के लिए अधिक लाभदायक माना गया है। गर्दभी का दूध बुद्धिमाद्यकर और घोडी का दूध हृदय के लिए अहितकर है। बकरी का दूध पूरी तरह पथ्य और बुद्धि शक्ति के लिए मध्यम है।

२ खान-पान का प्रभाव मनुष्य की बुद्धि और स्मृति पर पडता है, इसलिए आहार यदि सात्त्विक हो तो बुद्धि सात्त्विक बनती है, आहार राजसिक हो तो बुद्धि राजसिक बनती है और आहार तामसिक हो तो बुद्धि तामसिक बनती है। इसीलिए कहा गया है कि—

आहार प्राणिन सद्यो बलकृद् देहधारिण ।
स्मृत्यायु शक्ति-वर्णौज सत्त्व-शोभा-विवर्धन ।।

सात्त्विक आहार त्वरित ही बल को उत्पन्न करना है तथा देह को धारण करता है, वैसे ही स्मृति, आयुष्य शक्ति, वर्ण, ओजस्, वुद्धि और शोभा का वर्धन करता है '

३ नीचे की वस्तुओ का उपयोग स्मृति को सुधारता है। गाय का दूध, ताजा मक्खन, मधु, मिसरी, गेहूँ, चावल, बादाम, अखरोट केला और अमरूद।

४ निम्नोक्त वस्तुओ का प्रयोग स्मृति को विकृत बनाता है।—

मदिरा, भाग, गांजा, चरस, अतिकटुक पदार्थ, अतितिक्त पदार्थ, टीडोलाँ, सुपारी तथा नागरवेल के डण्ठल सहित पान।

५ शेष वस्तुएँ मध्यम हैं।

६. स्मृति साधकों के लिए गरिष्ठ मिष्ठान्न हितावह नही हैं। वैसे ही ठूस-ठूस कर खाना भी नुकसान करने वाला है। साधारण-तया भूख की अपेक्षा कुछ कम खाना हर प्रकार से लाभप्रद है। रात्रि मे देर से खाकर शीघ्र सोने की आदत अनेक रोगो को उत्पन्न करती है। खासकर यह कुटेव मानसिक जडता पैदा करती है। सन्ध्याकालीन भोजन और निद्रा के बीच तीन घण्टा का अन्तर रहना अभीष्ट है।

७ शयन से पहले हाथ-पग और मुँह धो लेना चाहिए। उस समय कुल्ला करके मुँह को एकदम साफ कर लेना चाहिए, जिससे दात आदि मे कोई कचरा न रहे।

८ वीर्य शरीर का राजा गिना जाता है। बल, बुद्धि, कान्ति तथा स्मृति का आधार उसी पर निर्भर है। इसलिए जिसने वीर्य का सचय उत्तम प्रकार से किया है वह बलवान्, बुद्धिमान्, कान्तिमान् और तीव्र स्मृति वाला बन जाता है। उसके लिए भीष्म पितामह, अरिष्ट नेमि, वीर हनुमान आदि के उदाहरण आदर्शरूप है। दुनिया के सबसे महान् गणितवेत्ता सर आइजेक न्यूटन और महान् तत्वज्ञानी काट दीर्घायु बने उसका कारण उनका ब्रह्मचर्य पालन ही था। 'हर्बर्ट स्पेन्सर' और 'स्विडन बर्ग' जैसे समर्थ विद्वान् भी आजीवन ब्रह्मचारी थे।

हस्तदोष और अति समागम वीर्य को सम्पूर्ण तरह से नष्ट करने वाले है। उनसे धारणा और स्मृति का बल जल्दी ही क्षीण हो जाता है।

गृहस्थो के लिए स्वदारासन्तोष अर्थात् अपनी स्त्री से सन्तोष यह ब्रह्मचर्य के तुल्य है। इसके लिए परस्पर का स्नेह आवश्यक है।

९ जिसका मन समग्र समय तीव्र मोहासक्त विचारयुक्त अथवा आवेश भरे विचारो के अन्तर्द्वन्द्व मे रहता है। वह शीघ्र ही थक जाता है और उसकी शक्ति मन्द पडने लगती है। यदि ऐसा अत्याचार अधिक समय चालू रहे तो उसमे से मन की

अस्थिरता, विचार शून्यता, भ्रम, चक्कर, अनिद्रा, सिरदर्द आदि रोग हो जाते है। इसीलिए कहा है कि—

शोक क्रोधश्च लोभश्च, कामो मोह परासुता.।
ईर्ष्या मानो विचिकित्सा घृणासूया जुगुप्सता ॥
द्वादशैते बुद्धिनाश-हेतवो मानसा मला ।

शोक, क्रोध, लोभ, काम, मोह, पर-पीडक विचार, द्वेष, अहकार, सशय, घृणा, परदोषदर्शिता और परनिन्दा ये बुद्धि नाशक मानसिक दोष है।

१०. शरीर और मन इन दोनो को योग्य आराम की आवश्यकता है। इसलिए निम्नलिखित सूचनाएँ ध्यान मे रखनी चाहिए।

१. पर्याप्त निद्रा।

२. जागृत अवस्था मे डेढ या दो घण्टे का आराम। एक साथ इतना समय मिल सके तो ठीक है अन्यथा दो विभाग करके इतने समय तक आराम करना। हम आराम कर सकें ऐसी स्थिति नही है, यह मानने वाले और कहने वाले गलत रास्ते पर है। आराम नई शक्ति को प्राप्त करने का साधन है। खान-पान, व्यायाम और प्राणायाम आदि उतना ही जरूरी है, धाधली का जीवन (अत्यन्त व्यस्तता का जीवन) कीमती जीवन के अनेक वर्षो को कम कर देता है।

३ आराम करने के लिए आराम कुर्सी, सोफा, सतरजी या दूब पर निश्चिन्त गिरना चाहिए।

४ थोडी देर शवासन मे सोना चाहिए।

५. समग्र विचारो और चिन्ताओ को छोडकर मन को हल्का बनाना चाहिये।

६. मन को तनावग्रस्त से तनावग्रस्त रखे उतना काम का बोझ सिर पर कभी नही रखना चाहिए और उसी कारण से उस दिन अस्थिर या अति साहसिक कार्य मे प्रवेश नही करना चाहिए।

७ आराम के समय मे कुछ पढना आवश्यक लगे तो हल्का साहित्य नही पढना चाहिए। उसके लिए अच्छे साप्ताहिक और मासिक पत्र पत्रिकाओ को पसन्द करके रखना चाहिए अथवा कथा, वार्ता और उपदेशात्मक अन्य साहित्य का सग्रह पास मे रखना चाहिये।

११ पन्द्रह दिन मे एक उपवास करने का नियम रखना चाहिये। यह उपवास एकदम निराहार होना चाहिए, अगर वैसे न बन सके तो उसमे अल्प फलाहार लेना चाहिए पर पेट भरकर नही खाना चाहिए। उपवास के समय मे प्रार्थना, भक्ति और स्वाध्याय आदि की तरफ विशेष लक्ष्य रखना जरूरी है।

१२ तप, जप और ध्यान ये मानसिक शुद्धि के लिए उत्तम प्रकार के अनुष्ठान है।

१३ प्राज्ञ पुरुषो का अनुभव ऐसा है कि—

सतताध्ययन वाद परतन्त्रावलोकनम्।
सद्विद्याचार्यसेवा च बुद्धि-मेधा-करो गण ॥

निरन्तर अध्ययन-अभ्यास, शास्त्र चर्चा, अन्य शास्त्रो का अवलोकन सद् विद्या को धारणा और गुरुजनो की सेवा यह बुद्धि तथा मेधा शक्ति को बढाने वाला गुण समूह है।

१४ यह चर्या तुम्हारे मार्ग-दर्शन के रूप मे बतलाई है। इसका अक्षरश पालन न हो तो उसमे से जितना बन सके उतने विषयो पर आचरण करना, पर साथ मे इतना याद रखना कि सत्त्व-शुद्धि के अभाव मे उच्च प्रकार की मानसिक शक्तियाँ उपलब्ध होना अशक्य है।

इनमे से जिन जिन बातो पर अमल करो उनको एक सूची बना लेना और किस किस विषय मे आचरण नही कर पाते हो, उनकी भी एक सूची बना रखना। फिर शान्त चित्त से विचार करना कि उन विषयो मे तुम किस कारण से प्रवेश नही कर पाते

हो, सभव है कि इस विचारणा के बाद शेष रही बातो को भी व्यवहार मे उतारने के लिए तुम तत्पर हो जाओ और इस प्रकार क्रमश. प्रगति कर सको ।

तुम्हारी निरन्तर प्रगति हो । इस शुभकामना के साथ विश्राम करता हूँ ।

मगलाकाक्षी
धी०

पत्र नवम

इन्द्रियों की कार्य म I

प्रिय बन्धु !

मन के रगढग को सुधारना—मन की स्थिति को सस्कारित करना, यह स्मरण शक्ति के विकास का मूल पाया है। इस पाये को अनन्य रूप से मजबूत बनाने के लिये एकाग्रता अनिवार्य है, जिसकी सिद्धि का मुख्य आधार उचित चर्या पर टिका हुआ है। इसलिए तुम्हारा ध्यान सर्व प्रथम एकाग्रता और चर्या की तरफ आकृष्ट करता हूँ।

यह बात तुम निश्चित मानना कि 'नीव बिना की दीवार' यह जैसे एक असगत कल्पना है अथवा 'खेत बिना की खेती' यह जैसे एक निराधार उडान है, वैसे ही साधना बिना की सिद्धि, यह भी एक असगत और निराधार कल्पना है। इसलिए साधना के साथ भली प्रकार सपृक्त रहना और क्रमश. उसमे आगे बढना, यही सक्षिप्त, सरल और हितावह मार्ग है। प्रथम मूल अक्षरो को सीखने पर ही जैसे शब्द, पद, वाक्य, परिच्छेद, प्रकरण और ग्रन्थो को लिखा जा सकता है अथवा ०, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९ इन दश अंको को सीखने पर जैसे गणित के अनेक हिसाब सीखे जा सकते हैं वैसे ही स्मरण शक्ति से सबद्ध कुछेक सिद्धान्त ठीक-ठीक समझ लेने पर और उनका उपयोग करने की आदत डालने पर 'अधिक' और 'अधिक सुन्दर' स्मरण रह सकता है।

इस पत्र मे तुम्हारा ध्यान इन्द्रियो की कार्यक्षमता की तरफ आकृष्ट करना चाहता हूँ क्योकि विषयो को ग्रहण करने मे मुख्य साधन इन्द्रियाँ है। सम्भवत, तुम्हारा प्रश्न होगा कि एकाग्रता से उत्पन्न मन का बल जब विषय को यथार्थ रीति से ग्रहण कर

सकता है, तब उसके साधनो पर विचार करने की क्या अपेक्षा है ? पर प्रिय बन्धु ! यह प्रश्न यथार्थ नही है। 'शक्ति' के साथ साधनो का विचार भी अवश्य करना पडता है। हाथ मे तलवार चलाने की ताकत होने पर भी यदि तलवार ही नकली हो तो उससे क्या इच्छित कार्य सम्पन्न हो सकता है ? धन के द्वारा दूध, घी, अनाज और सब्जी खरीदी जा सकती है। पर वे खरीदी हुई वस्तुएं शुद्ध न हो तो ? इसलिए शक्ति के साथ साधन की योग्यता (शुद्धता) का विचार करना भी आवश्यक है।

अपनी इन्द्रियाँ एक प्रकार से यन्त्रो के तुल्य है। यन्त्रो को यदि साफ न रखा जाए अथवा उनका उपयोग करने के बदले एक तरफ रख दिया जाए तो उन पर जग चढ जाता है और वे निकम्मे बन जाते है, उसी प्रकार इन्द्रियाँ रूपी यन्त्र भी यदि स्वच्छ न हो तथा उपयोग मे नही लिए जाते हो तो बेकार या बेकार के समान बन जाते है। जो वस्तु जितना काम देने के योग्य हो, वह उससे अनेक गुणा कम काम दे तो उसे 'निकम्मी' के बराबर ही काम न देने वाली समझनी चाहिए।

आँख मे कोई फुन्सी हो गई हो, या कोई रजकण गिर गया हो अथवा कोई दूसरी प्रकार की क्षति आ गई हो तो उसके द्वारा तुम यथार्थ निरीक्षण की कैसे आशा रख सकते हो ? इसीलिए निरीक्षण की सही आदत स्मरण-शक्ति को वेग प्रदान करने के लिए अत्यावश्यक है।

कान मे मैल भरा हो, सूजन आया हुआ हो या कोई दूसरी प्रकार की गडबड हो तो तुम उसके द्वारा सही श्रवण की आशा नही कर सकते, जब कि वह श्रवण क्रिया, भाषा, सगीत और स्वरो को याद रखने का प्रमुख साधन है।

अगर, तगर, चन्दन, कपूर, जायफल, इलायची, प्याज, लशुन और हीग आदि ।

जिह्वा पर मैल की परतें जम गई हो अथवा जीभ फट गई हो तो उसके पास से स्वाद की क्या परीक्षा कराई जा सकती है ? जबकि स्वाद मानसिक सन्तोष का परम कारण है ।

स्पर्शनेन्द्रिय पर मल के स्तर चढ गये हों या उसके छिद्र भर गये हों तो वह स्पर्श को परीक्षा किस प्रकार करे ? जब कि स्पर्श ज्ञान की आवश्यकता जीवन मे कदम-कदम पर पडती है । इसलिए इन्द्रियों को बराबर स्वच्छ रख कर उनमें उपेक्षा या रोगादिक के द्वारा कोई बिगाड न हो जाये इसका पूरा ध्यान रखना चाहिये । पर साधक का अति प्राथमिक कर्त्तव्य है ।

अब उसके उपयोग पर विचार करे । स्पर्शनेन्द्रिय मे स्पर्श ग्रहण करने को जो तरतमता का गुण है, उसका बहुत छोटा अंश ही अपने काम मे लेते हैं इसलिए कि अपने वह वस्तु शीतल है या उष्ण है, सुहाली है या खरदरी अथवा चिकनी है या रुक्ष है, इतना ही जानकर उसे छोड देते है । पर वह वस्तु कितनी शीतल या कितनी उष्ण है, किसके समान शीतल-उष्ण है, कितनी स्निग्ध अथवा रुक्ष है ? उसकी यथार्थ तुलना नही करते, परिणाम स्वरूप अपने स्पर्श के द्वारा जैसी होनी चाहिए, वैसी परीक्षा नही कर पाते । अन्धे मनुष्य स्पर्शनेन्द्रिय का विशेष उपयोग करते है । इस कारण उनकी यह इन्द्रिय कितना ग्रहण कर सकता है, इसकी कल्पना करो । वे बहुत सी वस्तुओ को तो चखकर ही पहचान लेते है तथा उभरे हुए अक्षरो पर हाथ फेरकर उनमे लिखी हुई पुस्तको को बाँच लेते है ।

मेरा स्वय का वैयक्तिक अनुभव ऐसा है कि मनुष्य यदि स्पर्शनेन्द्रिय को बराबर बारीकी से काम मे ले तो चाहे जैसी वस्तु को स्पर्श के द्वारा पहचाना जा सकता है । इतना ही नही पर दो समान दीखने वाली वस्तुओ को भी उनके स्पर्श की तरतमता से पृथक्-पृथक् पहचान कर बता देता है । सन् १६४६ मे बडौदा,

डभोई और भावनगर आदि स्थानों मे अवधान प्रयोग करते समय मैंने इस प्रकार के स्पर्श-प्रयोग प्रत्यक्ष करके बताये थे ।

रसनेन्द्रिय मे रस की तरतमता को परखने का जो गुण है, उसको भी अपने बहुत कम काम मे लेते हैं। उसके द्वारा एक वस्तु को चखकर उसमे क्या-क्या वस्तुएँ कितने प्रमाण मे है—यह नही बता सकते। रसनेन्द्रिय का बराबर उपयोग करने वाले कितनेक वैद्य चूर्ण का स्वाद लेकर उसमे मिली बहुत सी वस्तुओ को बराबर बता सकते हैं।

कोई वस्तु मात्र मीठी है, खट्टी है, खारी है, कड़वी है या तीखी है, इतना जानना ही बस नही, पर उसमे दूसरे रस भी कौन से २ रहे हुए हैं और कितने प्रमाण मे है, उसकी तुलना बार-२ करनी चाहिए, जिससे रस की परीक्षा बराबर की जा सके।

नासिका के विषय मे भी वैसा ही समझना चाहिए। अपने मे से कितने मनुष्य ऐसे हैं जो मात्र गध के द्वारा ही वस्तुओ को पूरी तरह परख सकते हैं? जो लोग नासिका-शक्ति का पूरा पूरा उपयोग करते हैं, वे दूर दूर की वस्तुओ को मात्र गध से परख लेते हैं। कस्टम अधिकारी लोग इसका एक प्रकार का नमूना होते हैं। वे गध के आधार पर ही सैकडो मनुष्यो मे से किसके पास चरस या गाजा होना चाहिए—खोज निकाल लेते हैं।

अनेक वस्तुओ की गध की तुलना करते रहने पर नासिका बराबर सजग बन जाती है।

यदि चक्षुओ का उपयोग सजगता से होता है तो वे दूर तक देख सकती है, बहुत अच्छी तरह से देख सकती हैं और बहुत जल्दी भी देख सकती है। खलासी (जहाज का नौकर) तथा पशुओ को पालकर आजीविका कमाने वाले लोगो की दृष्टि बहुत दूर तक पहुचती है, क्योकि वे इस प्रकार के कार्य का अभ्यास करने वाले होते है। दूर के क्षितिज मे होने वाला छोटा सा फेर-फार भी उन्हे तूफान के आगमन की सूचना दे देता है।

कवि, चित्रकार और शिल्पकार वस्तु को बहुत सूक्ष्मता से देख सकते हैं, क्योकि उन्हे इस प्रकार से निरीक्षण करने की दृष्टि उपलब्ध होती है और शीघ्रता तो अभ्यास का ही परिणाम है।

एक वस्तु को बारीकी से देखना, उसे अवलोकन या निरीक्षण कहा जाता है। ऐसा निरीक्षण वस्तु को याद रखने के लिए खूब सहायक साबित होता है। एक वृक्ष को तुम सामान्य रीति से देखो और निरीक्षण पूर्वक देखो उसमे कितना अधिक अन्तर होता है? प्रथम मे तुम्हे उसका सामान्य अथवा अस्पष्ट ज्ञान होता है जो कि स्वल्प समय में ही विस्मृत होना सम्भव है, जबकि दूसरे प्रकार में तुम्हें उसका विशेष अथवा विशद ज्ञान होता है, जिसे दीर्घ समय तक भूलने की सम्भावना नही। परन्तु हमे इस तरह की आदत डालने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। निम्नांकित कुछेक प्रश्नो का उत्तर देने का प्रयास करो, जिससे सही परिस्थिति समझी जा सके—

१ कबूतर के सिर से लेकर पैरों तक का कौनसा रंग किस क्रम से आया है?

२. भैंस और पाडे के सिर मे क्या फर्क होता है?

३ तुम्हारे दोनो कान कितने लम्बे हैं? वे दोनो एक समान है या लम्बे छोटे? यदि लम्बे छोटे है तो कौनसा लम्बा है और कौनसा छोटा है?

४. तुम जिस कुर्सी का उपयोग करते हो, उसके पाये किस प्रकार के हैं? कितने लम्बे हैं?

५ तुम्हारे कमरे मे कुल कितने चित्र लटकाए हुए हैं?

६ तुमने जिसे हाथ पर बाध रखा है, उस कलाई घड़ी मे किस प्रकार के अ क लगाये गए हैं?

७ चालू फुलस्केप कागज कितना लम्बा होता है?

८ तोरई (तुरई) के कितनी धाराएँ होती हैं? उनमे कोई क्रम या नियम भी होता है?

९ पीपल वृक्ष का पान लम्बा होता है या उसका अग्र भाग?

वस्तु को बारीकी से देखने की आदत डालने के लिए निम्नोक्त मुद्दे ध्यान मे रखने चाहिए—

१. वस्तु का सामान्य दर्शन
२. ऊँचाई
३. लम्बाई
४. चौडाई
५. मुख्य अ ग
६ हर एक अंग का घाट
७ सामान्य र ग
८. अंगोपागों का रंग
९. किसकी बनी हुई है ?
१० कहाँ रही हुई है ?
११. किस वस्तु के साथ मेल खाती है ?
१२ खास निशानी क्या है ?

कानो का यदि बराबर उपयोग हुआ हो तो वे अति दूर की आवाज सुन सकते है। बहुत स्पष्ट सुन सकते हैं, उनकी तरतमता को भी याद रख सकते है। एक अच्छा सगीतकार श्रवण मात्र से स्वर की कितनी श्रेणियो को याद कर लेता है। पदचाप की पहचान करने वाले लोग पैरो की आहट मात्र सुनकर बता देते हैं कि यह किसके कदमो की आवाज है। इसी प्रकार पानी की खोज करने वाले जमीन पर कान रख कर उसके भीतर से २५ फुट, ५० फुट या उससे भी अधिक गहरे रहे पानी के स्रोत को खोज निकालते है।

यदि एकाग्रता के आधार पर आवाज को पृथक् पृथक् पहचाना जा सकता है तो हम तीसरी मजिल के नीचे हुई बात को बराबर सुन सकते है। श्रवण-शक्ति की सीमा होने पर भी अपन उसकी जितनी शक्ति मानते हैं, उसकी अपेक्षा अनेक गुणा अधिक है, यह बात कभी नही भूलनी चाहिए।

विविध स्वरो की बार-बार तुलना करने पर तथा एकाग्रता से श्रवण करने की आदत डालने से श्रवण-शक्ति को बहुत तेजस्वी बनाया जा सकता है।

विषय के यथार्थ-बोध के लिए पाँचों इन्द्रियो को सजग रखने की अत्यन्त अपेक्षा है। इतना होने पर भी आँख और कान से अधिक विषय गृहीत होते है, इसलिए इन दोनो को ज्यादा सुरक्षित सजग रखने की अपेक्षा है। इन दो इन्द्रियो मे कुछेक लोग चक्षु से विषय को खूब अच्छी तरह से ग्रहण कर सकते हैं और कितनेक कान से भली प्रकार ग्रहण कर सकते हैं। इसलिए जिसको जो इन्द्रिय अधिक अनुकूल हो उसे उस इन्द्रिय की अधिक सुरक्षा करनी चाहिए।

विषय चक्षु से बहुत अच्छी तरह ग्रहण किया जा सकता है या श्रवण से ? यह जानने के लिए निम्नोक्त प्रयोग करके जाँच लो।

दर्शन-परीक्षा

इसके लिए तीन पत्त तैयार करो। उनमे क्रमशः पक्तियों मे मोटे अक्षरो मे शब्द लिखो वे क्रमश बताओ। उनमे से कोई शब्द बोलो नही। एक पत्त का निरीक्षण डेढ मिनट तक किया जा सकता है ? फिर उनमे से याद रहे शब्दो को कागज पर लिखो।

इस प्रकार तीन पत्त लिखने चाहिये—

प्रथम पत्र—टेबल, गाय, हडा, टोपी, दर्जी, स्वर्ण, अमरूद, जलेबी।

द्वितीय पत्र— अलमारी, भैंस, चमचा, नारगी, लोहा, हजाम, बरफी, बाघ।

तृतीय पत्र—कलम, नदी, सुथार, वणिक, चर्खा, घट, चाकू, झाडू।

श्रवण परीक्षा

इसमे भी ऊपर की तरह तीन पत्त तैयार करने चाहिए और हर एक को धीरे-धीरे वाचन करते हुए क्रमश शब्द सुनने चाहिए। प्रत्येक पत्र के लिए डेढ मिनट का समय लेना चाहिए। एक पत्त के शब्द सुनने के बाद उन्हे एक अलग पत्र पर लिख लेना चाहिये।

प्रथम पत्र—मोर, महाजन, सिंह, शीशी, प्याला, डोरी, घडियाल, गीदड़ ।

द्वितीय पत्र—आम, खाड, कुर्ता, पिन, कपास, शशक, कौवा, सुपारी ।

तृतीय पत्र—लवग, लापसी, हनुमान, बादल, दरिया, लौकी, कद्दू, भेड, कातर ।

अब जितने शब्द बराबर क्रमश लिखे गये है, उन हरेक को दो अक (नम्बर) दो, गलत शब्द को और गलत क्रम से लिखे गये शब्द को अक मत दो। इस रीति से दर्शन-परीक्षा के ४८ अंक और श्रवण परीक्षा के ४८ अक होगे।

इनमे से जिनमे अधिक अक आये हैं उसी इन्द्रिय द्वारा विषय अच्छी तरह ग्रहण होता है। यह समझ लेना चाहिए।

चर्या का सजगता से अनुसरण करते रहना तथा एकाग्रता का अभ्यास चालू रखना।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

साधना और सिद्धि, शक्ति और साधन, इन्द्रियाँ यन्त्रो के समान हैं, उनकी स्वच्छता उनका उपयोग तुलना के द्वारा अनेक तारतम्य के ज्ञान की साधना, दर्शन परीक्षा व श्रवण परीक्षा।

□

पत्र दशम

इन्द्रिय-निग्रह

प्रिय बन्धु !

तुम्हारे विचार मेरे तक पहुँचे हैं। उनमे तुमने जो जिज्ञासाएँ की हैं, उनसे परिचित हुआ हूँ। उनके सम्बन्ध मे मेरे उत्तर निम्नोक्त है—

प्रश्न—एक तरफ अपने महर्षियो ने इन्द्रियो को जीतने के लिए कहा है और आप इन्द्रियो को जागृत रखने की बात कहते है, तो ये दोनो बाते एक ही है या दो।

उत्तर—हमारे महर्षियो ने इन्द्रियो को जीतने के लिए कहा है, वह बिल्कुल यथार्थ है। इसका तात्पर्य यह है कि इन्द्रियो के विषयो मे मुग्ध नही बनना दूसरे शब्दो मे कहे तो कोमल स्पर्श की आसक्ति, मधुर स्वाद की आसक्ति, सुगन्ध की आसक्ति, सुन्दर रूप की आसक्ति और मधुर स्वर की आसक्ति को जीत लेना-यही इन्द्रियो पर विजय है। विषयो की लुब्धता कितने भयकर परिणाम लाती है, उसके लिये हाथी मत्स्य, भ्रमर, पतंग और सर्प के उदाहरण दिये गये हैं—वे इस प्रकार है—

जगली लोग हाथी को पकडने के लिए कृत्रिम हथिनो को एक जगह खडी करते हैं और वहाँ तक पहुँचने के मार्ग मे एक बहुत बडा गड्ढा खोदकर उसे बाँस और पत्तो से ढक देते हैं। हाथी स्पर्श-सुख का अत्यन्त लोलुप बनकर हथिनी को देखते ही उसकी तरफ दौडता है। इस दौड़ मे उसे दूसरी कोई बात का भान नही रहता। परिणाम स्वरूप वह गड्ढे मे गिर जाता है और बन्धन मे पडा जीवन भर परवशता भोगता है।

मछली को पकडने वाले मजबूत डोरे के एक किनारे लोहे का काँटा बाँध कर उसमे एक मास का टुकडा फँसाकर उसे पानी मे डाल देते है, उसे देखते ही स्वाद लोभी मछलियाँ एकदम उस पर झपटती है और उसे खाने का प्रयत्न करती है। तब काटा उनके गालो मे चुभ जाता है, जो अन्त मे मौत का कारण बनता है।

भ्रमर को सुवास की बडी आसक्ति होती है। वह कमल की सुगन्ध मे मस्त बन जाता है। इस मस्ती मे उसे भान भी नही रहता कि अभी सन्ध्या हो जायेगी तथा कमल की पखुडियाँ बन्द हो जायेगी और मैं भी उसमे बन्द हो जाऊँगा। वास्तव मे सन्ध्या होते ही वह उसमे बन्द हो जाता है। अब कमल को छेद कर बाहर निकलने की अपेक्षा वह यो विचार करने लगा कि—

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभात,
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पकजश्री।

रात्रि तो अभी बीत जाएगी और सुन्दर सुखद प्रभात उगेगा। उस समय तेज से चमकते सूर्य का उदय होगा। तब कमल पूरा का पूरा खिल उठेगा। बस! उसी समय मै उडकर बाहर निकल जाऊँगा। इन विचारो मे वह समस्त रात्रि पूरी कर देता है। फिर भी उसको इस विचारमाला का अन्त नही आता।

इत्थ विचारयति कोशगते द्विरेफे,
हा हन्त हन्त नलिनी गज उज्जहार।

परन्तु वह जब इन विचारो मे मग्न होता है तभी हाथी वहाँ पानी पीने के लिए पहुँच जाता है। वह थोडी देर इधर-उधर मस्ती करता है और फिर सुन्दर सुहावने कमलो को सूड से चुन चुन कर मुँह मे रखने लगता है। उस समय बेचारा भ्रमर भी हाथी के पेट मे पहुँच कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है—यह है विषय लुब्धता का परिणाम।

पतग (फतिगा) रूप का दीवाना है। रूप को देखा कि वह विना कोई विचार किए सीधा उसे भोगने के लिए दौडता है। दीपक की ज्योति उसके मन मे रूप की पराकाष्ठा है। इसी लिए वेग से उड़कर उसमे झपा लेता है और जलकर राख वन जाता है ;परन्तु महान् आश्चर्य तो यह है कि एक पतग को दीपक की ज्योति मे जलता देखकर भी दूसरा पतग आकर उसी प्रकार झपा लेता है और इस प्रकार ये रूप दीवाने जोहर-व्रत स्वीकार करते है।

□

पत्र ग्यारहवाँ

महारानी कल्पना कुमारी

प्रिय बन्धु !

स्मरण-शक्ति के विकास मे कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान होता है, यह विचार तुम्हे प्रथम दृष्टि मे कदाचित् विचित्र लगेगा, परन्तु जब तुम इसकी वास्तविक शक्ति से परिचित होओ तब तुम्हे महसूस होगा कि—मैं आज तक इस महान् शक्ति के यथार्थ उपयोग से वास्तव मे वचित ही रह गया।

कल्पना क्या काम करती है, इसका विवेचन मैं कल्पना के माध्यम से ही प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसे जानने के बाद तुम अपने अभिप्राय को निर्णय पर पहुँचाना।

मनोमन्दिर मे उद्भूत एक भव्य उत्सव की यह कहानी है—

मनोमन्दिर के 'अन्त करण' नामक विशाल खण्ड मे कितने ही सुन्दर आसन जमे हुए थे। उन प्रत्येक पर आगन्तुक अतिथियो के नामाकित पत्र रखे हुए थे। समय होते ही सब आकर बैठने लगे उनमे सर्वप्रथम क्षुधा देवी आई, पीछे तृषा देवी, निद्रा देवी, लज्जा देवी और तृष्णा देवी पधारी। उन सबने अपने अपने आसन ग्रहण किए।

दूसरी तरफ अनगराय, मोहराय, क्रोधराय, भय भूपाल, हर्षदेव, शोकदेव, मानदेव और सशयदेव आदि का आगमन हुआ। वे भी अपने-अपने आसनो पर विराजमान हुए। उसके बाद श्रीमती स्मृतिदेवी पधारी, उनका ठाठबाठ अलग ही था। उनके साथ जिज्ञासादेवी, ईहादेवी, तुलनादेवी, बुद्धिरानी और वाणीदेवी भी आयी। उन सबने अपने-अपने आसन सभाले।

इस तरफ रायबहादुर उत्साह भी पूरे ठाटबाट से अपने मित्र प्रयास, साहस, उद्यम, धैर्य और पराक्रम के साथ आये। इन्होने भी अपने योग्य आसन ग्रहण कर लिए।

अब सभागृह ठसाठस भर गया था इसलिए सब आगन्तुक उत्सव प्रारम्भ होने की प्रतीक्षा करने लगे। इसी समय वाणीदेवी ने खडे होकर कहा—आप सबका सत्कार करते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। आज का दिन धन्य है। आज की घडी धन्य है कि हमारे यहा इतने महान मेहमान पधारे हैं, परन्तु मुख्य अतिथि अब तक पधारे नही है, इसलिए उनकी प्रतीक्षा कर रहे है। उनके आते ही उत्सव का कार्य प्रारम्भ हो जाएगा।

ये शब्द सुनते ही सब मेहमान गहरे विचार मे पड गए और अन्दर ही अन्दर खोजने लगे कि कौन बाकी रहा है? जब उन्होने जाना कि कोई खास व्यक्ति बाकी नही रहा है, तब सबके समक्ष खडे होकर सशयदेव ने कहा—माननीय मेहमानो! मैं आप सबके समक्ष प्रस्ताव रखता हूँ कि आज के कार्य का प्रारम्भ होना चाहिए क्योकि मुझे लगता है अब कोई खास आवश्यक अतिथि बाकी नही रहा है।

इस अकल्पित प्रस्ताव को सुनकर बुद्धि देवी खडी हुई। उन्होने कहा—सद्गृहस्थो और सन्नारियो! इस मन्दिर की सर्व शोभा जिसकी आभारी है, वह महारानी कल्पना कुमारी अभी तक नही आयी है। प्रतिपल उनकी ही प्रतीक्षा है। मैं सोचती हूँ अब थोडी ही देर मे उनका आगमन होगा।

क्या इस मन्दिर की समग्र सजावट महारानी कल्पना कुमारी की आभारी है? महाराज उत्साह के समूह मे गडगडाहट हुई। प्रयास, साहस, उद्यम, धैर्य और पराक्रम आदि को लगा कि अपमान हो रहा है। इनकी भावनाओ का पतन देखकर महाराज उत्साह ने खडे होकर कहा—सज्जनो! एव सन्नारियो! बुद्धिदेवी का कथन सुनकर मुझे आश्चर्य होता है। इस भव्य भवन के निर्माण मे मेरे मित्र प्रयास, साहस, उद्यम, धैर्य, पराक्रम आदि ने महान् योगदान किया है। ये मन्दिर की मजबूत दीवारे विशाल द्वार और

उसकी कलात्मकता उनकी शिल्प-शक्ति की ही आभारी है। जबकि महारानी कल्पना कुमारी ने तो रग सजावट के सिवाय दूसरा कुछ भी कार्य नही किया। इसलिए इस मन्दिर की शोभा का समस्त श्रेय उन्हे देना बिल्कुल भी उचित नही। इसमे तो इन बुजुर्ग व्यक्तियो का एक प्रकार से अपमान ही है।

महाराज उत्साह का यह वक्तव्य चचलता देवी के आर-पार निकल गया। वे अपनी भावना को प्रकट करने के लिए खडी होना ही चाहती थी कि उसके पास मे बैठी एकाग्रता ने उसको समझा कर बिठा दिया।

श्रीमती स्मृति देवी वातावरण को लख गयी इसलिए खडी होकर मुस्कान बिखेरती हुई कहने लगी—माननीय सद्गृहस्थो और सन्नारियो! आप सब हमारे महान अतिथि है। इस मन्दिर की सजावट मे आप लोगो का किसी न किसी प्रकार से हिस्सा है, इसे मैं स्वीकार करती हूँ। पर महारानी कल्पना ने जो कार्य किया है, वह हम सबमे कोई भी न कर सका। हम सब के हाजिर होते हुए भी यह मन्दिर सुनसान था। उसमे कचरे के ढेर इकट्ठे हो गये थे। प्रकाश के झरोखे बन्द हो गये थे और सघन तिमिर व्याप्त हो गया था।

मकान की दीवारें मजबूर हो, उसका द्वार सुदृढ हो, उसकी कमाने सुन्दर इतने मात्र से कोई उत्सव की योजना नही हो सकती।

कुछ दिन पूर्व महारानी कल्पना कुमारी यहाँ आई थी। वे मनोमन्दिर की दशा देखकर व्यग्र हो उठी। उन्होने मुझसे कहाकि—आप सब के हाजिर होते हुए मनोमन्दिर की ऐसी हालत कैसे?

मैंने कहा—महारानी सब अपने-अपने धन्धे मे लगे हुए हैं। क्षुधादेवी, तृष्णादेवी तथा लज्जादेवी को अपने काम के सिवाय दूसरा कोई शौक ही नही है और शौक हो तो भी कोई कार्य मे कुशलता नही है। तृष्णादेवी को जब देखो तब ही कुछ न कुछ नया प्राप्त करने की उलझन मे पडी रहती है। इसलिए उसे दूसरा कुछ करने की फुर्सत नही है। एकाग्रता जहाँ बैठी थी, वहाँ से उठती

नही और चचलता के कदम कही ठहरते ही नही। वाणी देवी अपने काम मे चतुर है पर उसे सबके साथ बात करना ही ज्यादा अच्छा लगता है।

इन सब मे बुद्धि देवी बडी अनुभवी एव निष्णात है, पर वे वृद्ध हो गई है। बुढापे के कारण उनकी तबियत स्वस्थ नही रहती।

इधर महाशय अनगराय और मोहराय शरीर से दर्शनीय है पर अन्धे है, क्रोधराय की भी यही दशा है। भय भूपाल को कोई भी बात कही जाए तो वह दूर भागता है और हर्षदेव क्रीडा-स्थल से कभी बाहर नही निकलते, जब देखो खेल ही खेल। इधर शोकदेव को हर्षदेव की क्रीडा बिल्कुल भी पसन्द नही, इसलिए वह उसमे दखल देता ही रहता है और इस कारण बार-बार दोनो मे द्वन्द्व युद्ध होता रहता है आखिर मैं बीच मे पडकर उन्हे शान्त करती हूँ तब ही वे विश्राम लेते है।

यह मानदेव प्रचण्ड है, पर इसके पीठ का मेरुदण्ड झुकता ही नही और सशयदेव के स्वभाव को तो आप जानते ही है कि कोई भी नई बात आई कि व्यग्र हुए। जब उस नई बात को तोड डालते हैं तब ही सन्तोष का अनुभव करते है।

महाराज उत्साह स्वय बहुत सुन्दर है, पर उनका ससर्ग बहुत खराब हैं। उनका साथी प्रमाद उन्हे बार-बार उत्पथ मे ढकेल देता है और उनके मित्र प्रयास, साहस, उद्यम, धैर्य एव पराक्रम तो उनकी ही चाल मे चलने वाले है। इनमे अपनी स्वतन्त्र कार्य शक्ति नही है। अगर महाराज उत्साह चले तो प्रयास भी आगे बढे, यदि प्रयास बढे तो साहस भी चलें और साहस चले तो उद्यम, धैर्य तथा पराक्रम भी बढ चले, परन्तु ये सब मनमौजी सदृश स्वभाव वाले है। जब तक महाराज उत्साह के वर्तन-व्यवहार (रीतभात) मे मौलिक सुधार नही होगा तब तक उनके भरोसे नही रहा जा सकता। इसलिए ही कुछ समय से आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। अब आप पहुँच गई है। इस मन्दिर को उचित प्रकार से सज्जित कर उत्सव के योग बनाएँगी ऐसा मेरा दृढ विश्वास है।

सज्जनो और सन्नारियो ! इस घटना के बाद उन्होने इस मन्दिर को अलकृत करने का कार्य प्रारम्भ किया कि आज यह इतना सुशोभित और आह्लादकारी बन सका है। यद्यपि इसमे अनेक दूसरो का भी योगदान है, पर मुख्य कार्य तो उन्होने ही किया है, इसलिए सम्मान की प्रथम अधिकारिणी तो वे ही है। बहुत बार ऐसा हो जाता है कि हम अपने घर के मनुष्यो या चिरपरिचित व्यक्तियो की क्षमता को नही पहचानते, पर जब वे ही व्यक्ति दूर जाकर अपनी अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन कर ससार मे प्रशसा पाते है, तब ही हम उनकी कदर करना सीखते हैं, यह एक बहुत ही खेद-जनक बात है। इसलिए मैं प्रस्ताव रखती हूँ कि जब महारानी कल्पना कुमारी यहाँ पधारें तब बिना कोई दूसरी चर्चा किये उनका उत्साहपूर्वक सुन्दर स्वागत करना है।

श्रीमती स्मृति देवी का यह वक्तव्य सुनकर सब शान्त हो गये, पर सशय देव से नही रहा गया। उसने खडे होकर कहा कि—श्रीमती स्मृतिदेवी ने हमे जो कुछ कहा है, उसे हमने शान्तिपूर्वक सुना है और उससे हमारे मन मे महारानी कल्पना कुमारी के लिए बहुत सम्मान के भाव पैदा हुआ है, पर उन्होने इस महल को अलकृत-सज्जित करने के सिवाय अन्य कार्य भी किये है। यदि उनके पराक्रम का निदर्शन प्रस्तुत किया जाए तो मैं मानता हूँ कि यहाँ विराजित सब सज्जनो और सन्नारियो को आनन्द होगा।

यह सुनकर श्रीमती स्मृतिदेवी ने कहा—यह बात मेरी अपेक्षा बुद्धिदेवी ही तुम्हे अच्छी तरह से समझा सकेगी। मैं उन्हे विनती करती हूँ कि वे इस विषय पर उचित प्रकाश डालें।

यह श्रवण कर बुद्धिदेवी खड़ी हुई और आकर्षक अभिनय करती हुई बोली—महान् अतिथियो ! महारानी कल्पना कुमारी यथार्थ मे अद्भुत प्रभावशाली हैं। यदि उनका समग्र पराक्रम यहाँ प्रस्तुत किया जाए तो उत्सव उत्सव के ठिकाने रह जाए, इसलिए सक्षेप मे ही मे अपने विचार रख रही हू।

"वाल्मीकि को सामान्य मनुष्यो मे से महाकवि बनाने वाली यह महारानी ही है। महर्षि व्यास, कवि कालिदास, कवि भवभूति,

कवि माघ और श्रीसिद्धसेन दिवाकर इनके प्रभाव से ही चिरजीव बने है। मनु, पाराशर, अत्रि, भारद्वाज, वसिष्ठ, विश्वामित्र और अगस्त्य आदि अनेक दूसरे ऋषि, महर्षियो द्वारा प्राप्त की हुई दिव्यता इन्ही के सहवास का फल है। चरक और सुश्रुत, वाग्भट धन्वतरी, नागार्जुन और पादलिप्तसूरि आदि रसायनशास्त्री तथा महावीराचार्य और भास्कराचार्य, आर्यभट्ट तथा वराहमिहिर, महेन्द्रसूरि आदि गणित-ज्योतिष शास्त्रियो ने अपनी कार्य सिद्धि के लिए उनका ही आश्रय लिया है। महाराज अशोक, चन्द्रगुप्त, हर्ष, और अकबर, किस कारण दूसरो की अपेक्षा अधिक चमके और वर्तमान काल पर दृष्टिपात करे तो श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर को किसने विश्वविख्यात बनाया ? महात्मा गाधी को किसने सत्याग्रह का सिद्धान्त दिया ? जगदीशचन्द्र वसु, प्रफुल्लचन्द्र राय और रामन् आदि को किसने वैज्ञानिको की प्रथम पक्ति मे बिठाया ?

जरा दूर दृष्टि निक्षेप करें हो वहाँ भी इन महारानी का अजब प्रभाव फैला हुआ है। अरिस्टोटल और प्लेटो, काण्ट और ह्यूम, शापेनहावर और नित्शे, किसके आधार पर आज तक प्रख्यात है ? शेक्सपीयर और शैली, ब्राउनिंग व वर्डस्वर्थ, इमर्सन और इगरसोल तथा एच जी. वेल्स और बर्नाडशा ने किसके आधार पर लाखो मनुष्यो के हृदय मे स्थान पाया ? सीजर, नेपोलियन, कैसर और लेनिन को ससार आज क्यो याद करता है ? गेलीलियो आइजक न्यूटन वाटस, एडिसन, मैडम क्यूरी, आइस्टीन आदि को किसने दिव्य चक्षु प्रदान किये ? और जगत के धनकुबेर फोर्ड, कारनेगी, राकफेलर, इस्टमैनकोडक आदि को भी इस महारानी ने ही धन के ढेर पर बिठाया है। इसलिए महारानी कल्पना कुमारी का उचित सम्मान करना अपना कर्त्तव्य है। मैं स्वय उन्हे खूब सम्मान देती हू और उन्ही के सहयोग से अपनी गाडी चलाती हू।

महारानी कल्पना कुमारी की इतनी प्रशस्ति सुनकर ईर्ष्या-देवी से रहा नही गया वे एकदम उबल पड़ी—"और हमने तो कुछ किया ही नही। यही न ? अरे महरबानो। मनुष्य कितना ही प्रमादी और कितना ही अबुध (नासमझ) हो पर मैं जाकर ऐसा

जादू करती हूँ कि उसकी समस्त शक्तियाँ जाग उठती है और वह इस तरह कार्य सलग्न हो जाता है कि पूछो मत ।"

इस समय हास्यदेव अपनी लाक्षणिक छटा से बोल उठे—"और इसी से विचारे जल जल कर खाक हो जाते है, और अन्त मे मान तथा माया दोनो ही खो देते है । हा ! हा !! हा !!!"

समय पर महारानी कल्पना कुमारी का भव्य प्रवेश हुआ और समग्र मन्दिर उनके तेज से जगमगा उठा कहने की आवश्यकता नही कि उनके आगमन के साथ ही उत्सव का मगल कार्य प्रारम्भ हुआ । जो प्रतिक्षण वृद्धिगत होता हुआ महोत्सव के रूप मे परिवर्तित हो गया । मनोमन्दिर मे आलोकित इस उत्सव की कहानी यही पूर्ण होती है, उसके साथ ही मेरा पत्र भी पूर्ण हो रहा है । मै आशा करता हूँ कि तुम इस पत्र के परमार्थ को अवश्य पा सकोगे ।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

मन की सर्व शक्तियो मे कल्पना का अद्वितीय स्थान ! उसके बिना नया प्रकाश उदीप्त नही होता ।

□

पत्र बारहवाँ

कल्पना का स्वरूप

प्रिय बन्धु,

कल्पना कितनी मनोरजक होती है, उसका कुछ नमूना तुम पिछले पत्र मे पा चुके हो । अब इस पत्र मे उसके स्वरूप के विषय मे आवश्यक जानकारी दे रहा हूँ ।

एक वस्तु इन्द्रिय प्रत्यक्ष न होने पर उसका जो एक आभास होता है, उसे कल्पना कहते है । उदाहरण के तौर पर हमारी दृष्टि के समक्ष हाथी न होने पर भी मन मे हाथी का चित्र उभरे तो वह हाथी की कल्पना है । इसी प्रकार आकाश मे एक भी बादल न होने पर भी मन मे घनघोर घटा का और प्रचण्ड मेघ गर्जना का विचार उठे तो वह बादल और मेघ गर्जना की कल्पना कहलाएगी । इसी तरह एक वस्तु साक्षात् पास मे न होते हुए भी पास मे है, न चखते हुये भी चाख रहे है, न सूँघते हुए भी सूँघ रहे है । जिस विषय का विचार उठता है, वह स्पर्श, रस, गन्ध की कल्पना कहलाती है । इस प्रकार की कल्पना करने की शक्ति कम-अधिक मात्रा मे प्रत्येक मनुष्य मे होती है ।

अपने मन मे जो कल्पना उठती है, वह पूर्वकाल मे अनुभूत विषयो के आधार पर ही उठती है । इसीलिए जिसका अनुभव नही हुआ है, उसकी कल्पना भी नही उठ सकती । उदाहरण के तौर पर जो जन्माध होता है, वह रग या प्रकाश की कल्पना नही कर सकता क्योकि उसको रग या प्रकाश का अनुभव नही होता है अथवा जो जन्म से बधिर होते हैं उन्हे मन्द तीव्र आदि किसी भी प्रकार के स्वर की कल्पना नही उठती, क्योकि उन्होने स्वर श्रेणियो का कभी अनुभव ही नही किया है ।

कल्पना अनुभव के आधार पर ही होती है। पर उसका अर्थ यह नही है कि जो-जो विषय हमने जिस जिस प्रकार से अनुभूत किये है, उन उन विषयो की कल्पना उस प्रकार से ही हो।

उदाहरण के तौर पर हमने पिंजरे मे बन्द सिंह को देखा है फिर भी उसे जगल मे घूमते और छलाग भरते हुए भी कल्पित कर सकते है। मनुष्यो को घूमते-फिरते तथा दौडते देखा है तो उन्हे दरिया तैरते अथवा आकाश मे उडते हुए भी कल्पित किया जा सकता हैं। गाय को घास खाते देखा है तो उसे बोलती हुई या बात करते हुए भी कल्पना मे लाया जा सकता है। इस प्रकार से उठती हुई कल्पना मूल अनुभव से पृथक् दीखते हुए भी वह अनुभव की सीमा से बाहर नही होती। उसमे अनुभवो का ही एक प्रकार का मिश्रण होता है। सिंह को पिंजरे मे बन्द देखने पर भी उसे जगल मे घूमते हुए, छलाग भरते हुए भी कल्पित किया जा सकता है क्योकि सिंह, जगल, घूमना, छलाग भरना—ये वस्तुएँ अपने अनुभव मे आ चुकी है। मनुष्यो को हमने घूमते फिरते देखा है पर दरिये को तैरते हुए या आकाश मे उडते हुए भी कल्पना की जा सकती है क्योकि मनुष्य, दरिया, तैरना, आकाश मे उडना—ये अनुभव मे आ चुके है। उसी प्रकार गाय, बोलना, बात करना यह सब अपने अपने अनुभव मे आ चुका है।

इस तरह इन तीनो प्रसगो मे अनुभव उपस्थित थे, उनका एक प्रकार का मिश्रण हो गया। तुम कहोगे कि यह बात तो ठीक, पर अपने मे से किसी ने कभी राक्षस या ईश्वर नही देखा है, फिर उनकी कल्पना कैसे कर लेते हैं? तो उसका उत्तर भी ऊपर के अनुसार है, जिन तत्त्वो से राक्षस या ईश्वर की कल्पना की जाती है। वे समस्त तत्त्व एक या दूसरे समय मे अनुभूत कर चुके है और यह उन्ही का मिश्रण है। राक्षस की देह पर्वत के समान मोटी है, तो देह तथा पर्वत अपने अनुभव मे आ चुके हैं। राक्षस की आँखें धगधगते लोहे के गोले के समान है, लाल सुर्ख है, तो आँखें, धग-धगता लोहे का लाल गोला अपने अनुभव मे आई हुई वस्तुएँ हैं। उसे एक घण्टा मे पचास हजार मील की गति से चलने वाला मानते हैं, तो

घण्टा, पचास हजार और मील, ये अपने अनुभव मे पृथक-पृथक् रूप से आई हुई वस्तुएँ है। घण्टा का अनुभव हमे अमुक समय मे अमुक प्रकार से हो चुका है, तो पचास हजार का अनुभव दूसरे समय मे दूसरी प्रकार से और मील का अनुभव तीसरे समय मे तीसरी प्रकार से हुआ होता है। तात्पर्य है कि अनुभव के भण्डार मे ये तीनो वस्तुएँ आई हुई है, जिन्हे साथ जोडकर कल्पना अपना रूप धारण करती है।

जो कल्पना वस्तु के मूल स्वरूप से बराबर मिलती है, उसे सत्कल्पना या समान कल्पना कहते हैं। जैसे कि—कल्पना मे हाथी, घोडा, ऊँट, मनुष्य, आम, नीम्बू, गुलाब, केवडा आदि का आना। इससे उल्टा जो कल्पना वस्तु के मूल स्वरूप को एकदम मोटा या एकदम छोटा बताने वाली अथवा विचित्र बताने वाली हो उसे असत् या असमान कल्पना कहते है। जैस कि—पर्वत जैसा हाथी, चूहे जैसा घोडा, आकाश जैसा ऊँट, आठ सौ मञ्जिल का मकान, पन्द्रह आँख वाला मनुष्य, करोड मन का आम, लाख मन का नीम्बू, खेत के समान बडा गुलाब, ताड जैसा केवडा आदि आदि। वन्ध्या पुत्र, रेत का तेल, आकाश के फूल—ये भी एक प्रकार की असत् कल्पनाएँ ही है।

कल्पना का मन की वृत्ति पर अथवा भाव पर अचूक असर होता है। एक मनुष्य भिखारी हो, उसे कहा जाए कि तू एक दिन राजा बन जायेगा। तो वह राज्य पद की कल्पना से ही खुश हो उठेगा। एक मनुष्य को ऐसी कल्पना उठे कि मेरा समस्त धन अमुक दिन लुट जाने वाला है, तो वह तुरन्त दु खी बन जायेगा। इसी प्रकार एक राजा के मन मे यह कल्पना आए कि अमुक मनुष्य मेरे देश पर चढ आयेगा या मेरे धर्म का नाश करेगा तो उसे तत्काल क्रोध आ जाएगा अथवा ऐसी कल्पना आए कि मेरे जैसा कोई शूरवीर नही है, तो उसमे अभिमान की वृत्ति जागृत हो जाएगी। इसी प्रकार पृथक्-पृथक कल्पना से हँसना, रोना, आश्चर्य और उत्तेजना का अनुभव होता है।

जो कल्पना किसी प्रकार का प्रबल भाव उत्पन्न करती है, भावोद्रेक करती है, वह स्मरण शक्ति की खूब मदद करती है। जैसे

कि—अट्टहास, करुण विलाप, अजब शूरता, भयकर नीचता, असाधारण उदारता, अनुपम धैर्य, अति विचित्रता, बेजोड बेवकूफता आदि। लेखक, कवि, पत्रकार, कलाकार, राजद्वारी पुरुष और सन्त ये सभी कल्पना की विशेषता को लक्ष्य मे रखकर ही अपनी-अपनी पद्धति से काम करते है। जिससे वे मानव समाज पर महान् प्रभाव डालते है।

मानस शास्त्रियो ने कल्पना के निम्नोक्त विभाग किये है—

१. उद्बोधक कल्पना—

जो भूतकाल की सज्ञाओ, प्रतीतियो, सस्कारो और अनुभवो को जाग्रत करती है। इसका सम्बन्ध स्पष्ट स्मरण-शक्ति के साथ है।

२. योजनात्मक कल्पना—

जो किसी भी वस्तु के निर्माण की योजना प्रस्तुत करती है। छोटे और बडे नाट्य प्रयोग आदि इसी प्रकार की कल्पना के परिणाम हैं। उसमे मानव जीवन की छवि अ कित करने के लिए वेष, भाषा तथा रीति रिवाज की कल्पना कई प्रकार से की जाती है।

३. सर्जनात्मक कल्पना—

जो भूतकाल के अनुभवो को किसी नव्य प्रकार से प्रस्तुत करती है। जैसे कि—विविध प्रकार के काव्य, चित्र, शिल्प आदि।

४. हेत्वनुसारिणी कल्पना—

जो किसी भी हेतु या ध्येय को पूर्ण करने के लिए एक व्यवस्था के रूप मे प्रस्तुत होती है। जैसे कि—मकानो की रूपरेखा, नक्शे आदि।

५. अहेत्वनुसारिणी कल्पना—

जो किसी भी हेतु या बिना ध्येय मात्र मनोरजन के लिए प्रस्तुत होती है। बालको के खिलौने की कल्पना इसी प्रकार की होती है।

कल्पना का विकास किम प्रकार से हो सकता है ? तथा उसका उपयोग स्मरण-शक्ति के विकास मे किस प्रकार हो सकता है ? इसका विवेचन अब बाद मे करूँगा ।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

कल्पना की व्याख्या, अनुभव ही आधार, सिंह, मनुष्य, गाय का उदाहरण, राक्षस और ईश्वर, सत् और असत् कल्पना, वृत्तियो पर प्रबल प्रभाव, कल्पना के पाँच प्रकार ।

□

पत्र तेरहवाँ

कल्पना का विकास और उपयोग

प्रिय बन्धु !

महान् जल प्रपात से उत्पन्न हुई विद्युत् शक्ति को यत्रो द्वारा पकडने पर जैसे वह अनेक प्रकार के कार्य करती है—वैसे ही कल्पना भी व्यवस्थित होने पर अनेक प्रकार के कार्य कर सकती है।

इसलिए सर्व प्रथम मन से निरीक्षण करने की आदत डालना आवश्यक है। तुम पूछोगे कि देखने का कार्य तो आँख से होता है, मन से कैसे देखा जाए ? तो यहाँ देखने का अर्थ कल्पना के द्वारा चित्र को खडा करना है। इसलिए पहले पहल एक आसन पर स्थिरता से बैठो, आँखें बन्द करो। मन से एकाग्र बनो, और किसी वस्तु की कल्पना करो।

दृश्य पदार्थों की कल्पना सहजता से की जा सकती है जैसे कि—पशु, पक्षी, जलचर, चींटियाँ, वनस्पति, मनुष्य, वस्तुएँ, पानी आदि। इसलिए दृश्य पदार्थो को ही पहला स्थान दो। उनमे भी बहुत परिचित वस्तुओ की कल्पना जल्दी आ सकती है। जैसे कि—

गाय, भैंस, घोडा, गधा, हाथी, ऊँट, (पशु)

कबूतर, कौआ, मोर, चिडिया, तोता, मैना (पक्षी)

मेढक, मछली, मगर (जलचर)

चींटी, मकोडा, बिच्छू, दीमक, (कीट)

आम, इमली, सीग (वृक्ष विशेष)

नीम, बबूल, महुआ (वृक्ष)

बाजरी, ज्वार, गेहूँ, चावल, चना, मूग, मोठ, उडद, (धान्य)

गुलाब, कमल, केवडा, चपा, मोगरा, सूरजमुखी (फूल)

लडका, लडकी, युवक, युवती, वृद्ध, सेठ-सेठानी, राजा-रानी,
नौकर, चपरासी (मनुष्य)

कुर्ता, छत्ता, जूते, अण्डा, थाली, चमचा, कलम (वस्तुएँ)

खेत, मैदान, गड्ढा, टेकरी, पहाड (जमीन)

झरना, नदी, तालाब, सरोवर, दरिया (पानी)

आकाशी पदार्थो मे सूर्य-चन्द्र की कल्पना जल्दी हो सकती है, तथा अंधेरी और चाँदनी रात की कल्पना भी शीघ्र हो सकती है। इसलिए उन्हे प्रमुखता देनी चाहिए।

प्रारम्भ मे ये वस्तुएँ कदाचित् बहुत अस्पष्ट दिखाई देंगी पर अभ्यास से स्पष्टता होती चली जायेगी। ऐसे करते हुए तुम थोडे समय मे ही कल्पना के द्वारा इन वस्तुओ को बराबर देखने लगोगे।

शुरुआत मे कल्पना के द्वारा दृष्ट वस्तुओ का एक कागज पर वर्णन लिखो। उसकी मूल वस्तुओ के साथ तुलना करो। इसलिए कि उसमे रही त्रुटियाँ या कमियाँ सुधरती जाएँ। इस प्रकार के अभ्यास से वस्तुओ को देखने की कला मे भारी परिवर्तन हो जायेगा।

अदृश्य पदार्थो के भाव की कल्पना हम स्वतन्त्र प्रकार से नही कर सकते। जैसे कि—सत्य, दया, सहन-शीलता, विनय, शक्ति सौदर्य, मन, आत्मा आदि, परन्तु इन भावो की कल्पना भाव-वाहको के माध्यम से की जा सकती है। जैसा कि—हरिश्चन्द्र के माध्यम से सत्य, महावीर के माध्यम से दया, आर्य स्त्री की कल्पना से सहनशीलता विद्यार्थी की कल्पना से विनय, भीम की कल्पना के माध्यम से शक्ति, युवती की कल्पना के माध्यम से सौदर्य, मनुष्य की कल्पना से मन, सजीव पदार्थो की कल्पना से आत्मा।

वस्तुओ की तरह क्रियाओ की भी कल्पना करो। जैसे कि—बालक रोता है, लडका कूदता है, एक मनुष्य दौडता है, एक मनुष्य रोकड लिखता है, एक मनुष्य कारखाने मे काम कर रहा है, एक मनुष्य कपडे धो रहा है, एक मनुष्य पूजा करता है, आदि आदि। हरेक प्रकार की क्रिया की कल्पना की जा सकती है। उनमे जिनका परिचय बहुत ज्यादा होता है उनकी कल्पना सरल होती है।

क्रियाओ की तरह ही प्रकृति की घटनाओ की भी कल्पना करो। जैसे कि—प्रात. काल हो रहा है, मध्याह्न तप रहा है, सायकाल हो रहा है, रात्रि पड रही है, आधी रात हो गई है, नदी मे पानी चढ रहा है, सरोवर मे लहरें उठ रही है, सागर का गर्जन चल रहा है, हवा फु फकार रही है आदि-आदि।

किसी असाधारण घटना की कल्पना करने मे भी दक्षता चाहिए। जैसे कि—मोटर, रेल या विमान मे अचानक प्रचड आग, जल-प्रलय, दुष्काल, रोग-सचार आदि-आदि।

कल्पना का विकास अनुभव की विशालता पर निर्भर है। इसलिए अनुभव को बन सके उतना विशाल बनाने की अपेक्षा है। निबन्ध-लेखन, काव्य रचना, निरीक्षण करने की आदत और चित्र-कला, उसमे खूब ही शहायक है।

मै मानता हूँ कि कल्पना के विकास के लिए इतने सुझाव काफी है। अब उसकी व्यावहारिक उपयोगिता बता रहा हूँ—

१ जो व्यक्ति क्रिकेट के खेल मे लगे एकाध सुन्दर फटके का सूक्ष्मता से निरीक्षण करता है और उसे सैकडो बार मन मे देखता है, वह उसे बराबर याद रख सकता है। उससे वह स्वय भी उसी उत्तम रीति से फटका मार सकता है।

२ जो व्यक्ति किसी महान् वक्ता का भाषण बहुत ही रस पूर्वक सुनता है, और उस समय होने वाले तमाम हाव भाव को बडी सूक्ष्मता से देखता है, बार-बार अपनी कल्पना मे उन हावभावो को लाता है। वह उन्ही हावभावो के साथ भाषण कर सकता है।

३ टाइप मे खूब शीघ्रता के इच्छुक व्यक्ति को सबसे पहले की-बोर्ड का मन मे अभ्यास करके, कल्पना के द्वारा वैसा करना चाहिए।

ऐसा करने से स्वल्प समय मे ही टाइप करने मे अपूर्व शीघ्रता लाई जा सकती है।

४ शार्ट हैन्ड मे भी यही रीति उपयोगी है।

५ लिपि-सुधार का इच्छुक किसी सुन्दर लिपि को कल्पना द्वारा बार-बार दर्शन करके अपनी लिपि को सर्वश्रेष्ठ बना सकता है।

६. सयोजन मे बहुत भूले करने वाला, अच्छे शब्दो का सूक्ष्मता से अध्ययन कर, कल्पना मे उन्हे प्रत्यक्ष करता रहे तो भूल सुधारने मे समर्थ हो सकता है।

७. जो-जो कार्य करने हो, उनका चित्र कल्पना के द्वारा मन मे अकित करने पर उन कार्मों की स्मृति बराबर बनी रहती है। उदाहरण के तौर पर (१) एक मनुष्य को बाजार मे जाकर अमुक-अमुक वस्तुएँ लानी है। (२) लिखा हुआ पत्र डाक मे डालना है और (३) वापिस आते समय भाषण देना है। अब वह पहले से कल्पना के द्वारा मन मे चित्र बनाये कि "मै बाजार मे जा रहा हू, वहाँ पहुँच कर वस्तुएँ खरीद रहा हूँ, उनमे क, ख, ग, घ आदि अमुक वस्तुएँ खरीदता हूँ। फिर वापस आते रास्ते मे डाक पेटी मे पत्र डाल रहा हूँ, उसके बाद सभा-स्थल जाकर अमुक प्रकार से भाषण दे रहा हू तो उनमे एक भी वस्तु को वह भूलेगा नही।

वस्तुओ को स्मृति मे रखने के लिए इस शक्ति का खास उपयोग किस प्रकार से हो सकता है, यह आगे समझाऊँगा।

मंगलाकांक्षी
धी०

क्रियाओ की तरह ही प्रकृति की घटनाओ की भी कल्पना करो। जैसे कि—प्रात काल हो रहा है, मध्याह्न तप रहा है, साय-काल हो रहा है, रात्रि पड़ रही है, आधी रात हो गई है, नदी मे पानी चढ रहा है, सरोवर मे लहरें उठ रही हैं, सागर का गर्जन चल रहा है, हवा फु फकार रही है आदि-आदि।

किसी असाधारण घटना की कल्पना करने मे भी दक्षता चाहिए। जैसे कि—मोटर, रेल या विमान मे अचानक प्रचड आग, जल-प्रलय, दुष्काल, रोग-सचार आदि-आदि।

कल्पना का विकास अनुभव की विशालता पर निर्भर है। इसलिए अनुभव को बन सके उतना विशाल बनाने की अपेक्षा है। निबन्ध-लेखन, काव्य रचना, निरीक्षण करने की आदत और चित्र-कला, उसमे खूब ही शहायक है।

मैं मानता हूँ कि कल्पना के विकास के लिए इतने सुझाव काफी है। अब उसकी व्यावहारिक उपयोगिता बता रहा हूँ—

१ जो व्यक्ति क्रिकेट के खेल मे लगे एकाध सुन्दर फटके का सूक्ष्मता से निरीक्षण करता है और उसे सैकडो बार मन मे देखता है, वह उसे बराबर याद रख सकता है। उससे वह स्वय भी उसी उत्तम रीति से फटका मार सकता है।

२ जो व्यक्ति किसी महान् वक्ता का भाषण बहुत ही रस पूर्वक सुनता है, और उस समय होने वाले तमाम हाव भाव को बडी सूक्ष्मता से देखता है, बार-बार अपनी कल्पना मे उन हावभावो को लाता है। वह उन्ही हावभावो के साथ भाषण कर सकता है।

३ टाइप मे खूब शीघ्रता के इच्छुक व्यक्ति को सबसे पहले की-बोर्ड का मन मे अभ्यास करके, कल्पना के द्वारा वैसा करना चाहिए। ऐसा करने से स्वल्प समय मे ही टाइप करने मे अपूर्व शीघ्रता लाई जा सकती है।

४ शार्ट हैन्ड मे भी यही रीति उपयोगी है।

५ लिपि-सुधार का इच्छुक किसी सुन्दर लिपि को कल्पना द्वारा बार-बार दर्शन करके अपनी लिपि को सर्वश्रेष्ठ बना सकता है।

६. सयोजन मे बहुत भूले करने वाला, अच्छे शब्दो का सूक्ष्मता से अध्ययन कर, कल्पना मे उन्हे प्रत्यक्ष करता रहे तो भूल सुधारने मे समर्थ हो सकता है।

७. जो-जो कार्य करने हो, उनका चित्र कल्पना के द्वारा मन मे अ कित करने पर उन कामों की स्मृति बराबर बनी रहती है। उदाहरण के तौर पर (१) एक मनुष्य को बाजार मे जाकर अमुक-अमुक वस्तुएँ लानी है। (२) लिखा हुआ पत्र डाक मे डालना है और (३) वापिस आते समय भाषण देना है। अब वह पहले से कल्पना के द्वारा मन मे चित्र बनाये कि "मै बाजार मे जा रहा हू, वहाँ पहुँच कर वस्तुएँ खरीद रहा हूँ, उनमे क, ख, ग, घ आदि अमुक वस्तुएँ खरीदता हूँ। फिर वापस आते रास्ते मे डाक पेटी मे पत्र डाल रहा हूँ, उसके बाद सभा-स्थल जाकर अमुक प्रकार से भाषण दे रहा हू तो उनमे एक भी वस्तु को वह भूलेगा नही।

वस्तुओ को स्मृति मे रखने के लिए इस शक्ति का खास उपयोग किस प्रकार से हो सकता है, यह आगे समझाऊँगा।

मगलाकांक्षी
धो०

मनन

मन से निरीक्षण करने की आदत, अभ्यास करने की पद्धति, दृश्य पदार्थ, परिचित पदार्थ, प्रारम्भ मे सामान्य विकास भी विशेष अभ्यास से सिद्ध, अदृश्य पदार्थो अथवा भावो की कल्पना किस प्रकार से करना ? क्रिया, घटना, निर्माण की कल्पना, क्रिकेट, भाषण, टाइपिंग, शार्ट हैण्ड, लिपि और संयोजन को सुधारने मे उसका उपयोग।

□

पत्र चौदहवाँ

I च

प्रिय बन्धु!

अब तुम एक विषय पर ठीक-ठीक एकाग्र हो सकते हो और कल्पना के विकास के द्वारा वस्तुओ को मन मे बराबर खडी कर सकते हो। इसलिए तुम्हे पहले की अपेक्षा अच्छा याद रहता है, परन्तु अब भी तुम्हारे लिए कई ऐसे सिद्धान्त जानने के हैं, कि जो स्मरण शक्ति की सहायता करने मे अति उपयोगी हैं। उनमे एक सिद्धान्त साहचर्य का है।

यह हमारे नित्य अनुभव की बात है कि दो-तीन मित्र बात पर डटे हुए हो तो तत्त्व ज्ञान से इतिहास पर, इतिहास से भूगोल पर, भूगोल से जन-स्वभाव पर, जनस्वभाव से खुराक पर, खुराक से रसोई, पर रसोई से रसोइये पर, रसोइये से महिलाओ की आदत पर आ पहुँचते है। अथवा दो समान सहेलियाँ वार्ता-निमग्न हो तो शाक भाजी से दाल-भात पर, दाल भात से अनाज पर, अनाज से राशनिंग पर, राशनिंग से सरकारी नीति पर, और सरकारी नीति पर से पाकिस्तान की नीति पर उतर पडती है, इसका अर्थ यह है कि मनुष्य को एक बात याद आने पर उससे मेल खाती दूसरी बात भी याद आ जाती है और दूसरी बात याद आने पर उससे लगती तीसरी बात भी याद आ जाती है। इस प्रकार यह परम्परा क्रमश लम्बाती ही चली जाती है।

यह भी तुमने देखा होगा कि कोई बात याद न आ रही हो, पर अगर उनकी कोई एक कडी मिल जाए तो फिर क्रमश समग्र वृत्तान्त याद आ जाता है।

शकुन्तला ने दुष्यन्त के समक्ष मुद्रिका की बात इसलिए उपस्थित की थी कि उसके स्मरण से दुष्यन्त को पूर्व स्नेह भाव की स्मृति हो।

हमारे कुछ कविताएं कंठस्थ की हुई होती है और समय गुजरते भूल जाते है; परन्तु अगर उसका प्रथम शब्द याद आए तो सम्पूर्ण कविता बराबर याद आ जाती है, इसका कारण क्या है? इसका कारण यही है कि हमारे मन मे प्रविष्ट हुआ कोई भी अनुभव या विचार, अनुभव या विचार के साथ सकलित होता है। तुम मनुष्य के विषय में विचार करने लगोगे कि उसके रूप रग, वेष; स्वभाव, स्थान, जाति आदि विषयो का स्मरण आएगा ही। तुम घोडे पर विचार करने लगोगे कि उसका देखाव, शृगार, उसकी शीघ्रता, उसका स्वभाव आदि मन के समक्ष उपस्थित हो जायेगे। इस रीति से किसी सत पुरुष का विचार करो कि उसकी सौम्यता, उसका उपदेश, उसका जीवन विना याद आये नही रहेगा।

इस तरह एक विचार या अनुभव के साथ दूसरे विचार या अनुभव का ताजा होना, उनसे साहचर्य का सिद्धान्त कहलाता है।

साहचर्य जितना समृद्ध होता है, स्मरण उतना ही अधिक सरल होता है, यह बात तुम्हे सदा याद रखनी है। इसलिए एक वस्तु को याद रखने के लिए उसकी बन सके उतनी विशेषताओ को याद रखो। यदि तुम्हे रीछ को याद रखना है तो उसका विचार इस प्रकार करो कि—

रीछ रग से काला होता है।
वह भयानक प्राणी है।
देह से राक्षस समान होता है।
शरीर पर रूखेबाल होते है।
वह वृक्ष से सटा हुआ खडा है।
वह मुंह फाड रहा है, आदि-आदि।

इस प्रकार से यदि तुमने रीछ पर विचार किया है तो याद करते समय उनमे से कोई न कोई बात तुम्हारे स्मृति पटल पर उतर ही आयेगी और उससे रीछ याद आ जायेगा।

□

पत्र चौदहवाँ

I च

प्रिय बन्धु !

अब तुम एक विषय पर ठीक-ठीक एकाग्र हो सकते हो और कल्पना के विकास के द्वारा वस्तुओ को मन मे बराबर खडी कर सकते हो। इसलिए तुम्हे पहले की अपेक्षा अच्छा याद रहता है, परन्तु अब भी तुम्हारे लिए कई ऐसे सिद्धान्त जानने के है, कि जो स्मरण शक्ति की सहायता करने मे अति उपयोगी है। उनमे एक सिद्धान्त साहचर्य का है।

यह हमारे नित्य अनुभव की बात है कि दो-तीन मित्र बात पर डटे हुए हो तो तत्त्व ज्ञान से इतिहास पर, इतिहास से भूगोल पर, भूगोल से जन-स्वभाव पर, जनस्वभाव से खुराक पर, खुराक से रसोई, पर रसोई से रसोइये पर, रसोइये से महिलाओ की आदत पर आ पहुँचते है। अथवा दो समान सहेलियाँ वार्ता-निमग्न हो तो शाक भाजी से दाल-भात पर, दाल भात से अनाज पर, अनाज से राशनिंग पर, राशनिंग से सरकारी नीति पर, और सरकारी नीति पर से पाकिस्तान की नीति पर उतर पडती है, इसका अर्थ यह है कि मनुष्य को एक बात याद आने पर उससे मेल खाती दूसरी बात भी याद आ जाती है और दूसरी बात याद आने पर उससे लगती तीसरी बात भी याद आ जाती है। इस प्रकार यह परम्परा क्रमश लम्बाती ही चली जाती है।

यह भी तुमने देखा होगा कि कोई बात याद न आ रही हो, पर अगर उनकी कोई एक कडी मिल जाए तो फिर क्रमश समग्र वृत्तान्त याद आ जाता है।

शकुन्तला ने दुष्यन्त के समक्ष मुद्रिका की बात इसलिए उपस्थित की थी कि उसके स्मरण से दुष्यन्त को पूर्व स्नेह भाव की स्मृति हो।

हमारे कुछ कविताएँ कंठस्थ की हुई होती है और समय गुजरते भूल जाते हैं; परन्तु अगर उसका प्रथम शब्द याद आए तो सम्पूर्ण कविता बराबर याद आ जाती है, इसका कारण क्या है? इसका कारण यही है कि हमारे मन मे प्रविष्ट हुआ कोई भी अनुभव या विचार, अनुभव या विचार के साथ सकलित होता है। तुम मनुष्य के विषय में विचार करने लगोगे कि उसके रूप रग, वेष; स्वभाव, स्थान, जाति आदि विषयो का स्मरण आएगा ही। तुम घोडे पर विचार करने लगोगे कि उसका देखाव, शृ गार, उसकी शीघ्रता, उसका स्वभाव आदि मन के समक्ष उपस्थित हो जायेगे। इस रीति से किसी सत पुरुष का विचार करो कि उसकी सौम्यता, उसका उपदेश, उसका जीवन विना याद आये नही रहेगा।

इस तरह एक विचार या अनुभव के साथ दूसरे विचार या अनुभव का ताजा होना, उनसे साहचर्य का सिद्धान्त कहलाता है।

साहचर्य जितना समृद्ध होता है, स्मरण उतना ही अधिक सरल होता है, यह बात तुम्हे सदा याद रखनी है। इसलिए एक वस्तु को याद रखने के लिए उसकी बन सके उतनी विशेपताओ को याद रखो। यदि तुम्हे रीछ को याद रखना है तो उसका विचार इस प्रकार करो कि—

रीछ रग से काला होता है।
वह भयानक प्राणी है।
देह से राक्षस समान होता है।
शरीर पर रूखेबाल होते है।
वह वृक्ष से सटा हुआ खडा है।
वह मुँह फाड रहा है, आदि-आदि।

इस प्रकार से यदि तुमने रीछ पर विचार किया है तो याद करते समय उनमे से कोई न कोई बात तुम्हारे स्मृति पटल पर उतर ही आयेगी और उससे रीछ याद आ जायेगा।

मनुष्य मे, पशु मे, पक्षी मे, हरेक वस्तु मे कोई न कोई विशेष लक्षण होता है. इसका उपयोग यदि साहचर्य के सिद्धान्त के साथ किया जाए तो उसका नाम ही क्या उससे सम्बद्ध अनेक बातें भी याद रह जाती है। जैसे कि तुम परिभ्रमण के लिए निकले हो, उस समय तुम्हे तीन व्यक्ति सामने मिले है। उनमे एक का नाम खुशाल-दास, दूसरे का नाम नारायण दास और तीसरे का नाम चुन्नीलाल है। अब तुम्हे उन तीनो मनुष्यो के नाम याद रखने है, तो क्या करोगे ? उस समय साहचर्य के सिद्धान्त को उपयोग मे लो। जैसे कि खुशालदास का मुख जरा मुस्कराता हुआ है तो

हास्य—खुशाली—खुशालदास
हास्य—खुशाली—खुशालदास
हास्य—खुशाली—खुशालदास

इस तरह तीन बार मन मे बोल लो, यह नाम तुम्हे जरूर याद रह जायेगा।

अब नारायण दास का नाक जरा लम्बा है, तो -

सुन्दर नाक—गरुड—गरुडपति नारायण—नारायण दास
सुन्दर नाक—गरुड—गरुडपति नारायण—नारायण दास
सुन्दर नाक—गरुड—गरुडपति नारायण—नारायणदास।

इस प्रकार तीन बार मन मे बोल लो और यह नाम भी तुम्हे याद रह जायेगा।

तीसरे व्यक्ति चुन्नीलाल के दाँत जरा चमकते हैं, तो—
चमकता दाँत—चुन्नी—चुन्नीलाल
चमकता दाँत—चुन्नी—चुन्नीलाल
चमकता दाँत - चुन्नी—चुन्नीलाल

यो तीन बार मन मे बोलने पर यह नाम भी तुम्हे अच्छी तरह याद रह जायेगा। इसके बाद जब भी उन तीनो मनुष्यो मे से कोई भी तुम्हे सामने मिलेगा तब उसे देखते ही उसके नाम से पुकार सकोगे।

अब कल्पना करो कि तुम एक मित्र से मिलने उसके घर गये हो। उसके तीन पुत्रियाँ है। सुलोचना, रश्मिका और भारती। तुम्हे उन तीनो के नाम याद रखने है तो तुम उनका लाक्षणिकता जान

लो और उनके साथ उस नाम को जोड दो, जैसे कि—

सुलोचना जरा रूपवाली है, तो—
रूप-लोचन-लोचना—सुलोचना
रश्मिका गोल मुँह वाली है, तो—
गोल मुख-चन्द्र-चन्द्रिका-रश्मि—रश्मिका
भारती तूफानी है, तो—
तूफान-सागर-भरती—भारती

अब कल्पना करो कि तुम यात्रा कर रहे हो उसमें तीन प्रवासियो के साथ भेंट होती है। उनमे एक का नाम अनगप्पा, दूसरे का नाम फणीन्द्रनाथ और तीसरे का नाम जफरुल्ला खाँ है तो वहाँ भी तुम इस सिद्धान्त को उपयोग मे ले सकते हो।

अनगप्पा दक्षिण प्रान्त का है, काला है, तो व्यग मे उसे अनग (कामदेव) कहकर उसे गप मारते हुए कल्पा जा सकता है और इस प्रकार श्याम—अनग—अनगप्पा—अनगप्पा का नाम याद रखा जा सकता है।

फणीन्द्रनाथ बगाली है, अच्छा गाने वाला है, तो सगीत, मुरली-फणी-फणीन्द्र-फणीन्द्रनाथ इस तरह यह नाम भी याद रखा जा सकता है।

जफरुल्ला खान क्रोधी आदमी है, तो उसकी पहचान जब्बर मान लो और निम्नोक्त सकलना करो —

जब्बर उल्का खान, जफ्फर उल्का खान, जफर-उल्लाखान।

इस प्रकार ज्ञात और अज्ञात नाम, पशु-पक्षियो के नाम और घटनाएँ याद रखी जा सकती है, परन्तु यह साहचर्य कोई विशिष्ट प्रकार का होना चाहिए तभी मन मे स्फुरित है। इसलिए उसके प्रकार कितने है, इसे जानने की आवश्यकता है।

साहचर्य के विशिष्ट प्रकार छह है—
(१) समानता (२) विरुद्धता (३) तादात्म्य
(४) निकटता (५) कार्य भाव (६) कारण भाव

(१) <u>समानता</u>—कितनी ही वस्तुएँ आकार-समानता के द्वारा याद रह जाती है। जैसे कि—नारगी और गेंद, ढोल और पीपा, डिब्बा और पेटी।

कुछ वस्तुएँ अपने गुण-समत्व के कारण याद रह जाती है, जैसे कि—मिसरी और गुड, दूध और दही, प्रताप और शिवाजी तथा नेहरूजी और पटेल, और भी अनेक प्रकार से समानता को घटित किया जा सकता है।

(२) विरुद्धता—कुछ वस्तुएँ एक दूसरी से बिलकुल विरुद्धता धारण करने के कारण भी याद रह जाती हैं। जैसे कि—रात और दिवस, अग्नि और पानी, चूहा और बिल्ली, सर्प और नकुल, वेश्या और सती, चोर और साहूकार, राम और रावण, कृष्ण और कस, गाधीजी और गोडसे। गुणो के विषय मे भी ऐसे ही होता है जैसे कि पुण्य और पाप, धवल और काला, कडवा और मीठा, चतुर और नासमझ, भला और बुरा आदि।

(३) तादात्म्य—कुछ वस्तुएँ एक दूसरे मे ओत-प्रोत होने के कारण ही याद आ जाती है। जैसे—दूध और पानी, हृदय और भावना, मन और विचार, सागर और विशालता, महावीर और अहिंसा, गाधीजी और सत्य।

(४) निकटता—कुछ वस्तुएँ एक दूसरी के साथ पैदा होने के कारण या साथ रहने के कारण याद रह जाती है। जैसे कि—राधा और कृष्ण, राम और सीता, शकर और पार्वती, महावीर और गौतम*, भरत और बाहुबलि❋, नौका और नाविक, खडी और कलम, खीर और पूडी तथा वणिक-ब्राह्मण, पति-पत्नी, भाई-बहन, हरड-बहेडा, खरल-दस्ता आदि।

(५) कार्य भाव—कुछ वस्तुएँ एक वस्तु का कार्य या परिणाम रूप होने के कारण याद रह जाती हैं। जैसे कि—बर्फ और पानी, स्वर्ण और आभरण (जेवर) अहिंसा और धर्म।

(६) कारण भाव—कुछ वस्तुएँ एक वस्तु की कारण रूप होने की वजह से याद रह जातो हैं। जैसे कि—बीमारी और अजीर्ण, बीमारी और चूहे, वृक्ष और बीज, मुर्गी और अण्डा, भोजन

---

* भगवान महावीर स्वामी और उनके मुख्य शिष्य इन्द्रभूति गौतम।

❋ आदि चक्रवर्ती भरत और उनके भाई बाहुबलि।

और भूख, नुकसान और सट्टा। साहचर्य के ये छह प्रकार अलग २ शब्दो के साथ किस प्रकार सयोजित करने चाहिए इसके कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। उनमे योग्य और अयोग्य का विवेक कैसे करना, यह भी बता रहा हूँ।

(१) घोडा—गदहा [विरुद्धता] गुण मे विरुद्ध हैं।

घोडा—गाय [समानता] दोनो खुरवाले चतुष्पद पशु हैं।

घोडा—शीघ्रता [तादात्म्य] घोडे को देखकर शीघ्रता स्मृति मे आती है।

घोडा—घास [निकटता] घोडे के पास घास पडा रहता है, पर यह बात निरन्तर नही, घोडे के पास कितनी ही बार घास पडा हुआ होता है और कई बार नही भी। घोडे को देखते ही घास का स्मरण सरलता से होना मुश्किल है, जब कि असवार निकटता का द्योतक है।

(२) सिह—बाघ [समानता] दोनो हिंसक पशु है।

सिह—बकरी [विरुद्धता] एक बलवान है दूसरा निर्वल है।

सिह—पराक्रम [तादात्म्य]

सिह—सिहनी [निकटता]

सिह—जगल [निकटता]

(३) छोकरी—छोकरा [निकटता]

छोकरी—बोकरी [विरुद्धता] यह ठीक नही है। उनमे बोली की समानता होती है, इसलिए समानता मे आती है।

छोकरी—आभूषण [तादात्म्य], छोकरियो को आभूषणो का बहुत शौक होता है।

यह उचित नही, इसका समावेश निकटता मे होना चाहिए।

(४) टेबुल-कुर्सी [समानता] दोनो व्यवहार मे काम आती है ठीक है, परन्तु जहाँ टेबुल रखी जाये वहाँ कुर्सी रखनी ही पडती है, इसलिए यहाँ निकटता की बात ज्यादा उपयुक्त है।

टेबुल—दवात [निकटता]

टेबुल—क्लर्क [निकटता]

कुछ वस्तुएँ अपने गुण-समत्व के कारण याद रह जाती है, जैसे कि—मिसरी और गुड, दूध और दही, प्रताप और शिवाजी तथा नेहरूजी और पटेल, और भी अनेक प्रकार से समानता को घटित किया जा सकता है।

(२) विरुद्धता—कुछ वस्तुएँ एक दूसरी से बिलकुल विरुद्धता धारण करने के कारण भी याद रह जाती हैं। जैसे कि—रात और दिवस, अग्नि और पानी, चूहा और बिल्ली, सर्प और नकुल, वेश्या और सती, चोर और साहूकार, राम और रावण, कृष्ण और कस, गाधीजी और गोडसे। गुणो के विषय मे भी ऐसे ही होता है जैसे कि पुण्य और पाप, धवल और काला, कडवा और मीठा, चतुर और नासमझ, भला और बुरा आदि।

(३) तादात्म्य—कुछ वस्तुएँ एक दूसरे मे ओत-प्रोत होने के कारण ही याद आ जाती है। जैसे—दूध और पानी, हृदय और भावना, मन और विचार, सागर और विशालता, महावीर और अहिंसा, गाधीजी और सत्य।

(४) निकटता—कुछ वस्तुएँ एक दूसरी के साथ पैदा होने के कारण या साथ रहने के कारण याद रह जाती हैं। जैसे कि—राधा और कृष्ण, राम और सीता, शकर और पार्वती, महावीर और गौतम*, भरत और बाहुबलि‡, नौका और नाविक, खडी और कलम, खीर और पूडी तथा वणिक-ब्राह्मण, पति-पत्नी, भाई-बहन, हरड-बहेडा, खरल-दस्ता आदि।

(५) कार्य भाव—कुछ वस्तुएँ एक वस्तु का कार्य या परिणाम रूप होने के कारण याद रह जाती है। जैसे कि—बर्फ और पानी, स्वर्ण और आभरण (जेवर) अहिंसा और धर्म।

(६) कारण भाव—कुछ वस्तुएँ एक वस्तु की कारण रूप होने की वजह से याद रह जाती है। जैसे कि—बीमारी और अजीर्ण, बीमारी और चूहे, वृक्ष और बीज, मुर्गी और अण्डा, भोजन

---

* भगवान महावीर स्वामी और उनके मुख्य शिष्य इन्द्रभूति गौतम।

‡ आदि चक्रवर्ती भरत और उनके भाई बाहुबलि।

और भूख, नुकसान और सट्टा। साहचर्य के ये छह प्रकार अलग २ शब्दो के साथ किस प्रकार सयोजित करने चाहिए इसके कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। उनमे योग्य और अयोग्य का विवेक कैसे करना, यह भी बता रहा हूँ।

(१) घोडा—गदहा [विरुद्धता] गुण मे विरुद्ध हैं।

घोडा—गाय [समानता] दोनो खुरवाले चतुष्पद पशु हैं।

घोडा—शीघ्रता [तादात्म्य] घोडे को देखकर शीघ्रता स्मृति मे आती है।

घोडा—घास [निकटता] घोडे के पास घास पडा रहता है, पर यह बात निरन्तर नही, घोडे के पास कितनी ही बार घास पडा हुआ होता है और कई बार नही भी। घोडे को देखते ही घास का स्मरण सरलता से होना मुश्किल है, जब कि असवार निकटता का द्योतक है।

(२) सिंह—बाघ [समानता] दोनो हिंसक पशु है।

सिह—बकरी [विरुद्धता] एक बलवान है दूसरा निर्बल है।

सिंह—पराक्रम [तादात्म्य]

सिंह—सिंहनी [निकटता]

सिंह—जगल [निकटता]

(३) छोकरी—छोकरा [निकटता]

छोकरी—बोकरी [विरुद्धता] यह ठीक नही है। उनमे बोली की समानता होती है, इसलिए समानता मे आती है।

छोकरी—आभूषण [तादात्म्य], छोकरियो को आभूषणो का बहुत शौक होता है।

यह उचित नही, इसका समावेश निकटता मे होना चाहिए।

(४) टेबुल-कुर्सी [समानता] दोनो व्यवहार मे काम आती है ठीक है, परन्तु जहाँ टेबुल रखी जाये वहाँ कुर्सी रखनी ही पडती है, इसलिए यहाँ निकटता की बात ज्यादा उपयुक्त है।

टेबुल—दवात [निकटता]

टेबुल—क्लर्क [निकटता]

टेबुल—खाट [विरुद्धता] टेबुल सपाट होती है और खाट (चारपाई) कुछ अन्य प्रकार की होती है। पर यह विरुद्धता की बात ठीक नही बैठती क्यो कि यह एकदम विरुद्ध गुण नही हैं कि जिससे उसे विरुद्धता की कक्षा मे डाला जा सके।

(५) गधा—घोडा [विरुद्धता] एक प्राणी मूर्ख है, दूसरा प्राणी होशियार है।

गधा—मूर्ख मनुष्य [समानता] गुण मे दोनो समान है।

गधा—सहनशीलता [तादात्म्य]

गधा—गोणी (टाट की दुहरी बोरी) [निकटता]
ठीक है, पर कुम्हार ज्यादा उपयुक्त है।

(६) ग्राम—शहर [विरुद्धता]

दोनो बसने के स्थान हैं। इसलिए एक प्रकार की समानता है। रीति रिवाज की दृष्टि से विरुद्धता की कल्पना की जा सकती है। पर निकटता का सम्बन्ध सबसे अधिक उपयुक्त है। शहर के पास गाव अवश्य बसे हुए होते है।

ग्राम—ढेढवाडा* [समानता]

यह उचित नही है। इसमे समानता नही पर कार्य कारण भाव है। ग्राम कारण है और ढेंढवाडा कार्य है। ग्राम होता है वहाँ ढेंढवाडा भी होता है, इसलिए उसे कार्य भाव मे रखना उचित है।

ग्राम—सादगी [तादात्म्य]

(७) नदी—सरोवर [निकटता] नदी-सरोवर सूख गये है तो भी धरती का स्वामी मेघ नही आया।

नदी—झरणा [समानता] दोनो एक प्रकार के पानी के प्रवाह है।

ठीक है, परन्तु कारण भाव यहाँ भी अधिक उपयुक्त जँचता है।

नदी—पवित्रता [तादात्म्य]

---

* ढेंढों को वसने का स्थान।

नदी-नाला [विरुद्धता] एक स्वच्छ और दूसरा गदा।

(८) कपाल—तिलक [निकटता]

कपाल—भाग्य [तादात्म्य] कपाल को देखते ही भाग्य का ख्याल आता है।

कपाल—मुँह [समानता]

योग्य नहीं। निकटता उचित है।

कपाल-कपोल [समानता] शब्द की समानता है।

(९) बक (बगला)—ठग [समानता] दोनो ठग है।

बगला—श्वेतता [तादात्म्य]

बगला—मछली [निकटता]

बगला—साधु [विरुद्धता] एक कपटी, दूसरा प्रामाणिक।

(१०) बर्फी—पेडा [समानता निकटता]

बर्फी—जहर [विरुद्धता]

बर्फी—मिठास [तादात्म्य]

बर्फी—मावा [कारण भाव]

बर्फी—भोजन [कार्यभाव] बर्फी का भोजन बनता है।

मैं मानता हूँ कि साहचर्य को समझने के लिए अभी इतना विवेचन पर्याप्त है।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

बात के बदलते विषय, कविता का प्रथम शब्द-साहचर्य, रीछ का उदाहरण, खुशालदास, नारायणदास और चुन्नीलाल आदि नये नाम। साहचर्य के छह प्रकार—समानता, विरुद्धता, तादात्म्य, निकटता, कार्यभाव और कारण भाव।

□

पत्र पन्द्रहवां

संकलन

प्रिय बन्धु !

स्मरण-शक्ति के विकास मे स्वल्प प्रयत्न से बहुत अधिक याद कैसे रहे, यही सवाल मुख्य है और तुम देख चुके हो कि मन को एकाग्र करने से, इन्द्रियां अधिक कार्यक्षम होने से, कल्पना का विकास होने से और साहचर्य के सिद्धान्त पर उचित अमल करने पर कितना सरलतापूर्वक याद रह सकता है। अब तुम्हारे इन साधनो मे एक का और समावेश करो—यह है सकलन पद्धति।

यह तुम्हे कहा जाए कि निम्नोक्त दस शब्द याद रखो तो तुम कौन-सी रीति से याद रखोगे ?

अवलेह, शक्ति, काम, लक्ष्मी, सुख, सिक्ख, अमृतसर, सुवर्ण मन्दिर, सरोवर, कमल।

इन शब्दो को तुम इसी प्रकार बाँचते रहोगे तो याद रखना कठिन होगा। इसकी अपेक्षा यदि इनको किसी भी प्रकार से सकलित करोगे, किसी भी वस्तु के साथ जोड दोगे, तो ये अत्यन्त सरलता से याद रह जाएँगे। जैसे कि—

१-२ अवलेह से क्या होता है ? शक्ति आती है। 'शक्ति'।

२-३ शक्ति आने से क्या होता है ? अधिक काम हो सकता है। 'काम'

३-४ 'काम करने से क्या मिलता है ? लक्ष्मी, 'लक्ष्मी'।

४-५ लक्ष्मी से क्या मिलता है ? सुख, 'सुख'।

५-६ सुख से मेलवाला शब्द क्या है ? सिक्ख, 'सिक्ख'।

६-७ सिक्ख का मुख्य स्थान कहाँ है ? अमृतसर, 'अमृतसर'।

७-८ अमृतसर किससे प्रख्यात है ? सुवर्ण मन्दिर से, 'सुवर्ण-मन्दिर'।

८-९ सुवर्ण मन्दिर कहाँ स्थित है ? सरोवर मे, 'सरोवर' ।
९-१० सरोवर मे क्या खिलते है ? कमल, 'कमल' ।

ये शब्द यदि तुम धीरे-धीरे ध्यानपूर्वक दो तीन वार पढ लोगे तो याद रह जाएगे । आजमा कर देख लो ।

अब ये दस शब्द एक साथ वोल जाओ । जरूर याद आ जाएँगे । अगर कोई शब्द याद न आए तो उसका सम्बन्ध फिर से ताजा करलो ।

इससे आगे वढो और नीचे को २० शब्दो की इसी प्रकार सकलना करो ।

भ्रमर, बगीचा, काश्मीर, श्रीनगर, झेलम, शिकारा, सैर आनन्द, पेटलाद, पटेल, भैस, दूध, डेरी, मक्खन, घी, आयुष्य, ब्रह्मचर्य, हनुमान, राम, जगल ।

१०-११ कमल के आसपास कौन चक्कर लगाता है ? भ्रमर, 'भ्रमर' ।
११-१२ भ्रमर दूसरे कौन से स्थान मे मिलता है ? वगीचे मे, 'बगीचा' ।
१२-१३ बगीचो के लिए सबसे अधिक प्रख्यात प्रान्त कौन-सा है ? काश्मीर, 'काश्मीर' ।
१३-१४ काश्मीर का मुख्य शहर कौन-सा है ? श्रीनगर, 'श्रीनगर' ।
१४-१५ श्रीनगर के बीचो-बीच कौन-सी नदी बहती है ? झेलम, 'झेलम' ।
१५-१६ झेलम मे कौन-सी डोगिया चलती है ? शिकारा, 'शिकारा' ।
१६-१७ शिकारो का मुख्य उपयोग कौन-सा है ? सैर, 'सैर' ।
१७-१८ सैर किसलिए की जाती है ? आनन्द के लिए, 'आनन्द' ।
१८-१९ आनन्द के पास कौन-सा गाव है ? पेटलाद, 'पेटलाद*' ।
१९-२० पेटलाद मे किनकी बस्ती अधिक है ? पटेलो की, 'पटेल' ।
२०-२१ पटेलो के घर मे क्या होता है ? भैस, 'भैस' ।
२१-२२ भैस क्या देती है ? दूध, 'दूध' ।
२२-२३ दूध अधिक कहाँ मिलता है ? डेरी मे, 'डेरी' ।
२३-२४ डेरी का मुख्य कार्य क्या होता है ? मक्खन बनाना, 'मक्खन' ?

---

* ये गुजरात के शहर है ।

२४-२५ मक्खन का क्या है ? घी, 'घी' ।
२५-२६ घी का दूसरा नाम क्या है ? आयुष्य, 'आयुष्य' ।
२६-२७ आयुष्य किससे बढता है ? ब्रह्मचर्य से, 'ब्रह्मचर्य' ।
२७-२८ ब्रह्मचर्य के लिए कौन प्रख्यात है ? हनुमान, 'हनुमान' ।
२८-२९ हनुमान किसके भक्त थे ? राम के, 'राम' ।
२९-३० राम ने प्रतिज्ञापालन के लिए क्या किया ? जगल मे भटके, 'जगल' ।

अब दूसरे बीस शब्द लो ।

गिरि, काष्ठ कुल्हाडी, लोहा, निष्ठुर, हिम्मतलाल, बढमाण वीछीया (एक गाव) कोटवाल, मामलतदार, हवलदार, चौकी, वृक्ष, चाकू, तलवार, धनुष, जमीदार, सौराष्ट्र, सज्जनता और विद्या ।

इन शब्दो की सकलना निम्न प्रकार से करो ।
३०-३१ जगल प्रख्यात कहाँ का होता है ? गिरि* का ।
३१-३२ गिरि मे विशेष रूप से क्या मिलता है ? 'काष्ठ ।
३२-३३ काष्ठ को कौन काटता है ? 'कुल्हाडी' ।
३३-३४ कुल्हाडी किसकी बनती है ? 'लोहे को' ।
३४-३५ लोहे के समान किसका हृदय होता है ? 'निष्ठुर का ।
३५-३६ निष्ठुर कौन है ? हठीला 'हिम्मतलाल' ।
३६-३७ हिम्मतलाल कहाँ रहता है ? 'बढमाण' मे ।
३७-३८ वढमाण वाले की लडकी का विवाह कहाँ किया है ? वीछीया मे ।
३८-३९ वीछीया मे चतुर कौन है ? 'कोटवाल' ।
३९-४० कोटवाल के ऊपर कौन होता है ? 'मामलतदार' ।
४०-४१ मामलतदार के यहाँ रोज कार्य करने कौन जाता है ? 'हवलदार' ।
४१-४२ हवलदार कहाँ रहता है ? 'चौकी' मे ।
४२-४३ चौकी के पास क्या उगा हुआ है ? 'वृक्ष' ।
४३-४४ वृक्ष की कोमल टहनियाँ किससे काटी जाती है ? 'चाकू' से ।
४४-४५ चाकू से अधिक बड़ा हथियार क्या होता है ? 'तलवार' ।
४५-४६ तलवार की अपेक्षा प्राचीन हथियार कौन-सा है ? 'धनुष' ।

* सौराष्ट्र का सुप्रसिद्ध जगल है ।

४६-४७ धनुष किसके यहाँ पडा है ? 'जमीदार' के यहाँ ।
४७-४८ ये जमीदार कहाँ के है ? 'सौराष्ट्र' के ।
४८-४९ सौराष्ट्र मे अधिकता से क्या मिलती है ? 'सज्जनता' ।
४९-५० सज्जनता किससे आती है ? 'विद्या' से ।

अब पहले शब्द से क्रमश' विचार करो, इस क्रम से एक शब्द याद आता चला जायेगा और इस प्रकार पूरे के पूरे पचास याद आ जाएँगे । कुछ दिनो के अभ्यास से ही तुम इस रीति से ५०० जितने शब्द याद रख सकोगे ।

तुम्हे संभवत. यह महसूस होगा कि यह बात तो जल्दी सवध बन सके, उन शब्दों की हुई । पर मुश्किल शब्दो का या जिन शब्दो का एक दूसरे के बीच सम्बन्ध न जोडा जा सके उन शब्दो का क्या हो ? परन्तु यह विचार भूल भरा है । कल्पना वरावर उत्तेजित हो तो चाहे जैसे शब्द जोडे जा सकते है ।

—कौआ, डाक, हिमालय, अमेरिका, दालभात, गीताजी ।

इन शब्दो को नीचे के क्रम से जोडा जा सकता है ।

१-२ कौआ डाक की पेटी पर बैठा है ।
२-३ डाक हिमालय के आश्रम की है ।
३-४ हिमालय मे अमेरिका की एक पर्वतारोहक मण्डली खोज के लिए आई है ।
४-५ अमेरिका वालो की खुराक पृथक् प्रकार की होने पर भी यहाँ आने के बाद दालभात खाने लगे है ।
५-६ दालभात की खुराक खाते गीताजी पढने की इच्छा हुई ।

इन सम्बन्धो की कल्पना करते समय उस प्रकार के चित्र मन मे खडे करने से न चूकें । चित्रों के निर्माण मे सभव और असभव दोनो प्रकार की कल्पनाएँ उपयोगी हो सकती हैं ।

—कबूतर, आईसक्रीम, महासभा, रीछ, ग्राम, विद्यापीठ

६-७ गीताजी की छोटी प्रति कबूतर गर्दन मे बाँधकर लड़ाई मे ले जा रहा है ।
७-८ सिपाही लोग कबूतर को आईस्क्रीम खिलाते है ।
८-९ आईस्क्रीम का प्रबन्ध महासभा की ओर से हुआ है ।

९-१० महासभा मे रीछ का चिह्न धारण करने वाली एक गुप्त मण्डली है।

१०-११ रीछ का उपद्रव ग्राम मे अधिक होता है।

११-१२ ग्राम मे एक विद्यापीठ खडी की गई है।

☞—सेवक लाल, दु ख, कुटुम्वी, जलेबी, गधा, ब्राह्मण।

१२-१३ ग्राम की विद्यापीठ मे सेवकलाल बहुत सुन्दर काम करता है।

१३-१४ सेवकलाल ने दु:ख सहन करने मे कदम पीछे नही हटाया।

१४-१५ दु ख देने मे ग्राम के कुटुम्वी लोग मुख्य है।

१५-१६ कुटुम्बियो के सिर पर कर्ज होने पर भी रोज सुबह जलेबी खाते है।

१६-१७ एक कुटुम्बी जलेबी खाते हुए गधे पर बैठा है।

१७-१८ गधा ब्राह्मण को सामने देखकर हू कता है।

इस प्रकार सकलना करने मे सामान्य ज्ञान, साहचर्य और कल्पना खूब मददगार होती है। इसलिए उन हरेक का महत्त्व अगले पत्रो मे बताया गया है।

पिछले पत्र पढते रहना तथा उनमे जो जो अभ्यास के योग्य हो, उसका अभ्यारा करते रहना।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

संकलन की महत्ता, हरेक शब्द की किसी न किसी प्रकार से दूसरे शब्द के साथ सकलना की जा सकती है।

पत्र सोलहवाँ

रेखा और चिह्न

प्रिय बन्धु !

इस पत्र मे तुम्हारा ध्यान रेखा और चिह्नो की उपयोगिता की तरफ खीचना चाहता हूँ। क्योकि इनके योग्य उपयोग से भी याद रखने मे बहुत सरलता होती है।

पिछले पत्र मे सकलन के वर्णन प्रसग मे जो वाक्य लिखे गये हैं, उनमे कितनेक शब्दो के नीचे रेखाएँ खीची गई है। जैसे कि—

भ्रमर विशेष रूप से कहाँ मिलता है ?

बगीचो मे।

यहाँ भ्रमर और बगीचा ये दो शब्द याद रखने पर पूर्ण वाक्य बराबर याद आ जाता है। सिर्फ उसे पढते समय बगीचे मे भ्रमर फिर रहा है, ऐसी कल्पना करना अपेक्षित है।

अब एक बडा वाक्य लेकर रेखाओ का परीक्षण करके देखो। यह वाक्य निम्नोक्त है—

ब्रह्मसूत्र पच्चीस बार बाँचो या सुनो, पचदशी का पच्चास बार पारायण करो, गीता को रट-रट कर कण्ठस्थ करो, महान् सत की सेवा मे रात-दिन उठ बैठ करो, पर तुम्हारे मन का कचरा तुम्हारे सिवाय कोई भी ठीक-ठीक नही देख सकेगा और तुम्हारे सिवाय उसे कोई भी निकाल नही सकेगा।

इस वाक्य मे निम्नोक्त प्रकार से रेखाएँ खीचोगे तो पूर्ण वाक्य खूब सरलता से याद रह जायेगा।

ब्रह्मसूत्र पच्चीस बार बाचो या सुनो, पचदशी का पच्चास बार पारायण करो, गीता को रट-रट कर कठस्थ करो, महान सन्त की सेवा मे रात-दिन उठ बैठ करो, पर तुम्हारे मन का कचरा

तुम्हारे सिवाय कोई भी ठीक-ठीक नही देख सकेगा और तुम्हारे सिवाय कोई भी निकाल नही सकेगा।

इस वाक्य मे पहले एक रेखा वाले शब्दो पर ध्यान दो, जैसे कि—ब्रह्मसूत्र, पचदशी, गीता, सन्त की सेवा, मन का कचरा, देख नही सकेगा। निकाल नही सकेगा। इन्हे दो तीन बार शान्ति से पढ लो, फिर दो रेखा वाले शब्दो पर ध्यान दो, जैसे कि—सुनो, पारायण करो, कण्ठस्थ करो, उन्हे भी दो तीन बार एकाग्रता-पूर्वक पढ लो।

अब उस पूरे वाक्य को निम्नोक्त प्रकार से ध्यान पूर्वक बाचो और हरेक भाग को मन मे तीन बार बोलो।

ब्रह्मसूत्र—पच्चीस बार बाचो अथवा सुनो,

पचदशी—का पचास बार परायण करो,

गीता को रह-रह कर कठस्थ करो।

महान सन्त की सेवा मे रात दिन उठ बैठ करो।

पर तुम्हारे मन का कचरा तुम्हारे सिवा कोई भी ठीक-ठीक
नही देख सकेगा।

[अपने देश का माध्यमिक इतिहास पृ. २६ थोडे परिवर्तन के साथ]

इस वाक्य मे नीचे के मुताबिक रेखाओ का उपयोग करो—

सिन्ध प्रान्त के लारकाना जिले मे, आज से पाच हजार वर्ष पूर्व मोहनजोदडो नाम की भव्य और समृद्ध नगरी सिन्धु नदी के तट पर थी । जिसके मकान ई ट के वने हुए थे और राजमार्ग चौड़े और वैसे ही पद्धतिबद्ध थे ।

सिन्ध, लारकाना, पाँच हजार वर्ष, मोहनजोदडो, सिन्धु-तट, मकान, राजमार्ग इन शब्दो को तीन बार मन मे धीमे से बोलो । फिर उन पर नीचे लिखे प्रकार से विचार करो ।

इस वाक्य मे मोहनजोदड़ो नाम की नगरी का वर्णन है ।

प्रान्त सिन्ध

जिला लारखाना

समय पाँच हजार वर्ष

वर्णन उसके मकानो का और राजमार्गो का । अब धीरे-धीरे निम्नोक्त ढग से उस वाक्य को मन मे तीन बार बाचो ।

सिन्ध प्रान्त के,
लारखाना जिले मे,
आज से पाच हजार वर्ष पूर्व,
मोहनजोदडो नाम की एक भव्य और समृद्ध नगरी,
सिन्धु नदी के तट पर थी ।
जिसके मकान ई ट के बने हुए थे और
राजमार्ग चौडे तथा पद्धतिबद्ध थे ।

जहाँ वाक्य विभाग लम्बे हो वहाँ विशेष विचारणा करनी चाहिये । जैसे कि—मोहनजोदडो कैसी नगरी थी ? भव्य और समृद्ध । कैसी ? भव्य और समृद्ध । राजमार्ग कैसे थे ? चौडे तथा पद्धतिवद्ध । कैसे ? चौडे तथा पद्धतिबद्ध, चौडे तथा पद्धतिबद्ध ।

अब इस वाक्य को - धीरे-धीरे स्मृति पट पर लाओ । तो इसके मूल क्रम मे वरावर आ जायेगा ।

कविता को याद रखने मे भी रेखाएँ उपयोगी साबित होती है।

कवितापाठ मे कहाँ विराम लेना चाहिये, यह ठीक-ठीक समझ लेना अपेक्षित है। यदि विचार के मुख्य केन्द्रो पर विराम लिया जायेगा तो वह बराबर सफल होगी। जैसे कि—

मालिनी छन्द

अनिल दल बजावे कुंज मा पेसी वंशी,
तरुवर वर शाखा - नृत्य नी धून चाले;
विहगगण मधुरा सूर थी गीत गाय,
खल खल नादे निर्भरो ताल आये।

ये पंक्तिया इस पुस्तक के लेखक द्वारा लिखित 'अजन्ता का यात्री' नामक खण्डकाव्य से उद्धृत है। इन पंक्तियो के वाचन से यह बात अच्छी तरह समझी जा सकती है कि इनका मुख्य उद्देश्य प्रकृति का संगीत बताना है, इसलिए उसका वर्णन उनमे क्रमशः किया गया है। इसलिए रेखाएँ नीचे के क्रम से खीचनी चाहिये—

अनिलदल बजावे कुंज मा पेसी वंशी,
तरुवर वर शाखा-नृत्य नी धून चाल,
विहगगण मधुरा सूर थी गीत गाय,
खल खल नादे निर्भरो ताल आये।
अनिल दल-वंशी तरुवर-नृत्य विहगगण संगीत निर्भरो-ताल।
वंशी, नृत्य, गीत और ताल।

वंशी—अनिलदल बजावें कुंज मे प्रविष्ट वंशी।

नृत्य—तरुवर वर शाखा नृत्य की धुन चले।

गीत—विहगगण मधुर स्वर से गीत गाये।

ताल—खल खल शब्द से निर्भर ताल देते है।

कविता को पहले अच्छी तरह समझ लेना चाहिए और फिर याद करने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा करने पर वह बिना रटे ही बराबर याद रह जाती है। छन्द की लय आती हो तो याद रखने मे काफी सरलता हो जाती है।

अब पहले इन पक्तियो का अर्थ समझ लो। अनिल का दल अर्थात् पवन की सेना वृक्षो के कुज मे प्रविष्ट होकर वशी बजा रही है। तरुवर अर्थात् वृक्ष, उसकी वर शाखा अर्थात् सुन्दर डालियाँ, उनका जो नृत्य है, वह धुन मचा रहा है। विहगगण अर्थात् पक्षी समूह मधुर स्वर मे गीत गा रहा है और निर्झर अर्थात् पानी के झरने, प्रकृति के ये वाद्य (नृत्य और गीत मे) खल खल की आवाज से ताल की पूर्ति कर रहा है।

अब ऊपर की पक्तियाँ पढते हुए नीचे के अनुसार कल्पना चित्र खडे करो, इससे वे बराबर याद रह जायेगी।

अनिल दल बजावे कुज मा पेसी वसी

[अनिल भाई वृक्षो के कुज मे प्रविष्ट होकर वशी बजाते है]

तरुवर-वर शाखा नृत्य की धून चाले

[तरूलता नाम की सुन्दर लडकी नृत्य कर रही है।

विहगगण मधुरा सूर थी गीत गाय

[विवाह का प्रसग चल रहा है उसमे गीत गा रही है]

खल खल नादे निर्झरो ताल आये

(हजारीमल मृदंग बजाता हुआ ताल दे रहा है।)

अनिल भाई की वंशी, तरूलता का नृत्य, विवाह के गीत और हजारीमल का ताल, बस यह कल्पना-चित्र भावो के द्वारा बराबर सकलित होने पर विस्मृत नही होगा। तुम इन चार पक्तियों को सरलता से बोल सकोगे।

यह वर्णन मानसिक क्रिया को समझने के लिए किया है, इसलिए लम्बा लगता है पर मन को एक बार अभ्यास होने पर वह क्रिया इतनी शीघ्रता से होती है कि वह सब स्वाभाविक सा बन जाता है।

कविता को याद रखने मे इस पद्धति का अनुसरण करो।

यथार्थ घटना और अङ्को को याद रखने मे भी रेखाओ का उपयोग सफलतापूर्वक किया जा सकता है जैसे कि—भारत मे लोहा कहाँ-कहाँ निकलता है? तो भारत का नक्शा देख कर उसके जिस

कविता को याद रखने मे भी रेखाएँ उपयोगी साबित होती है ।

कवितापाठ मे कहाँ विराम लेना चाहिये, यह ठीक-ठीक समझ लेना अपेक्षित है । यदि विचार के मुख्य केन्द्रो पर विराम लिया जायेगा तो वह बराबर सफल होगी । जैसे कि—

मालिनी छन्द

अनिल दल बजावे कुंज मा पेसी वसी,
तरुवर वर शाखा - नृत्य नी धून चाले;
विहगगण मधुरा सूर थी गीत गाय,
खल खल नादे निर्झरो ताल आये ।

ये पक्तिया इस पुस्तक के लेखक द्वारा लिखित 'अजन्ता का यात्री' नामक खण्डकाव्य से उद्धृत है । इन पक्तियो के वाचन से यह बात अच्छी तरह समझी जा सकती है कि इनका मुख्य उद्देश्य प्रकृति का सगीत बताना है, इसलिए उसका वर्णन उनमे क्रमश. किया गया है । इसलिए रेखाएँ नीचे के क्रम से खीचनी चाहिये—

अनिलदल बजावे कु ज मा पेसी वशी,
तरुवर वर शाखा-नृत्य नी धून चाल,
विहगगण मधुरा सूर थी गीत गाय,
खल खल नादे निर्झरो ताल आये ।
अनिल दल-वशी तरुवर-नृत्य विहगगण सगीत निर्झरो-ताल ।
वशी, नृत्य, गीत और ताल ।

वशी—अनिलदल बजावे कु ज मे प्रविष्ट वशी ।

नृत्य—तरुवर वर शाखा नृत्य की धुन चले ।

गीत—विहगगण मधुर स्वर से गीत गाये ।

ताल—खल खल शब्द से निर्झर ताल देते है ।

कविता को पहले अच्छी तरह समझ लेना चाहिए और फिर याद करने का प्रयत्न करना चाहिए । ऐसा करने पर वह बिना रटे ही बराबर याद रह जाती है । छन्द की लय आती हो तो याद रखने मे काफी सरलता हो जाती है ।

अब पहले इन पक्तियो का अर्थ समझ लो। अनिल का दल अर्थात् पवन की सेना वृक्षो के कुज मे प्रविष्ट होकर वशी बजा रही है। तरुवर अर्थात् वृक्ष, उसकी वर शाखा अर्थात् सुन्दर डालियाँ, उनका जो नृत्य है, वह धुन मचा रहा है। विहगगण अर्थात् पक्षी समूह मधुर स्वर मे गीत गा रहा है और निर्झर अर्थात् पानी के झरने, प्रकृति के ये वाद्य (नृत्य और गीत मे) खल खल की आवाज से ताल की पूर्ति कर रहा है।

अब ऊपर की पक्तियाँ पढते हुए नीचे के अनुसार कल्पना चित्र खडे करो, इससे वे बराबर याद रह जायेगी।

अनिल दल बजावे कुंज मा पेसी वसी

[अनिल भाई वृक्षो के कुज मे प्रविष्ट होकर वशी बजाते है]

तरुवर-वर शाखा नृत्य की धून चाले

[तरूलता नाम की सुन्दर लडकी नृत्य कर रही है।

विहगगण मधुरा सूर थी गीत गाय

[विवाह का प्रसग चल रहा है उसमे गीत गा रही है]

खल खल नादे निर्झरो ताल आये

(हजारीमल मृदग बजाता हुआ ताल दे रहा है।)

अनिल भाई की वशी, तरूलता का नृत्य, विवाह के गीत और हजारीमल का ताल, बस यह कल्पना-चित्र भावो के द्वारा बराबर सकलित होने पर विस्मृत नही होगा। तुम इन चार पक्तियो को सरलता से बोल सकोगे।

यह वर्णन मानसिक क्रिया को समझने के लिए किया है, इसलिए लम्बा लगता है पर मन को एक बार अभ्यास होने पर वह क्रिया इतनी शीघ्रता से होती है कि वह सब स्वाभाविक सा बन जाता है।

कविता को याद रखने मे इस पद्धति का अनुसरण करो।

यथार्थ घटना और अङ्को को याद रखने मे भी रेखाओ का उपयोग सफलतापूर्वक किया जा सकता है जैसे कि – भारत मे लोहा कहाँ-कहाँ निकलता है? तो भारत का नक्शा देख कर उसके जिस

जिस भाग मे लोहा निकलता है, उनके नीचे रेखा खीच दो। इसी प्रकार दूसरी धातु, उपज, उद्योग आदि समझने चाहिए। मार्गों को याद रखने के लिए भी नक्शे मे एक दूसरे स्थल को जोडती हुई रेखायें खीचने से उनकी दिशायें सरलता से याद रह जाती है।

अङ्को का मुख्य कार्य परिणाम बताना है। इसलिए मात्र अङ्क लिखने की अपेक्षा यदि उनके साथ रेखाओ का उपयोग किया जावे तो उनकी स्मृति मन मे दृढता से अङ्कित हो सकती है जैसे कि—

उपज सन् १९४८ की ४० प्रतिशत

उपज सन् १९४९ की ७० प्रतिशत

उपज सन् १९५० की ५० प्रतिशत

अब आज यथार्थ देखने के लिए रेखाओ का उपयोग करो और देखो कि वह कितनी शीघ्रता से याद रहता है—

रेखाओ का उपयोग तुरन्त ही तुलनात्मक विचार देता है। सन् १९४९ की उपज सबसे अधिक थी। सन् १९५० की उससे दो खाना कम थी और सन् १९४८ की उससे भी एक खाना कम थी। इसलिए मात्र १९४८ की ४० प्रतिशत उपज याद रखने से तीन साल की उपज बराबर याद रह सकती है। केवल अङ्को से मन मे चित्र खडा नही होता, जब कि रेखाये एक प्रकार का चित्र खडा कर देती हैं। इस कारण वे सरलता मे वृद्धि करती है।

जहाँ वस्तुओ के विविध परिमाण को अथवा तरतम भावो को याद रखना हो, वहाँ अलग-अलग रग की पेसिलो का उपयोग कर सकते हैं जैसे कि उत्कृष्ट भाव के लिए लाल, मध्यम भाव के लिए बादामी, सामान्य भाव के लिए हरा, मन मे भी रगीन रेखायें

खींची जा सकती है जो कल्पना के माध्यम से आकृति और रंग को मन मे बराबर ला सकते है उनके लिए यह सरल है।

रेखाओ के लिए अलग-अलग प्रकार के चिह्नो का उपयोग भी याद रखने मे अच्छी मदद करता है। उदाहरण के तौर पर—१ २ ३ ३ २ १ २ ४ ६ ६ ४ २ ३ ६ ९, इन अङ्को को ऐसे के ऐसे याद रखना हो तो बहुत कठिन लगता है पर उनमे यदि निम्नोक्त चिह्न किये जाएँ तो सरलता होती है, जैसे कि—१२३, ३२१, २४६, ६४२, ३६९।

भाषा मे भी अल्पविराम, अर्धविराम, पूर्ण विराम, प्रश्नार्थ चिह्न, आश्चर्य विराम-चिह्न और अवतरण-चिह्न आदि उनका अर्थ समझने मे सहायता करते है। इसलिए याद रखना सरल हो जाता है, परन्तु अपने शिक्षण क्रम मे उनका उपयोग कैसे करना चाहिए उस सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान नही मिलता, इसलिएँ उनकी होनी चाहिए वैसी महत्ता अपने दिल मे नही बैठी। महान् प्रसिद्ध लेखक भी इन चिह्नो के विषय मे होने चाहिए उतने व्यवस्थित नही होते है। इसी कारण पाठको को उनके लेखन का भाव जितना होना चाहिए उतना हृदयगम नही हो पाता।

प्रिय बन्धु! यह पत्र प्रमाण मे कुछ लम्बा हो गया है, पर तुम इस विषय के रसिक हो, इसलिए तुम्हे लम्बा नही लगेगा, ऐसा मानता हूँ। विशेष बाद मे।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

वाक्यो को याद रखने मे रेखाओ का उपयोग, कविता, घटना और अ को को याद रखने मे उनका उपयोग, गणित, भाषा आदि मे व्यवहृत चिह्नो का स्मरण शक्ति की दृष्टि से महत्त्व।

□

पत्र सतरहवा

वर्गीकरण

प्रिय बन्धु !

सिद्धान्तो का उपयोग करने से याद रखना कितना सरल हो जाता है, उसके कुछेक अनुभव तुम प्राप्त कर चुके हो । इस प्रकार सिद्धान्तो का उपयोग करना,एक प्रकार की कला है और इसी कारण इस विषय को स्मरण-कला के रूप मे प्रकट किया गया है । इस पत्र मे इस कला का एक विशेष पहलू प्रकट करना चाहता हूँ, वह है वर्गीकरण का सिद्धान्त ।

अनेक वस्तुओ के समूह मे से समान गुण वाली वस्तुओ को पृथक्-पृथक छाटना वर्गीकरण कहलाता है । जैसे कि—एक छाबडी मे निम्नोक्त खिलौने भरे हुए है—तोता, गाय, दाडिम, चिडिया, आम, हडा, हाथी, अमरूद, घोडा, मोर, थाली और कटोरा ।

हम उन्हे निम्नोक्त प्रकार से पृथक् करे तो वह उनका वर्गीकरण कहलाता है ।

(१)	(२)	(३)	(४)
तोता	गाय	दाडिम	हडा
चिडिया	हाथी	आम	थाली
मोर	घोडा	अमरूद	कटोरा

इसमे खिलौनो के चार वर्ग किए है उनमे प्रथम वर्ग पक्षियो का है, दूसरा वर्ग पशुओ का है, तीसरा वर्ग फलो का है और चौथा वर्ग बर्तनो का है । अब जो नाम ऊपर लिखे गये है, वैसे ही याद रखने हो तो बहुत परिश्रम करना पडता है । जब कि उनका वर्गीकरण करने पर एक वस्तु के याद आते ही दूसरी भी याद आ जाती है । सरलता से सब याद रह जाती है ।

मन मे कल्पना करो कि निम्नोक्त अठारह वस्तुएँ एक कागज पर लिखी हुई है—थाली, नारगी, कागज, हडा, लोटा, मौसम्बी, टेबुल, कटोरा, अमरूद, खडी, चिकू, चाकू, आम, कुर्सी, चम्मच, दाडिम, कलम, प्याला ये वस्तुएँ तुम्हे याद रखनी है, तो उनका वर्गीकरण नीचे के मुताबिक करना चाहिए—

(१)	(२)	(३)
थाली	नारगी	कागज
हडा	मौसम्बी	टेबुल
लौटा	अमरूद	खडी
कटोरा	चिकू	चाकू
चम्मच	आम	कुर्सी
प्याला	दाडिम	कलम

इस वर्गीकरण को भी अभी एक बार फिर अधिक व्यवस्थित करो, तो वह नीचे के मुताबिक हो सकता है—

थाली	नारगी	कुर्सी
कटोरा	मौसम्बी	टेबुल
लोटा	दाडिम	खड़ी
प्याला	अमरूद	कलम
चम्मच	आम	कागज
हडा	चिकु	चाकू

इस प्रकार वर्गीकरण होने से अठारह नाम अब तुम सरलता से याद कर सकते हो। उसमे प्रथम इतनी ही बात याद रखने की है कि बरतन, फल, आफिस का सामान। सामान्य मनुष्य को भी ये याद रह सकती है। जब बरतनो के नाम याद करोगे तब स्वाभाविक रीति से ही थाली, कटोरा याद आ जायेगा, उनके साथ ही लोटा, प्याला भी याद आ जाएगा और थोडे से विचार मात्र से चम्मच और हडा भी स्मृति पट पर उतर आएँगे। ये समस्त वस्तुएँ निकटता का साहचर्य रखती है। इसलिए एक बार इनका कल्पना-चित्र मन मे खीचा कि वे समग्र वस्तुएँ स्वाभाविक ही याद आ जाती

है। उसी प्रकार फलो का उनमे नारगी—मौसम्बी मे आकार की समानता है और निकटता भी है। बन सके जहाँ तक नारगी-मौसबी आदि वस्तुएँ साथ ही बेची जाती है। इसलिए ये सरलता से याद आ जाती है। दाडिम और अमरूद के बीच निकटता का साहचर्य है। आम और चिकू के बीच आकार की समानता है और फलो का विचार करते ही ये फल सामान्यतया याद आ जाते है। वैसे ही आफिस के सामान का। आफिस का सामान कहते ही कुर्सी-टेबुल याद आ जाएगी। उनके साथ खडी-कलम भी याद आ जाएगी और वे याद आये कि कागज तथा चाकू भी याद आ जाएँगे। इस प्रकार वस्तुओ का वर्गीकरण करने से खूब सरलता-पूर्वक याद रह सकता है।

अब अनेक विषयो के ज्ञान का समिलन करना होता है, उन्हे व्यवस्थित प्रकार से सगृहीत रखना होता है, तब उनका वर्गीकरण करके याद रखने पर अच्छी तरह से याद रह सकता है जैसे कि—

(१) भाषा —गुजराती, मराठी, हिन्दी, सस्कृत और अग्रेजी।

(२) इतिहास—गुजरात का इतिहास, भारत का इतिहास, ब्रिटेन का इतिहास।

(३) भूगोल—प्राकृतिक भूगोल, व्यापारी भूगोल, प्राथमिक भूगोल।

(४) गणित—अक गणित, बीज गणित, त्रिकोणमिति।

(५) प्रकीर्ण—सगीत, व्यायाम, विज्ञान।

चित्ता, वन्दर, कुत्ता आदि नाम नही गिनाएँगे, क्योकि हमने उनका खुरवाले पशु वर्ग के साथ सबन्ध नही जोड रखा है।

एक ही समान हिस्सेवाली या उतार-चढाव वाली वस्तुओ मे क्रमशः सबध किये हुए विषयो मे भी एक प्रकार का वर्ग ही है। इस कारण एक का स्मरण होते ही अवशिष्ट सभी विपयो का स्मरण अपने आप हो जाता है। जैसे कि—

(१) सात वार—रवि, सोम, मगल, वुध, गुरु, शुक्र, शनि।

इस वार समुदाय मे से कोई भी याद आए फिर बाकी के समस्त वार क्रमश. याद आ जाएँगे। जैसे कि सन् १९५० के फरवरी महीने की प्रथम तारीख को कौन सा वार था ? यह याद करने का प्रयत्न करते है, पर याद नही आ रहा है। उस स्थिति मे यह स्मरण होता है। कि सन् १९५० की २६ जनवरी भारत का सार्वभौम प्रभुसता का गणतन्त्र दिवस है, और उस दिन गुरुवार था और शीघ्र ही निम्नोक्त विचार धारा चलती है—

२६	जनवरी को	गुरुवार
२७	,, ,,	शुक्रवार
२८	,, ,,	शनिवार
२९	,, ,,	रविवार
३०	,, ,,	सोमवार
३१	,, ,,	मगलवार
१	फरवरी को	बुधवार

इस प्रमाण से हमे दृढ निश्चय हो जाता है कि प्रथम को वुधवार था।

(२) तिथिया—१ से १५ (पूनम तक)
१ से १५ (अमावस्या तक)

(३) महीने—कार्तिक से आश्विन

(४) ऋतुएँ—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और
इनमे हरेक ऋतु दो-दो महीनो की होती है।

(५) घडी—दिन के तीस समान भाग।

है। उसी प्रकार फलो का उनमे नारगी—मौसम्बी मे आकार की समानता है और निकटता भी है। बन सके जहाँ तक नारगी-मौसबी आदि वस्तुएँ साथ ही बेची जाती है। इसलिए ये सरलता से याद आ जाती है। दाडिम और अमरूद के बीच निकटता का साहचर्य है। आम और चिकू के बीच आकार की समानता है और फलो का विचार करते ही ये फल सामान्यतया याद आ जाते है। वैसे ही आफिस के सामान का। आफिस का सामान कहते ही कुर्सी-टेबुल याद आ जाएगी। उनके साथ खडी-कलम भी याद आ जाएगी और वे याद आये कि कागज तथा चाकू भी याद आ जाएँगे। इस प्रकार वस्तुओ का वर्गीकरण करने से खूब सरलता-पूर्वक याद रह सकता है।

अब अनेक विषयो के ज्ञान का समिलन करना होता है, उन्हे व्यवस्थित प्रकार से सगृहीत रखना होता है, तब उनका वर्गीकरण करके याद रखने पर अच्छी तरह से याद रह सकता है जैसे कि—

(१) भाषा —गुजराती, मराठी, हिन्दी, सस्कृत और अग्रेजी।

(२) इतिहास—गुजरात का इतिहास, भारत का इतिहास, ब्रिटेन का इतिहास।

(३) भूगोल—प्राकृतिक भूगोल, व्यापारी भूगोल, प्राथमिक भूगोल।

(४) गणित—अक गणित, बीज गणित, त्रिकोणमिति।

(५) प्रकीर्ण—सगीत, व्यायाम, विज्ञान।

किसी भी विषय को ग्रहण करते समय यदि उनका सबध वर्ग के साथ बराबर जोडा हुआ हो तो वे सरलता से याद आ जाते है। जैसे कि २० पशुओ को याद करना है, तो मन मे एक के बाद एक निम्नोक्त नाम कौधेंगे—गाय, भैस, बकरी, भेड, हाथी, घोडा, खच्चर, ऊँट, सियाल, खरगोश (शश), बाघ, सिंह, रीछ, चित्ता, हिरण, रोझ, सूअर, बन्दर, कुत्ता, और बिल्ली परन्तु उस समय टेबुल, दीपक, चमच आदि याद नही आएँगे कारण कि उनका सबध पशु वर्ग के साथ जुडा हुआ नही है। उसी प्रकार यदि हमे यह कहा जाए कि खुरवाले पशुओ के नाम बोलो तो हम निम्नोक्त पशुओ के नाम गिनाएँगे—गाय, भैस, बकरी, भेड, घोडा, खच्चर, हिरण, रोझ आदि। पर उस समय सिह, वाघ,

चित्ता, बन्दर, कुत्ता आदि नाम नही गिनाएँगे, क्योकि हमने उनका खुरवाले पशु वर्ग के साथ सबन्ध नही जोड रखा है।

एक ही समान हिस्सेवाली या उतार-चढाव वाली वस्तुओ मे क्रमशः सबध किये हुए विषयो मे भी एक प्रकार का वर्ग ही है। इस कारण एक का स्मरण होते ही अवशिष्ट सभी विषयो का स्मरण अपने आप हो जाता है। जैसे कि—

(१) सात वार—रवि, सोम, मगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

इस वार समुदाय मे से कोई भी याद आए फिर बाकी के समस्त वार क्रमश. याद आ जाएँगे। जैसे कि सन् १९५० के फरवरी महीने की प्रथम तारीख को कौन सा वार था ? यह याद करने का प्रयत्न करते है, पर याद नही आ रहा है। उस स्थिति मे यह स्मरण होता है। कि सन् १९५० की २६ जनवरी भारत का सार्वभौम प्रभुसता का गणतन्त्र दिवस है, और उस दिन गुरुवार था और शीघ्र ही निम्नोक्त विचार धारा चलती है—

२६	जनवरी	को	गुरुवार
२७	,,	,,	शुक्रवार
२८	,,	,,	शनिवार
२९	,,	,,	रविवार
३०	,,	,,	सोमवार
३१	,,	,,	मगलवार
१	फरवरी	को	बुधवार

इस प्रमाण से हमे दृढ निश्चय हो जाता है कि प्रथम फरवरी को बुधवार था।

(२) तिथिया—१ से १५ (पूनम तक)
१ से १५ (अमावस्या तक)

(३) महीने—कार्तिक से आश्विन

(४) ऋतुएँ—बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर। इनमे हरेक ऋतु दो-दो महीनो की होती है।

(५) घडी—दिन के तीस समान भाग।

हैं। उसी प्रकार फलो का उनमे नारगी—मौसम्बी मे आकार की समानता है और निकटता भी है। बन सके जहाँ तक नारगी-मौसबी आदि वस्तुए साथ ही बेची जाती है। इसलिए ये सरलता से याद आ जाती है। दाडिम और अमरूद के बीच निकटता का साहचर्य है। आम और चिकू के बीच आकार की समानता है और फलो का विचार करते ही ये फल सामान्यतया याद आ जाते है। वैसे ही आफिस के सामान का। आफिस का सामान कहते ही कुर्सी-टेबुल याद आ जाएगी। उनके साथ खडी-कलम भी याद आ जाएगी और वे याद आये कि कागज तथा चाकू भी याद आ जाएँगे। इस प्रकार वस्तुओ का वर्गीकरण करने से खूब सरलता-पूर्वक याद रह सकता है।

अब अनेक विषयो के ज्ञान का समिलन करना होता है, उन्हे व्यवस्थित प्रकार से सगृहीत रखना होता है, तब उनका वर्गीकरण करके याद रखने पर अच्छी तरह से याद रह सकता है जैसे कि—

(१) भाषा —गुजराती, मराठी, हिन्दी, सस्कृत और अ ग्रेजी।

(२) इतिहास—गुजरात का इतिहास, भारत का इतिहास, ब्रिटेन का इतिहास।

(३) भूगोल—प्राकृतिक भूगोल, व्यापारी भूगोल, प्राथमिक भूगोल।

(४) गणित—अ क गणित, बीज गणित, त्रिकोणमिति।

(५) प्रकीर्ण—सगीत, व्यायाम, विज्ञान।

किसी भी विषय को ग्रहण करते समय यदि उनका सबध वर्ग के साथ बराबर जोडा हुआ हो तो वे सरलता से याद आ जाते हैं। जैसे कि २० पशुओ को याद करना है, तो मन मे एक के बाद एक निम्नोक्त नाम कौधेंगे—गाय, भैस, बकरी, भेड, हाथी, घोडा, खच्चर, ऊँट, सियाल, खरगोश (शश), बाघ, सिह, रीछ, चित्ता, हिरण, रोभ, सूअर, बन्दर, कुत्ता, और बिल्ली परन्तु उस समय टेबुल, दीपक, चमच आदि याद नही आएँगे कारण कि उनका सबध पशु वर्ग के साथ जुडा हुआ नहीं है। उसी प्रकार यदि हमे यह कहा जाए कि खुरवाले पशुओ के नाम बोलो तो हम निम्नोक्त पशुओ के नाम गिनाएँगे—गाय, भैस, बकरी, भेड, घोडा, खच्चर, हिरण, रोभ आदि। पर उस समय सिह, बाघ,

चित्ता, बन्दर, कुत्ता आदि नाम नही गिनाएँगे, क्योकि हमने उनका खुरवाले पशु वर्ग के साथ सबन्ध नही जोड रखा है।

एक ही समान हिस्सेवालो या उतार-चढाव वाली वस्तुओ मे क्रमशः सबध किये हुए विषयों मे भी एक प्रकार का वर्ग ही है। इस कारण एक का स्मरण होते ही अवशिष्ट सभी विषयो का स्मरण अपने आप हो जाता है। जैसे कि—

(१) सात वार—रवि, सोम, मगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

इस वार समुदाय मे से कोई भी याद आए फिर बाकी के समस्त वार क्रमश. याद आ जाएँगे। जैसे कि सन् १९५० के फरवरी महीने की प्रथम तारीख को कौन सा वार था? यह याद करने का प्रयत्न करते है, पर याद नही आ रहा है। उस स्थिति मे यह स्मरण होता है। कि सन् १९५० की २६ जनवरी भारत का सार्वभौम प्रभुसता का गणतन्त्र दिवस है, और उस दिन गुरुवार था और शीघ्र ही निम्नोक्त विचार धारा चलती है—

२६ जनवरी को	गुरुवार
२७ ,, ,,	शुक्रवार
२८ ,, ,,	शनिवार
२९ ,, ,,	रविवार
३० ,, ,,	सोमवार
३१ ,, ,,	मगलवार
१ फरवरी को	बुधवार

इस प्रमाण से हमे दृढ निश्चय हो जाता है कि प्रथम फरवरो को बुधवार था।

(२) तिथिया—१ से १५ (पूनम तक)
१ से १५ (अमावस्या तक)
(३) महीने—कार्तिक से आश्विन
(४) ऋतुएँ—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर।
इनमे हरेक ऋतु दो-दो महीनो की होती है।
(५) घडी—दिन के तीस समान भाग।

(६) पल—घडी के साठ समान भाग ।
(७) विपल—पल के साठ समान भाग ।
(८) घण्टा—दिन के चौबीस समान भाग ।
(९) मिनट—घण्टा के साठ समान भाग ।
(१०) सैकिण्ड—मिनट के साठ समान भाग ।

चढता क्रम अथवा उत्तरोत्तर मोटे विषय—

१ एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नव, दश आदि सख्या ।

२ एक, तीन, पाँच, सात, नव, ग्यारह आदि विषम सख्या ।
३ दो, चार, छह आठ, दश, बारह आदि सम सख्या ।
४ एक, दो, चार, आठ, सोलह, बत्तीस, चौसठ आदि द्विगणित होती हुई सख्या ।

५ एक, तीन, नव, सत्तावीस, इक्यासी, दो सौ तियाँलिस आदि त्रिगुणित सख्या ।

६ एक, चार, सोलह, चौसठ, दो सौ छप्पन आदि चौगुनी होती हुई सख्या ।

७ एक, दस, सौ, हजार, दस हजार, लाख, दस लाख, करोड, दस करोड, अरब, दस अरब आदि दस गुनी होती हुई सख्या ।

८ मनुष्य, कुटुम्ब, ज्ञाति, समाज, राष्ट्र और विश्व (रचना) ।
९ हवालदार, मुखिया, कोटवाल, पटवारी, मामलतदार, जिलाधीश, प्रान्ताधिकारी, राजा (अधिकार)

१० कोठरी, मजिल, मकान की मञ्जिल, सकडी गली, मोहल्ला, ग्राम, इलाका, जिला, प्रान्त, देश, खण्ड, दुनियाँ (स्थल विभाग)

उतरता क्रम अथवा क्रमश. उतरते विषय—उपर्युक्त हरेक विषय उल्टे क्रम से लेने पर उनका क्रम उल्टा गिना जाता है । जैसे कि—

१ दस, नव, आठ, सात, छह, पाँच, चार, तीन, दो, एक ।
२ नव, सात, पाँच, तीन, एक ।
३. बारह, दस, आठ, छह, चार, दो, एक ।
४ चौसठ, बत्तीस, सोलह, आठ, चार, दो, एक ।
५ इक्यासी, सत्तावीस, नव, तीन, एक ।

६ दो सौ छप्पन, चोसठ, सोलह, चार, एक ।
७ लाख, दस हजार, सौ, दस, एक ।
८ विश्व, देश, समाज, ज्ञाति, कुटुम्ब, व्यक्ति ।
९. राजा, प्रान्ताधिकारी, जिलाधीश, मामलतदार, पटवारी, कोटवाल, मुखिया, हवालदार ।
१०. दुनिया, खण्ड, देश, प्रान्त, जिला, इलाका, ग्राम, मोहल्ला, सकडी गली, मकान की मञ्जिल, मञ्जिल, कोठरी ।

सख्या मे विभक्त की हुई सख्या भी उतरते क्रम मे ही आए । जैसे कि—

११ दुगुना, पूर्ण, आधा, चतुर्थ भाग, दो आना, एक आना ।

१२. $\frac{१}{२}, \frac{१}{४}, \frac{१}{८}, \frac{१}{१६}$ आदि

$\frac{१}{१०}$ $\frac{१}{१००}$ $\frac{१}{१०००}$ $\frac{१}{१००००}$ आदि

अब इस वर्गीकरण से याद करना कितना सरल हो जाता है, उसे देखो ।

बम्बई शहर मे ६५ लाख मनुष्यो की बस्ती है । इनमे यदि हरेक व्यक्ति को मात्र क्रमाक ही दिया जाए तो वह सख्या एक से लेकर ६५ लाख तक पहुँच जायेगी । इसलिए किसी व्यक्ति का क्रम पाँच आये तो कोई का २५ आये, किसी का २५६ आये तो किसी का २०९२ आये, किसी का ३२१८७ आये तो किसी का ७९५३६२ आये और किसी का १६५८४९२ आए । अब यदि हमारे पास इस प्रकार की ही व्यवस्था हो तो क्या किसी भी व्यक्ति का पत्र उसको पहुँचाया जा सकता है ? इस स्थिति मे तो हमे हरेक व्यक्ति को क्रमश खोजना पडे, इसलिए १६५८४९२ क्रमाक वाले व्यक्ति तक पहुँचते, दिवस, महीने. वर्ष, कई दशक भी निकल जाये और फिर मनुष्य जाति विहरणशील है अत. किसी क्रम से भी नही खोजा जा सकता और कदाचित् खोजा भी जाय तो कितना समय लग जाए ? अगर उसी व्यक्ति को वर्गीकरण के आधार पर खोजा जाए तो एक या दो घडी मे ही खोज हो सकती है । जैसे कि—व्यक्ति १६५८,४९२, न ६५ चोथी मजिल, स्वामी नारायण भवन, तीसरा मोहवाडा, भूलेश्वर, बम्बई ।

इस वर्गीकरण से यह समझा जाता है कि—

(१) बम्बई मे अन्य किसी मोहल्ले की खोज किये विना सिर्फ भूलेश्वर की ही खोज करनी।

(२) भूलेश्वर मे भी तीसरे भोइवाडा मे ही जाना।

(३) तीसरे भोइवाडे मे भी दूसरे किसी मकान मे न जाकर, स्वामी नारायण भवन मे ही जाना।

(४) स्वामी नारायण भवन मे भी अन्य किसी मजिलो मे न भटक कर सीधा चौथी मजिल मे चढना।

(५) चौथी मजिल मे भी जहाँ ६५ न लिखे है वहाँ पहुँचना।

(६) यहा ही उस व्यक्ति का पता लगेगा।

इस प्रकार उतरते क्रम का अनुकरण करने से निर्धारित मनुष्य को खोज निकालने मे बहुत ही सरलता हो गई अथवा यह कहा जा सकता है कि जो कार्य लगभग अशक्य जैसा था वह शक्य बन सका।

एक दूसरे उदाहरण से भी यह बात समझलो।

एक पुस्तकालय मे १०००० पुस्तके है। अब इन पुस्तको के यदि सिर्फ क्रमाक लगे हो, तो कोई भी पुस्तक को खोजते कितना समय लगे? उदाहरण के तौर पर तुम्हे उनमे से छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र देखना हो तो सूचि-पुस्तिका के पृष्ठो पर पृष्ठ उलटने पडे। इनमे किसी भी प्रकार की कोई दूसरी व्यवस्था न हो, तो समस्त नाम क्रमश बाँचने पडे और वे पुस्तकें भी यदि सीधे खाने मे लिखी हो तो नाक मे दम ही आ जाए, पर इस पुस्तकालय मे यदि पुस्तको का वर्गीकरण किया हुआ हो और उसमे भी विभाग किए हुए हो तथा उनकी भी अनुक्रमणिका या अकारादि अनुक्रम बनाया हुआ हो तो वह पुस्तक तुम एक ही मिनट मे खोज सकते हो। उसके लिए तुम्हे सूचि-पुस्तिका का प्रथम पत्र देखकर इतना ही जान लेना है कि जीवन-चरित्रो की सूचि कौन से पन्ने मे है? उसके बाद उस पन्ने को उलट कर उसमे इतना ही देखना है कि ऐतिहासिक जीवन चरित्र कौन से पन्ने मे है? उसके बाद ऐतिहासिक पुरुषो के जीवन चरित्र की अकारादि अनुक्रमणिका देखनी है बस इतने मे तुरन्त छत्रपति शिवाजी की पुस्तक हाथ लग जाएगी।

जिन ऑफिसो मे प्रतिदिन सैकडो पत्र आते है, वे क्या करते है ? पत्रो के विभाग करते है, उनमे भी विषय-विभाग करते है और उनकी फाइलें रखते है कि जिनमे अकारादि अनुक्रम होता है। इससे ही तीन महीने पहले आया हुआ पत्र खोजा जा सकता है और बारह महीने पहले आया पत्र भी पाया जा सकता है। यदि ऐसी व्यवस्था न हो तो कोई कागज हाथ ही न लगे और उसके अभाव मे व्यापार-कार्य भी अशक्य हो जाए।

हमारे मन की व्यवस्था भी इसी प्रकार की है। उसमे स्पर्श, रस, गन्ध, रूप, शब्द आदि के लाखो-करोडो सस्कार भरे हुए है। फिर भी विचार करते ही उनमे से अमुक ही विचार थोडी देर मे बराबर निकल आता है। आज से पच्चीस वर्ष पूर्व घटी एक घटना या चालीस वर्ष पहले बना बनाव भी बरावर याद आ जाता है। उनमे यह वर्गीकरण ही आधारभूत है, जिसका कि सामान्य मनुष्यो को ख्याल नही आता है, परन्तु जो अपने विचारो का पृथक्करण थोडे बहुत अ श मे कर सकते है, वे इस विषय को बराबर समझ सकेगे।

मै मानता हू कि इतने विवेचन से वर्गीकरण का तात्पर्य तुम बराबर समझ गये हो।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

स्मरण-कला, वर्ग-वर्गीकरण, उदाहरण, समान विभाग, चढता क्रम, उतरता क्रम, व्यवस्था और त्वरा के लिए उनकी अति उपयोगिता।

□

पत्र अठारहवाँ

म ो उप ोगि ा

प्रिय बन्धु !

व्यतीत हुए समय के प्रमाण मे तुम्हारी प्रगति सन्तोपकारक है। तुम्हारा उत्साह और कार्य करने की लगन को देखकर सचमुच मे ही मै बहुत प्रसन्न हूँ। मै चाहता हूँ कि इस विषय मे दूसरे साधक भी तुम्हारा अनुकरण करे।

इस पत्र मे तुम्हारा ध्यान वर्गीकरण की पूर्ति रूप क्रम की महत्ता के प्रति खीचना चाहता हूँ।

(१) निम्नोक्त अ क क्रम मे है—

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ६।

ये अ क व्युत्क्रम मे निम्नोक्त है—

२, ३, १, ४, ६, ५, ८, ७, ९।

३, २, १, ६, ४, ५, ७, ९, ८।

४, १, २, ३, ६, ७, ८, ५, ९।

९, ७, ५, ८, ४, १, ३, २, ६ आदि।

(२) नीचे की सख्या भी एक प्रकार से क्रम मे है—

५, ६, ७, ८, ६।

७३, ७५, ७७, ७९।

२५६, ३५६, ४५६, ५५६, ६५६, ७५६।

१२२४, १३२४, १४२४, १५२४, १६२४, १७२४।

ये सख्याये जब व्युत्क्रम मे आती है यो बनती है—

७ ६, ५, ८, ९।

७५ ७७, ७३, ७९।

४५६, ६५६, २५६, ७५६, ५५६, ३५६।

१४२४, १६२४, १२२४, १७२४, १५२४, १३२४।

(३) निम्नलिखित शब्द क्रम मे है—
अहमदाबाद आबू, ईडर, ईगतपुरी, उमरेठ, ऊना, एरणपुरा,
ऐलाक्ष, ओगणाज, औचित्यपुर, अम्बाला ।

वे ही शब्द व्युत्क्रम मे नीचे की तरह अनेक प्रकार के होने सभव है ।

आबू, उमरेठ, अहमदाबाद, ईगतपुरी, एरणपुरा आदि ।
एरणपुरा, आबू, अहमदाबाद, अम्बाला, ऐलाक्ष आदि ।
उमरेठ, ईडर, एरणपुरा, ओगणाज, आबू आदि ।

(४) नीचे के शब्द भी क्रम मे हैं ।
कसर काजल, किराया, कीट, कुलीन, केला, कोयला ।
मगन, मामा, मीठा, मुख्य, मैसूर, मोहन ।
लक्ष्मी लाड, लिफाफा, लुकारी, लेखन, लोटा ।

ये शब्द व्युत्क्रम मे नीचे के मुताबिक अनेक प्रकार के वन जाते है ।

काजल, मीठा, लक्ष्मी, मगन, कुलीन, मोहन, लोटा, लेखन, मामा, कोयला, मैसूर, लिफाफा, कसर,लाड, केला, किराया आदि ।

अब देखो कि क्रम मे याद रखना कितना सरल है और व्युत्क्रम मे याद रखना कितना कठिन है । अक साख्या लम्बी हो, पर क्रम मे हो तो वह याद रह सकती है । जबकि छोटी होती है पर व्युत्क्रम मे होती है तो उसे याद रखना बहुत मुश्किल होता है । शब्द अधिक हो पर क्रम मे हो तो सरलता से याद रह सकते है । जबकि व्युत्क्रम मे थोडे होते है तब भी बड़ी मुश्किल होती है । इस लिए जिन वस्तुओ को याद रखने की जरूरत हो उन्हे क्रम मे हो सीखना चाहिए जैसे कि—

वार, महीना, वजन का माप, अन्तर का माप, वार को याद रखने के लिए निम्नोक्त पद्धति अपनानी चाहिये—

रविवार, सोमवार, मगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार । यहाँ रविवार सबसे मोटा है, इसलिए रविवार से प्रारम्भ करना उचित लगता है, परन्तु कुछेक ऐसा समझते हैं कि सोमवार से कार्य की शुरुआत होनी चाहिए इसलिए

उसे पहला गिनना चाहिए और अन्त मे छुट्टी लेनी चाहिए। इसलिए रविवार को अन्तिम रखा जाता है। इसमे जो क्रम जिसे अनुकूल हो उसे स्वीकार करें। इसमे कोई अडचन नही परन्तु व्युत्क्रम नही होना चाहिए।

महीनो को नीचे के ढग से याद रखना चाहिए—

कार्तिक, मृगसिर, पोष, माह, फागुन, चैत्र, वैशाख, जेठ, आषाढ, श्रावण, भादव और आश्विन। जो वर्ष का प्रारभ चैत्र से करते है, वे महीनो को निम्न प्रकार से याद रखते है।

चैत्र, वैसाख, जेठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रव, आश्विन, कार्तिक, मृगसिर, पोष, माह और फागुन।

प्राचीन समय मे कुछेक भागो मे वर्ष की शुरूआत श्रावण महीने से होती थी। वहाँ श्रावण, भादव, आश्विन, कार्तिक॰ ॰ आषाढ। इस क्रम से महीने याद रखे जाते थे। हर प्रकार मे कोई एक क्रम ग्रहण किया जाता है और उसमे ही व्यवहार चलता है। अग्रेजी महीनो की शुरूआत जनवरी से होती है, तो वे जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रेल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सेप्टेम्बर, अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर इस क्रम से नाम याद रख सकते है। इसी प्रकार हरेक देश के या समय के प्रचलित महीनो को समझना चाहिए।

वजन को याद रखने के लिए भी उसे किसी अच्छे क्रम मे जचा लेना चाहिए।

अङ्क, सख्या, शब्द और माप जैसे क्रम से सीखे हुए हो तो ही बराबर याद रहते हैं और व्यवहार मे उपयोगी साबित होते है, वैसे अन्य वस्तुएँ भी किसी प्रकार के क्रम से ग्रहण की हुई हो तो ही बराबर याद रहती है। उदाहरण के तौर पर अवयवो के नाम क्रम से सीखे होगे उसे वे बराबर याद रहेगे और जिसने चाहे जेसे ढग से सीखे होगे, तो वह उनमे से किसी न किसी अवयव का नाम जरूर भूल जायेगा।

क्रम से सीखे नाम निम्नलिखित बोले जायेगे—मस्तक, कपाल, आँख, नाक, कान, मुख, गला, कन्धा, हाथ, छाती, पेट, जघा, घुटना, पार्ष्णि अथवा पार्ष्णि, घुटना, जघा, पेट, छाती, हाथ,

कन्धा, गला, मुख, कान, नाक, आँख, कपाल और मस्तक, इन अवयवो को याद करते समय उसकी नजर के समक्ष शरीर आ जाएगा और उसे देखते ही अवयवो का समस्त क्रम याद आ जाएगा। जबकि व्युत्क्रम मे सीखे हुए नाम निम्नोक्त प्रकार मे बोले जायेंगे—

पेट, मस्तक, हाथ, कान, मुँह, पग, मस्तक, गला, कन्धा।

इस प्रकार मे आवश्यक अवयवो के छूटने की और किसी वस्तु के दुहराई जाने की पूरी-पूरी संभावना रहती है। ऊपर की गिनती मे मस्तक दो बार गिना गया है, जबकि कपाल, आँख, नाक, छाती आदि अगो को गिनती ही नही कराई। यह सिद्धान्त सर्वत्र लागू होता है।

एक मित्र के घर में बारह मनुष्य है और उन सब के नाम याद रखने हैं तो क्या करोगे? यदि उनमे दादा हो तो पहले दादा का नाम फिर माता, पिता का नाम, फिर उसकी पत्नी का नाम, बाद मे लडको के नाम, फिर लडकियो के नाम याद रखने चाहिएँ उसके साथ ही यदि सगे-सम्बन्धी हो तो उनके नाम सबसे अन्त मे रखने चाहिए। इस प्रकार का क्रम बनाने से नाम बराबर याद रहेंगे, पर यदि उन्हें व्युत्क्रम से याद रखोगे तो परिणाम अवयवो की गिनती के समान आयेगा।

यदि तुम्हे इतिहास का ज्ञान व्यवस्थित करना हो, तो सर्व प्रथम बीस प्रमुख व्यक्तियो के नाम कालक्रम से याद रखने चाहिये। वह क्रम प्राचीन काल से अर्वाचीन हो, या अर्वाचीन काल से प्राचीन काल हो। अपने यहाँ प्राचीन काल से अर्वाचीन की तरफ आना विशेष पसन्द किया जाता है क्योकि यही हमारी उत्क्रान्ति का मार्ग है, यही बताया जा रहा है—

प्राचीन काल से अर्वाचीन

(१) राम	(प्राचीन)
(२) कृष्ण	(प्राचीन)
(३) महावीर और बौद्ध	(ईस्वी सन् पूर्व ५९९)
(४) चन्द्रगुप्त	(ईस्वी सन् पूर्व ३०० वर्ष के आस पास)
(५) अशोक	(ई. से पूर्व २५० के आस पास)

(६) हर्षवर्धन (" " ६०० ")
(७) शकराचार्य (ई सन् ८०० ")
(८) मुहम्मद गजनवी (ई, १000 वर्ष के आस पास)
(९) पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन (ई स १२०० ')
(१०) अलाउद्दीन (" १३०० "
(११) गुरु नानक (" १४०० ")
(१२) बाबर (सोलहवी सदी)
(१३) हुमायु (")
(१४) अकबर-प्रताप (")
(१५) जहागीर (सतरहवी सदी)
(१६) शाहजहा (")
(१७) औरगजेब-शिवाजी (")
(१८) नाना फडनवीस (अठारहवी सदी)
(१९) लार्ड कर्जन (उगणवीसवी सदी के अन्त मे)
(२०) महात्मा गाधी (वीसवी सदी)

अथवा अर्वाचीन से प्राचीन क्रम से तो महात्मा गाधी, लार्ड कर्जन, नाना फडनवीस से राम ।

(१०) लार्ड कर्जन (उन्नीसवीं सदी के अन्त में)

(११) महात्मा गांधी (बीसवीं सदी)

कहने का आशय यह है कि कालक्रम, स्थलक्रम, गुणक्रम, आदि कोई भी क्रम का अनुसरण करने पर ग्राह्य विषय व्यवस्थित रूप से ग्रहण हो जाता है और जरूरत पडने पर वह क्रमश याद आ सकता है।

पिछले पत्रो का वाचन चालू रखना। एकाग्रता तथा कल्पना के विकास को अभी वृद्धिगत करते रहोगे तो शीघ्र ही समग्र विकास हो सकेगा।

मंगलाकांक्षी
धी०

मनन

क्रम और व्युत्क्रम, अंक, शब्द, वार, महीना, वजन और अन्तर माप के दृष्टा, अवयव कुटुम्ब के नाम, ऐतिहासिक व्यक्तियो की स्मृति।

□

पत्र उगणीसवाँ

व्युत्क्रम मे ो ाना

प्रिय बन्धु !

क्रम की उपयोगिता सम्बन्धी कुछेक विवेचन मैंने पिछले पत्र मे किया था। उसमे क्रम के महत्व को समझाने का प्रयत्न किया था, परन्तु शब्द और अङ्क ही अधिकतर व्युत्क्रम मे सहज होते है और उन्हे उसी प्रकार याद रखना जरूरी होता है।

जैसे कि—'राम सीता दोनो जगल मे गये।'

इसमे रा के बाद म, म के बाद सी, सी के बाद ता, इस तरह सभी अक्षर व्युत्क्रम मे आये हुए है। इसी प्रकार 'हिमालय पहाड जगत् के सभी पर्वतो मे सबसे वडा है।' इस वाक्य मे २३ अक्षर व्युत्क्रम मे आये हुए है।

सख्याओ मे भी वैसे ही है, जैसे कि—८, ४१, ७५, ९२३ (आठ करोड, इकतालीस लाख, पचहत्तर हजार नव सौ तेइस)।

यह सख्या एक राज्य की उपज बताती है। इसलिए इसमे से कोई भी अंक इधर-उधर किया जा सके ऐसा नही है। इसलिए क्रम से उन्हे याद रखना जरूरी है। अब तुम देख सकते हो कि बारह अक्षर या तैबीस अक्षरो को याद करने की अपेक्षा यह काम कठिन है, क्योकि ये शब्द सरलता से याद रह जाते है, पर अंक सरलता से याद नही रह सकते। ऐसा होने का कारण यह है कि शब्द भावो का अनुसन्धान करते है, अर्थात् किसी प्रकार का विचार या किसी प्रकार का चित्र प्रस्तुत करते हैं, जबकि अंक मात्र विशेषण रूप होने से वैसा चित्र प्रस्तुत नही कर सकते। परन्तु पीछे जो सिद्धान्त बताया गया था, उसका यदि हम उपयोग करे तो हमारा कार्य सरल बन जाए। जैसे कि—

"आठ चोरो ने एक ग्राम पर आक्रमण किया, उस समय सात मनुष्यो ने उनका सामना किया, पाँच व्यक्ति भाग गये और नव नष्ट हो गये। शेष मे वे दो घोडो पर सोने, चादी की तीन बोरियाँ जितना माल उठा ले गये।

यह वाक्य एक बार वाँचने या सुनने पर ही याद रह जाएगा, कारण कि उसमे एक बनाव रहा हुआ है। अब उसमे व्यवहृत शब्दो के आधार पर तुम सख्या बोलो, तो बराबर बोल सकोगे, जैसे कि—

आठ चोर	८ चोर शब्द से चार ४ तुरन्त याद आये
एक गाँव	१
सात मनुष्यो ने सामना किया	७
पाँच मनुष्य भाग गये	५
नव नष्ट हो गये	६
दो घोडे	२
तीन बोरियाँ	३

इस प्रकार ८४१, ७५६२३ की सख्या याद आई जिसमे पिछले चिह्न देते ८,४१, ७५, ६२३ की सख्या बराबर बन जाती है।

दूसरी एक यह सख्या लो। जैसे कि—१५, ३८, ४२, १७, ५०३ (पन्द्रह अरब, अडतीस करोड, बियालीस लाख, सतरह हजार, पाँच सौ तीन।)

इस सख्या को यदि तुम कोई भी भाव या क्रिया के साथ सम्बन्धित कर दो तो याद रह जाएगी जैसे कि—एक पच तीन ग्रामो का न्याय करने बैठा, उसमे उसने ८४ पुरुषो और २१ महिलाओ की गवाही ली इस कार्य मे उसे कुल सात दिन और पाँच घण्टे लगे। इतना होने पर भी अन्त मे परिणाम शून्य आया क्योकि उसमे जो तीन वास्तविक अपराधी थे, वे तो हाजिर नही हुए थे;—

यह बात तीन बार बाँचने से याद रह जाती है। उसके आधार पर पूरी सख्या क्रमश याद आ जाती है। जैसे कि—

एक	१
पाँच	५
तीन ग्राम	३
चौरासी पुरुष	८ ४
इक्कीस महिलाएँ	२ १
सात दिन	७
पाच घण्टा	५
परिणाम शून्य	०
तीन अपराधी	३

इस प्रकार १५३८४२१७५०३ उसमे चिह्न देने पर १५, ३८, ४२, १७, ५०३ की सख्या बराबर बन जाती है।

अब तीसरी सख्या लो—

५ २ १ ६ ४ ४ १६१७०३१४६५

इस संख्या को निम्न प्रकार से याद रखा जा सकता है—पाच पुरुष और दो महिलाएँ साथ मे यात्रा कर रहे थे। स्त्रियाँ सोलह शृंगार सजी हुई थी। उन्हे चार चोर सामने मिले। जिनमे एक नया था और एक सत्तर वर्ष का बूढा था। उन्होने हमला किया तब तीन आदमी सामने हुए। एक स्त्री ने भी बहादुरी से सामना किया। उसका परिणाम यह हुआ कि चारो डाकू छक्का पजा कर गये।

अब इस बात को याद करो कि सब अंक बराबर याद आ जायेंगे।

पाँच पुरुष, दो स्त्रियाँ, सोलह शृंगार		५, २, १६
चार चोर		४, ४
एक नव		१६
एक सत्तर वर्ष का		१७०
तीन पुरुष	सामना किया	३
एक स्त्री		१
चार डाकू		४
छक्का पजा		६, ५

इस तरह

५२ १६ ४४ १६ १७० ३१४ ६५ बनी। इस प्रकार सोलह अंको की संख्या तुम सुगमता से याद कर सकते हो।

अब तुम्हारे कुछेक मित्रो के टेलिफोन नंबर लो। वे भी व्युत्क्रम मे ही ग्रथित होते है।

१.	रमणलाल जानी	२८६४२
२	मणिलाल सुतरिया	४५१३६
३.	सी० फडके	३००८८
४	अरदेशर कडाका	६५४२१

यहा हरेक व्यक्ति का नंबर बराबर याद रहे, वैसा करना है। उसमे नाम तो तुम्हे याद है ही, और टेलीफोन के नबरो मे पाच ही अंक हैं, यह बात भी निश्चित है। इसलिए आगे की क्रिया निम्नोक्त करो—

(१) रमणलाल जानी

रमणलाल जानी ने आठ छतरियां फाडी, उसका बिल बियालिस रुपये आये।

रमणलाल के प्रारंभ का अक्षर अंक मे २ जैसा है।
आठ का अर्थ है, ८
छतरियो का " ६
बियालीस का " ४२

दो, आठ और बियालीस का बराबर ख्याल रहेगा तो छतरी मे से छह लेना या छत्तीस, यह भ्रम नही रहेगा। टेलीफोन के अंक पाच ही है। इसलिए उसमे एक अंक तो छह ही है। तुम रमणलाल की बार-बार छतरी फाडने की कल्पना करो और हाथ मे ४२ रु. का बिल है, उसे पढकर आश्चर्य चकित हो रहा है, इस प्रकार का उसका चित्र खीचो, तो जब भी रमणलाल जानी याद आयेगा, तब उपर्युक्त बात याद आ जाएगी, और उससे २८६४२ नबर बराबर याद आएंगे।

(२) मणिलाल सुतरिया

मणिलाल कानो से थोडा बहरा है। चार पाच बार कहें तब सुनता है। उससे एक बार तो छत्तीस बार कहना पडा था।

यह कल्पना आश्चर्यजनक और विचित्र है, इसलिए बराबर याद रह जाएगा। चार-पाच बार के ४५ और १ बार छत्तीस दफे कहना पडा। एक बार उसका १ और छत्तीस दफे के ३६, इस तरह ४५१३६ नंबर हुए।

(३) सी फडके

तीन अक्षर का नाम और टेलीफोन का नबर भी तीन से शुरू होता है। आँख पर काला चश्मा और दोनो हाथो मे आठ-आने। इस कल्पना से यह नबर याद रखना सुगम है। मि फडके के याद आते ही तीन (३) याद आयेगे। काला चश्मा दो शून्यो की याद दिला देगे और हाथो मे आठ-आठ आनों से दो आठ की सख्या याद आएगी। यह सब मनमे इतनी शीघ्रता से सबद्ध होगा कि तुम्हे भी ख्याल नही रहेगा कि किस प्रकार यह सब घट गया और कैसे याद आ गया।

(४) अरदेशर कडाका

पैंसठ वर्षीय अरदेशर काका पहले चार बार भोजन करते, फिर दो बार और अब एक बार खाना खाने लगे है। समक्ष खडा आदमी पूछता है—क्यो बाबा बुढापा अधिक उतर आया क्या ? पैंसठ वर्ष के ६५, चार बार के ४, दो बार के २, एक बार का १। पिछले तीन अक तो आधे-आधे होते चले गये है, इसलिए सरलता से याद आ सकते है। सिर्फ उस प्रकार से एक बार विचार लेना अपेक्षित है।

अको को याद करने के लिए एक दूसरा उपाय भी है। वह अको को अक्षरो मे परिवर्तित करने का है। अक सब मिलकर १० हैं। वे इस प्रकार है—१, २, ३, ४, ५, ६, ७ ८, ९, ०, । इन्हे ऐसे अक्षरों मे बदलना चाहिये कि जो सामान्य प्रकार से भाषा मे खूब व्यवहृत होते हो तो उनके शब्द बन सकते है और इस तरह वे पद्धति पूर्वक याद रह सकते हैं। मानो कि हमने उनके लिए निम्नलिखित अक्षर तय किये है—

१ — न
२ — य
३ — ग

४ — ज
५ — प
६ — म
७ — व
८ — श, ष, स
९ — ह
० — द

ये प्रतिनिधित्व करने वाले अक्षर भी तुम्हे रटने नही पडेंगे। उसके लिए सिर्फ निम्नोक्त एक पंक्ति ही याद रखनी होगी।

'नारी गज प्रेम वश हिंदे'

इसका अर्थ समझ लो जिससे कि यह अच्छी तरह से याद रह सके—

"नारी और गज प्रेम से वश होते है—हिन्द देश मे" यह अर्थ समझने के बाद, एक, दो या तीन बार इस पंक्ति को मन मे बोल लो जिससे वह सुस्थिर याद रह सके।

पंक्ति का अर्थ नीचे के मुताबिक विचारो—

१ ना — न
२ री — र
३ ग — ग
४ ज — ज
५ प्रे — प
६ म — म
७ व — व
८ श — श, ष, स
९ हिं — ह
० दे — द

इस पद्धति मे ऊपर के अक्षरो से अर्थ वाले शब्द बनाने की खास दक्षता होनी चाहिए जैसे कि—

११ न न नाना, नानी
१८ न श नशा, निशा, नाश

२३	र ग	रग, रग, रोग
६५	म प	माप
७८	व श	वेश, वश, वास
१२३	न र ग	नारगी

जप मंत्र—इस पद्धति मे तीन अक्षरो से कोई शब्द बड़ा नही बनाना चाहिए। इसलिए तीन अक्षरो का ही अर्थ समझना चाहिए।

७९१	व ह न	वाहन
२०२	र द र	रादेर (सूरत के पास का एक गाव)
६८३	म स ग	मौसी गीत गाती है (ऊपर कहे मुताबिक प्रथम के तीन अक्षर ही लेने)
९९२	ह र र	हे हार ! हाहारे हाय हाय रे ! (य स्वर की तरह किसी का भी प्रतिनिधित्व नही करता है, क्यो कि वह अर्ध स्वर है।)
८१३	स न ग	सोना गेरु
४७६	ज व स	जवासो
००२	द द र	दादारे ! दादर, दादरो, दीदीरे !

इन उदाहरणो को लक्ष्य मे रखकर तुम ध्यान पूर्वक प्रयत्न करोगे, तो व्युत्क्रम को साध सकोगे और सरल बना सकोगे।

मगलाकाक्षी
धी०

□

पत्र वीसवाँ

चित्र (से ०)

प्रिय बन्धु !

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने इस दिशा मे प्रयास किया है—यह जानकर आनन्द हुआ। इस पत्र मे मैं तुम्हे अ क-चित्रो के विषय मे कहना चाहता हूँ। तुम एक बार ३० चित्र मन मे बना लो, तो फिर चाहे जैसे व्युत्क्रम मे लिखी सख्यायें भी याद रख सकोगे। बाद मे सख्या ३० अ क की ६० अ क की या ९० अ क की हो तो कोई अडचन नही। इसलिये पहले १, २, ३, ४, ५ आदि की ३० तक की सख्या के चित्र बनाओ। ये चित्र "नारी गज प्रेम वश हिंदे" के सिद्धान्त पर ही बनाओ। इस सिद्धान्त के आधार पर चित्र बनाने से वे स्वभाविक रीति से ही याद रह जायेंगे।

इस चित्र रचना मे अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अ तथा य शब्द रचना मे सहायता प्राप्ति के लिए ही प्रयुक्त किये जायँ, इसलिए उनकी अ क मे कोई भी कीमत न समझी जाए। 'ह' और 'ल' साथ होने से ल' को ९ के स्थान मे उपयोग करना चाहिये। अब जो चित्र बनाएँ वे ऐसे होने चाहिये कि कल्पना मे बराबर आ सके।

क्रम	नियम से बने नाम,	कल्पना मे रखने के चित्र
१	अन्न	धान्य का ढेर
२	आरी	बडी करोत
३.	आग	आग की लपटें
४.	अज (बकरा)	बकरा
५	अप् (पानी)	पानी का प्रवाह
६.	आम	आम का वृक्ष

७.	यव (एक प्रकार का धान्य)	यवो का ढेर
८.	सूआ (तोता)	पिंजरे मे तोता
९.	उल्लू	सूने घर मे बैठा उल्लू
१०	नन्दी (शकर का वाहन)	बलद
११.	नाना (माता के पिता)	नाना
१२	नारी	स्त्री
१३	नग (पर्वत)	पर्वत
१४	नौजा (एक मेवा)	काच के प्याले मे नौजा
१५.	नप्पु	नप्पु नाम का नौकर
१६.	नीम (एक वृक्ष)	नीम
१७	नाव	समुद्र मे नाव
१८	नशा	नशे मे झूमता आदमी
१९	नल	पानी का नल
२०.	रद्दी	पस्ती
२१.	रन	जगल
२२	रुरु (कस्तूरी मृग)	मृग
२३.	रग	रगीन गेंद
२४.	रोजा	मुसलमानो का व्रत पर्व
२५	प	सुन्दर मोर
२६	राम	राम की मूर्ति
२७	रवि	सूर्य
२८	रस्सी	डोर
२९	राह	रास्ता
३०.	गदा (एक प्रकार का हथियार)	गदा

इन चित्रो को धारण के लिए पहले तुम अपने मन मे एक बडे चौरस चित्र की कल्पना करो। उसकी हरेक पक्ति मे पाँच खानो की कल्पना करो। ऐसी छह पक्तियो मे ३० खाने (प्रकोष्ठ) बनेंगे। वे इस प्रकार—

१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५
२६	२७	२८	२९	३०

लम्बी पक्ति की अपेक्षा इस प्रकार के सयोजन से वस्तुओ की स्मृति अधिक सरलता व सुस्पष्टता से सभव है।

अब इन खानो मे तुम क्रमश निम्नलिखित वस्तुओ की कल्पना करो—

१ धान्य का ढेर	२ बडी करौत	३ आग की लपटे	४ बकरा	५ पानी का प्रवाह
६ आम का वृक्ष	७ यवो का ढेर	८ पिंजरे मे तोता	९ उल्लू	१० बलद
११ नाना	१२ स्त्री	१३ पर्वत	१४ प्याले मे तोजा	१५ नप्पु नौकर
१६ नीम	१७ नाव	१८ नशा	१९ पानी का नल	२० रद्दी
२१ रन जगल	२२ रु रु मृग	२३ रगीन गेंद	२४ रोजा	२५ रूप
२६ राम	२७ रवि	२८ रस्सी	२९ रास्ता	३० गदा

इस यत्र मे क्रम की जगह तुम्हे वस्तुएँ ही समझ लेनी चाहिए। अब सख्या को धारण करने के लिए अक तथा व्यजनो के बीच निम्नलिखित सकेत सयोजित करने चाहिए।

१ — न, ण, क, ख

२	—	र, ट, ठ, ड, ढ,
३	—	ग, घ
४	—	च, छ, ज, झ,
५	—	प, फ,
६	—	व, भ, म
७	—	व, त, थ
८	—	श, ष, स
९	—	ह, ल
१०	—	ढ, ध

कुछ—'अ' आदि स्वर तथा य को छोडकर अको के इतने प्रतिनिधि लेने का कारण यह है कि शब्द बनाने मे सरलता रहती है। इसमे समस्त व्यजन बाट लिए गए हैं, सिवाय ङ और ञ के। ये व्यजन बहुत उपयोग मे नही आते है,इसलिए इन्हे नही लिया गया।

अब जो सख्या याद रखनी हो, उसके तीन तीन के खण्ड (टुकडे) बना कर उनकी शब्द रचना करो और उन्हे प्रत्येक क्रमाक चित्र के साथ जोडो, जिससे कि वे बराबर याद रह सके ।

उदाहरण के तौर पर निम्न सख्या धारण करनी है।

१२०३६०५९२७४१६५२१२८४२६३९१२५२१०८ (३० अ क)

तो पहले इस सख्या के तीन तीन के टुकडे करो। दस टुकडे होगे जैसे कि—

१२० ३६० ४९२ ७४१ ६५२

१२८ ४२६ ३९१ २४२ १०८

इन दस टुकडो के शब्द बनाते जाओ और उनका सवन्ध क्रमाक वाले खाने के साथ जोडते जाओ जैसे कि—

१२० = न र द = नारद नारद तो कुतुहल प्रिय होने से धान्य के ढेर पर नाच रहे है, ऐसा चित्र खड़ा करो।

३६० = ग म ध = गोमेध कोई करोत से गाय का मेध (हत्या) कर रहा है और दयालु लोक उसका विरोध कर रहे है, ऐसा चित्र मन मे खडा करो।

५९२ = फ ल र = फुलेरा । फुलेरा जक्शन पर आग की लपटे उठ रही है ।

७४१ = व ज न = बकरे पर खूब वजन भरा हुआ है । बकरे पर वजन से भरी हुई थैली रखी हुई है ।

६५२ = ब फ र = बफारा इतना अधिक दिया गया कि उससे पानी के रेले चल पडे । पानी का रेला यह वफारा का परिणाम है ।

यहा तुम कुछ मिनट ठहर कर नीचे के मुताबिक विचार कर लो ।

धान्य का ढेर—नारद, करोत—गोमेध, आग फुलेरा, बकरा—वजन, पानी—बफारा इन शब्दो को फिर एक वार मन मे स्थिर करो । बाद मे आगे बढो ।

१२८ न र स—नीरस = आम की ऋतु बीत गई इसलिए आम बेकार हो गये है ।

४२६ च र म—यवो के छावडे मे चरम (कीडे) पड गये है ।

३९१ ग ल न = गलना = पिंजरा गलने से पानी छानने के कपडे से ढका हुआ है ।

२५२ र प ट = उल्लू अपने घोसले मे रपट कर गिर पडा है ।

१०८ न द श—नदीश शकर भगवान नदी (बैल) पर बैठे है ।

यहाँ फिर पाँचो चित्रो पर निम्नोक्त विचार करो ।

आम—नीरस, यव—चरम, पिंजरा—गलना, उल्लू—रपट, नदी—नदीश । इन्हे मन मे बराबर स्थिर करो । तुम्हारे मन मे क्रमाक तो निश्चित है ही । इसलिये उनका विचार करते ही समस्त शब्द क्रमश याद आ जायेगे ।

१ अन्न का ढेर—नारद नाचते है—नारद—नरद—१२०
२ करोत—उससे गोमेध हो रहा है—गोमेध—ग म ध ३६०
३ आग की लपटें फुलेरा पर—फुलेरा—फ ल र—५९२
४ वकरा वजन से दव रहा है वजन—७४१
५. पानी—वफारो—व फ र—६५२
६. आम—नीरस—नीरस—न र स—१२८
७. यवो का छावड़ा—कीट—चरम—च र म—४२६

८ पिजरा—गलना -गलना—ग ल न—३९१
९ उल्लू—रपटकर - रपट र प ट—२५२
१० नदी—नदीश—न द श—१०८

अब वह सख्या तुम क्रमश बोल सकोगे ।

१२०, ३६०, ५६२, ७४१, ६५२, १२८, ४२६, ३९१, २५२, १०८ ।

इनमे जो चाहो वह टुकडा तुम याद कर सकते हो जैसे कि—पाँचवाँ टुकडा तो पानी वफारा—६५२ । नवम खड-उल्लू-रपट—२५२ । दूसरा टुकडा तो करोत गोमेघ-गमध ३६० ।

इस सख्या-समह से जो भी अङ्क बताने का हो, तुम एक दम शीघ्रता से बता सकोगे । जैसे कि २७ अङ्क तो नौव टुकडे का अन्तिम अङ्क । नौवा टुकडा रपट—र प ट—२५२ । इसलिये २७ वाँ अ क २, १४ वाँ अङ्क तो पाँचवाँ टुकडा, दूसरा अङ्क । पाँचवाँ टुकडा बफारा उसका दूसरा—फ = ५ ।

अब एक ४५ अङ्को कि सख्या लो । ४६२, ३८९, १७०, २४८ ९३५, ७६२, ३५९, ८७६, ००७, ५४३, २१०, ६९७, १२४, ८८९, १२५ ।

पहले इस सख्या के तीन तीन टुकडे करो और हरेक के नीचे क्रम लिखो । एक पक्ति मे पाँच टुकडो से ज्यादा मत लिखो ।

४६२	३८९	१७०	२४८	९३५
१	२	३	४	५
७६२	३५९	८७६	००७	५४३
६	७	८	९	१०
२१०	६९७	१२४	८८९	१२५
११	१२	१३	१४	१५

पहला टुकडा—४६२ = ज ब र—अन्न का ढेर वहुत जबर ।
दूसरा " —३८९ गसल = गौशाला करोत लिये हुए कोई आदमी गौशाला की तरफ आ रहा है ।
तीसरा " —१७० कवद = कोविद आग की लपटो से दूर खडा है।

चौथा टुकडा—२४८ रजश = राजश्री बकरे पर सवार है।

पाचवा टुकडा—६३५ हगप = हीगपेटी, हीगपेटो पानी के प्रवाह मे पडी है।

अन्न का ढेर -जबर, करात-गौशाला, आग की लपटे-कोविद, बकरा—राजश्री, पानी हीगपेटी

छठा ” —७६२ तमर-तिमिर आम का वृक्ष गहरे तिमिर में है।

सातवाँ ” —३५९ गफल-गाफिल यवो को बिखेर रहा है।

आठवाँ ” —८७६ सतम-सितम, सूवे पर कोई सितम नही ढहाता

नौवा ” —००७ दधव = दूध वाला उल्लू ने दूध वाले का अपशकुन कर दिया।

दसवाँ ” —५४३ पचग = पचाग—पचाग पर बैल का चित्र है। इन चित्रो मे हरेक पाच चित्रो के बाद थोडी देर ठहर कर उन्हे व्यवस्थित करने से मत चूकना।

आम-तिमिर, यवो का छाबडा-गाफिल, सूआ-सितम, उल्लू-दूध वाला, नदी-पचाग। इस समय यह समग्र चित्र परिपूर्ण रूप से खडा करना चाहिये जिससे कि स्मृति परिपक्व बन सके।

अब आगे बढो

ग्यारहवा ” —२१० र न द = रा नदी नाना के घर मे रा—लक्ष्मी की नदी बह रही है।

बारहवा ” —६९७ म ह व = महावीर नारियाँ महावीर को वन्दन करती है।

तेरहवा ” —१७४ क र ज = कर्जा तो पर्वत जितना हो गया है।

चौदहवा ” —८८९ स स ल = सुशीला—नोजे खा रही है।

पन्द्रहवा ” —१२५ न र प = नरपति राजा से नप्पु नौकर आशीर्वाद ले रहा है।

नाना—रा—नदी, नारी महावीर, पर्वत—कर्जा, नौजा—सुशीला, नौकर-नरपति।

इनमे जिन चित्रो की कल्पना बराबर नही हुई हो, उन्हे याद करने मे मुश्किल होगी, इसलिए कल्पना जोरदार करनी चाहिए जोरदार कल्पना तुरन्त ही ताजी हो जायेगी। अब क्रमश टुकडो पर चिन्तन करो, ४५ अङ्क की सख्या बराबर याद आ जाएगी।

इस रीति से अ को पर शब्द तैयार करने का अभ्यास आगे बढेगा और कल्पना चित्र बराबर बनते जाएँगे। उस आधार पर बहुत बडी ६० अ को की और ९० अ को की सख्या भी याद की जा सकेगी और उससे भी बडी सख्या याद रखनी हो तो अ क चित्र १०० तक तैयार करने चाहिए, जिससे ३०० अंक की रकम भी याद रखी जा सकेगी। सख्या की तरह शब्द भी अ क चित्रो के सहारे याद रखे जा सकते है, परन्तु उनका विशेष वर्णन अब बाद के पत्रो मे करूँगा। मै मानता हूँ कि बृहत सख्या की धारणा के लिए यह पद्धति तुम्हे बहुत उत्तम लगेगी।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

'नारी गज प्रेम वश हिन्दे', तीस क्रमाक चित्र, उन्हे बनाने की रीति, हरेक खाने मे एक क्रमाक-चित्र की स्थापना। व्यजनो का अ क की दृष्टि से पूर्ण वर्गीकरण, उनके आधार पर शब्द निर्माण ३० अ क और ४५ अ क की रकम याद रखने के उदाहरण।

पत्र इक्कीसवाँ

विशेष अङ्क चित्र (३१-१००)

प्रिय बन्धु !

३१ से १०० तक के अङ्क चित्र एक साथ भेज रहा हूँ उन्हे बराबर समझ लेना ।

३१	गीनी	(सोने का सिक्का)
३२	गौर	(एक जाति का ब्राह्मण)
३३	गगा	
३४	गज	(हाथी)
३५	गोप	(ग्वाला)
३६	ग्राम	
३७	गोवो	(एक खेतिहर का नाम)
३८	घास	
३९	गुहा	(गुफा)
४०	जर्दा	
४१	जन	
४२	जश	(आभूषण)
४३	जादू	(जादूगर)
४४	जज	
४५	जप	
४६	जाम	(प्याला)
४७	जव	(एक प्रकार का अन्न)
४८	जोशी	
४९	जल	(वर्षा का पानी)
५०	पाद	(पैर)
५१	पान	(पत्ता)

५२	पारा	
५३	फाग	
५४	पजा	(हाथ का)
५५	पप	(पानी निकालने का)
५६	प्रेमी	
५७	पावा	(महावीर का निर्वाण-स्थल)
५८	पासा	
५९	फल	(दूकान मे फल)
६०	मद्य	
६१	मान	(माप)
६२	मरु	(रेगिस्तान)
६३	मूंग	(बर्तन मे भरे हुए)
६४	मौजा	(पैरो मे पहनने के)
६५	माफी	(अपराधी के छुटकारे का चित्र)
६६	मामा	
६७	मावा	
६८	माष	(उडद)
६९	माली	
७०	वादी	(विवाद मे बैठा पडित)
७१	वीणा	
७२	वार	(प्रहार)
७३	वाध	
७४	वाजा	
७५	वापी	(बावडी)
७६	वीना	
७७	वाव	
७८	वश	
७९	वाल	
८०	साधु	
८१	सोना	
८२	शेर	
८३	साग	(वनस्पति)
८४	सेज	(पलग)

८५ साँप
८६ सोम (चन्द्र)
८७ सेव
८८ शीशा (एक धातु)
८९ शाल (एक कपड़ा)
९० हिन्द
९१ हानि (हानि से खिन्न मनुष्य)
९२ हार (गले मे पहनने का गहना)
९३ लँबा
९४ लाज (घूँघट)
९५ लोप (उल्लघन)
९६ लामा (बौद्ध भिक्षु)
९७ हवा
९८ लाश
९९ हल
१०० नदी घर (समुद्र)

इन चित्रों को तुम्हे चार खण्ड मे विभक्त करना है। जैसे कि प्रथम खण्ड मे १ से २५ तक, दूसरे खण्ड मे २६ से ५०, तीसरे खण्ड मे ५१ से ७५ और चौथे खण्ड मे ७६ से १०० तक और उन प्रत्येक खण्ड के पांच-पांच विभाग बनाकर कल्पना से सयुक्त करें। जिससे याद रखने मे बहुत सरलता होगी। योजना भी सरलता मे खूब सहायता करती है। नीचे के चित्रों से उनका भाव स्पष्ट होगा।

खण्ड पहला

१				
				२५

खण्ड दूसरा

२६				
				५०

५२	पारा	
५३	फाग	
५४	पजा	(हाथ का)
५५	पप	(पानी निकालने का)
५६	प्रेमी	
५७	पावा	(महावीर का निर्वाण-स्थल)
५८	पासा	
५९	फल	(दूकान मे फल)
६०	मद्य	
६१	मान	(माप)
६२	मरु	(रेगिस्तान)
६३	मूंग	(बर्तन मे भरे हुए)
६४	मौजा	(पैरो मे पहनने के)
६५	माफी	(अपराधी के छुटकारे का चित्र)
६६	मामा	
६७	मावा	
६८	माष	(उडद)
६९	माली	
७०	वादी	(विवाद मे बैठा पडित)
७१	वीणा	
७२	वार	(प्रहार)
७३	वाघ	
७४	वाजा	
७५	वापी	(बावडी)
७६	वीना	
७७	वाव	
७८	वश	
७९	वाल	
८०	साधु	
८१	सोना	
८२	शेर	
८३	साग	(वनस्पति)
८४	सेज	(पलग)

८५	साँप	
८६	सोम	(चन्द्र)
८७	सेव	
८८	शीशा	(एक धातु)
८९	शाल	(एक कपडा)
९०	हिन्द	
९१	हानि	(हानि से खिन्न मनुष्य)
९२	हार	(गले मे पहनने का गहना)
९३	लेखा	
९४	लाज	(घूँघट)
९५	लोप	(उल्लघन)
९६	लामा	(बौद्ध भिक्षु)
९७	हवा	
९८	लाश	
९९	हल	
१००	नदी घर	(समुद्र)

इन चित्रो को तुम्हे चार खण्ड मे विभक्त करना है। जैसे कि प्रथम खण्ड मे १ से २५ तक, दूसरे खण्ड मे २६ से ५०, तीसरे खण्ड मे ५१ से ७५ और चौथे खण्ड मे ७६ से १०० तक और उन प्रत्येक खण्ड के पाच-पाच विभाग बनाकर कल्पना से सयुक्त करें। जिससे याद रखने मे बहुत सरलता होगी। योजना भी सरलता मे खूब सहायता करती है। नीचे के चित्रो से उनका भाव स्पष्ट होगा।

खण्ड पहला

१				
				२५

खण्ड दूसरा

२६				
				५०

खण्ड तीसरा

५१				
				७५

खण्ड चौथा

७६				
				१००

अब यदि ये १०० चित्र बराबर याद होगे तो इनके द्वारा चाहे जैसी व्युत्क्रम स्थित वस्तुओ को भी व्यवस्थित रूप से धारण कर सकोगे। जैसे कि तुमने १० वस्तुएँ देखी, १० के नाम सुने, १० सख्या के टुकडे सुने और १० वस्तुओ का स्पर्श किया, तो १ से १० तक के चित्र दृष्ट वस्तुओ के लिए, ११ से २० तक के चित्र सुने नामो के लिए २१ से ३० तक चित्र सख्या के लिए, ३१ से ४० तक के चित्र स्पृष्ट वस्तुओ के लिए काम आ जाएँगे।

(१) मानो कि दृष्ट १० वस्तुएँ निम्नोक्त हैं—
टेबुल, चमच, पूतली, प्याला, खिलौना, थाली, फानूस, लाठी, पाट, खाट।

तो उन्हे नीचे के क्रम से जोडो।

१. धान्य का ढेर—टेबुल—धान्य के ढेर के पास से टेबुल उठा दी गई है।
२ करोत—चमच—दो चमचो की छापवाली करोत पडी है।
३ आग की लपटे—पूतली। आग की लपटो से पूतली पिघल गई है।
४ बकरा—प्याला—बकरा प्याले मे पानी पी रहा है।
५ पानी का प्रवाह—खिलौना—पानी के प्रवाह मे खिलौने तैर रहे है।
६ आम—थाली—थाली मे आम रखे हुये है।
७ यवो का छावडा—फानूस—यवो के छावडे पर फानूस रखा हुआ है।

८. सूआ—लाठी—सूआ लाठी पर सूवे का चित्र है।
९ उल्लू—पाट—उल्लू घोसले से पाट पर आ बैठा है।
१० नदी—खाट—नदी तूफानी बना और उसने खाट को उलट डाला।

(२) अब सुने हुए १० नाम—
अहमदाबाद, चमन लाल, चतुर भाई, गोकलदास, बगवाडा, इलोरा, आनन्द, मनुष्य, भैंस, रोझ।

इनका सम्बन्ध ११ से आगे जोडे, जैसे कि—

११ नाना—अहमदाबाद—मेरे नाना अहमदावाद गये है और अहमदाबाद ही रहेगे, क्योकि उन्हे वहाँ बहुत आनन्द आता है।
१२ नारी—चमनलाल—इस नारी के पति का नाम चमनलाल है। नारी भी आनन्दी है और चमनलाल तो नाम के अनुरूप ही गुणवाला है।
१३ नग—चतुरभाई—पर्वत पर कौन चढ रहा है? चतुर भाई। चतुर भाई पर्वत पर चढ रहे है। पर वहाँ उनकी चतुराई चलने की नही।
१४ नौजा—गोकुल दास—प्रचण्ड भीड मे गोकुलदास हरे नौजो का थैला लेकर चल रहा था।
१५ नप्पु—बगवाडा—नप्पु बगवाडे का है इसलिए काम भी बिगडने का है।
१६ नीम—इलोरा—इलोरा की यात्रा मे नीम के वृक्ष बहुत देखे।
१७ नाव—आनन्द—नाव की यात्रा मे खूब आनन्द आता है।
१८ नशा—मनुष्य—नशा करने वाले मनुष्य मनुष्यता से बहुत दूर हो जाते है।
१९ नल—भैंस—नल के नीचे भैंस पडी है, ऊपर पानी गिर रहा है।
२० रद्दी—रोझ—जानवरो मे रोझ रद्दी होता है क्योकि उसमे समझ बहुत कम होती है।

(३) १० सख्या के खण्ड, उन्हें २१ से ३० तक जोडना चाहिए, इनके उदाहरण ऊपर के मुताबिक समझ लेने चाहिए।

(४) स्पृष्ट वस्तुओ मे किसका स्पर्श हुआ यह स्पर्श के समय मे ही समझ लेना चाहिए। फिर तो वे भी १ से १० तक की वस्तुओ के समान एक प्रकार की वस्तुएँ ही है। इसलिए उसी रीति से ही चित्रो के साथ सयोजित करना चाहिए।

किसी भी प्रकार के व्युत्क्रम को सिद्ध करने मे इन चित्रो का उपयोग हो सकता है। तुम स्वय इन साधनो का बुद्धिपूर्वक उपयोग करना।

मगलाकाक्षी
धी०

मनन

३१ से १०० तक अक के चित्र, चित्रो का निर्माण, उनके द्वारा पृथक्-पृथक् विषयो को कैसे याद रखना उनको समझ।

पत्र बाईसवाँ

भाव न्धन

प्रिय बन्धु !

सामान्यतया यह बात फैलाई हुई है कि सख्याएँ तो कोई भी तरकीब से याद रह सकती है। पर सर्वतोभद्र यत्र जैसा अटपटा सख्या-सयोजन याद कैसे रहे ? इसलिए उसी सम्बन्ध मे स्पष्टता करना चाहता हू कि यदि बुद्धि को अजमाया जाय और स्मृति मे भाव जमाया जाय तो स्मृति इस कार्य मे पीछे कभी नही हटेगी। यह तथ्य एक-दो उदाहरणो से परखा जा सकता है।

पहले तो सर्वतोभद्र यन्त्र क्या है ? यह समझ लें। एक चोरस खाने के समान विभाग बनाएँ जा सके, जैसे कि—३ × ३ = ९, ४ × ४ = १६, ५ × ५ = २५, ६ × ६ = ३६, ७ × ७ = ४९, ८ × ८ = ६४ आदि और उस हर एक भाग मे ऐसी सख्या भरी जाए कि जिसका खडा/आडा और टेडा-मेडा जैसे भी जोड किया जाए योग समान ही आए, उसे सर्वतोभद्र यन्त्र कहा जाता है। अग्रेजी मे इसे 'मेजिक स्क्वेयर" कहते है और सामान्य लोक उसे जन्तर (यन्त्र) के नाम से पहचानते है। उदाहरण के तौर पर नीचे दिये हुए यन्त्र १५, २७ और ४५ के नव खानो के सर्वतोभद्र यन्त्र हैं—

१५ (पन्द्रह) का

८	१	६	१५
३	५	७	१५
४	९	२	१५
१५	१५	१५	१५

२७ (सत्ताईस) का

१२	५	१०	२७
७	९	११	२७
८	१३	६	२७
२७	२७	२७	२७

४५ (पैतालीस) का

१८	११	१६	४५
१३	१५	१७	४५
१४	१९	१२	४५
४५	४५	४५	४५

ऐसे यन्त्र सैकडो, हजारो बल्कि असख्य बन सकते है, पर उनकी रचना किस सिद्धान्त पर होती है, यह प्रथम जान लेना आवश्यक है।

अ+३ अ+१ दोनो तरफ हो तो बिचली सख्या अ—४ होने की ही है, इसलिए यथार्थ मे तीन सख्या याद रखने की है। दो ऊपर के छोरो की और एक मध्य की। उसके साथ यह याद रखना भी जरूरी है कि कुल सख्या का एक भाग ही अ है और उसके साथ ही सब सख्याएँ घटाने की है। अब यह वस्तु किस प्रकार याद रखनी, उसके लिए बुद्धि दौडाने की आवश्यकता है। तुम इस दिशा मे प्रयत्न करके देखो।

मैंने स्वय इस समस्त समीकरण को याद रखने के लिए निम्नोक्त एक दोहा बनाया है—

पूर्ण चहै जो भद्रा तूँ हरिपद भज हरठाम
सुन हृदय समता धरी कर्णे गान तमाम

तुम कहोगे कि इसमे तो अध्यात्म की बात है। 'यदि पूर्ण कल्याण चाहते हो तो हर स्थान मे हरिचरण का भजन कर और हृदय मे समता धारण कर ससार मे चल रहे सर्व प्रकार के गान कानो से सुनलो। बात खरी है। पर उसके साथ उसमे ऊपर का समस्त समीकरण समाया हुआ है, वह इस प्रकार है—

पूर्ण अर्थात् नव और भद्र अर्थात् सर्वतोभद्र यत्र। यदि तुम्हे नव का सर्वतोभद्र यत्र बनाना हो, तो हर ठाम अर्थात् उसके हरेक

इस दोहे के आधार पर तुम चाहो जितनी बडी से बडी सख्या का यत्र भी बना सकते हो। जैसे कि १५६२४ का यत्र बनाना है, तो पहले इसके तीन भाग करो ५२०८ यह उसका तीसरा भाग है, अर्थात् अ ५२०८ कोने के खानो मे ३ और एक अकित करना है। अर्थात् पहले खाने मे—

इस प्रकार सख्या लिखी जायेगी। अब सामने घटती हुई सख्या एक के बाद एक लिखते जाओ जैसे कि

५२११		५२०९
	५२०८	
५२०७		५२०५

अब चार खाने खाली रहे, उनमे हरेक की दो-दो सख्यायें तुम्हारे पास है, उससे घटती सख्या को भी पूरी कर सकोगे। जैसे कि—

५२११	५२०४	५२०९
५२०६	५२०८	५२१०
५२०७	५२१२	५२०५

अब सोलह खानो के सर्वतोभद्र यत्र का निर्माण करो—

[३४]

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

[४८]

१६	२३	२	७
६	३	२०	१९
२२	१७	८	१
४	५	१८	२१

इस यत्र का निरीक्षण (तरीका) इस प्रकार बताया गया है कि इस यत्र के समुदाय मे किसी मे भी उसके योग की $\frac{1}{2}$ की अपेक्षा अधिक सख्या नही होती है। दूसरे इसमे हरेक पक्ति मे नव का चोक्क सी वर्गीकरण पृथक्-पृथक प्रकार से सयोजित है जैसे कि—

अ+३ अ+१ दोनो तरफ हो तो बिचली सख्या अ—४ होने की ही है, इसलिए यथार्थ मे तीन सख्या याद रखने की है। दो ऊपर के छोरो की और एक मध्य की। उसके साथ यह याद रखना भी जरूरी है कि कुल सख्या का एक भाग ही अ है और उसके साथ ही सब सख्याएँ घटाने की है। अब यह वस्तु किस प्रकार याद रखनी, उसके लिए बुद्धि दौडाने की आवश्यकता है। तुम इस दिशा मे प्रयत्न करके देखो।

मैने स्वय इस समस्त समीकरण को याद रखने के लिए निम्नोक्त एक दोहा बनाया है—

पूर्ण चहै जो भद्रा तूँ हरिपद भज हरठाम
सुन हृदय समता धरी कर्ण गान तमाम

तुम कहोगे कि इसमे तो अध्यात्म की बात है। 'यदि पूर्ण कल्याण चाहते हो तो हर स्थान मे हरिचरण का भजन कर और हृदय मे समता धारण कर ससार मे चल रहे सर्व प्रकार के गान कानो से सुनलो। बात खरी है। पर उसके साथ उसमे ऊपर का समस्त समीकरण समाया हुआ है, वह इस प्रकार है—

पूर्ण अर्थात् नव और भद्र अर्थात् सर्वतोभद्र यत्र। यदि तुम्हे नव का सर्वतोभद्र यत्र बनाना हो, तो हर ठाम अर्थात् उसके हरेक खाने मे हरिपद की भजना कर हरि अर्थात् विष्णु और पद अर्थात् पैर। विष्णु के तीन पैर माने जाते हैं। इस कारण उनका एक पद कुल सख्या का $\frac{1}{3}$ भाग है। इसलिए तुम सब जगह पहले $\frac{1}{3}$ लिखो और हमने अ सज्ञा दी है, इसलिए हर खाने मे अ लिख डालो जैसे कि—

अ	अ	अ
अ	अ	अ
अ	अ	अ

अब हृदय मे समता स्थापित करनी है अर्थात् बिचली सख्या मे कुछ भी परिवर्तन नही करना और कर्ण अर्थात् कोनो के खानो × इस प्रकार गान अर्थात् ३ और १ (ग=३, न=१) की स्थापना करनी है। बस, समस्त समीकरण का सार इसमे बराबर आ जाता है। यह दोहा सरलता से याद रह जाए ऐसा है। क्यो कि उसमे एक प्रकार का भाव सलग्नता से गुथा हुआ है। भाव प्रतिबन्धित किया हुआ है।

इस दोहे के आधार पर तुम चाहो जितनी बडी से बडी संख्या का यंत्र भी बना सकते हो। जैसे कि १५६२४ का यंत्र बनाना है, तो पहले इसके तीन भाग करो ५२०८ यह उसका तीसरा भाग है, अर्थात् अ ५२०८ कोने के खानो मे ३ और एक अंकित करना है। अर्थात् पहले खाने मे—

इस प्रकार संख्या लिखी जायेगी। अब सामने घटती हुई संख्या एक के बाद एक लिखते जाओ जैसे कि

५२११		५२०९
	५२०८	
५२०७		५२०५

अब चार खाने खाली रहे, उनमे हरेक की दो-दो संख्यायें तुम्हारे पास है, उससे घटती संख्या को भी पूरी कर सकोगे। जैसे कि—

५२११	५२०४	५२०९
५२०६	५२०८	५२१०
५२०७	५२१२	५२०५

अब सोलह खानो के सर्वतोभद्र यंत्र का निर्माण करो—

[३४]

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

[४८]

१६	२३	२	७
६	३	२०	१९
२२	१७	८	१
४	५	१८	२१

इस यंत्र का निरीक्षण (तरीका) इस प्रकार बताया गया है कि इस यंत्र के समुदाय मे किसी मे भी उसके योग की $\frac{1}{2}$ की अपेक्षा अधिक संख्या नही होती है। दूसरे इसमे हरेक पंक्ति मे नव का चोक्क सी वर्गीकरण पृथक्-पृथक प्रकार से सायोजित है जैसे कि—

	२	७	=९
६	३		=९
	८	१	=९
४	५		=९

तीसरे चौतीस के यत्र मे प्रथम खाने की अपेक्षा दूसरे खाने मे ७ की सख्या अधिक है और अडतालीस के यत्र मे भी प्रथम खाने की अपेक्षा दूसरे खाने मे ७ की सख्या ज्यादा है। चौतीस के सातवे खाने की अपेक्षा आठवे मे १ सख्या कम, नौवें की अपेक्षा दसवे मे पाँच कम और पन्द्रहवे की अपेक्षा सोलहवें खाने मे ३ अधिक है तो अडतालीस के यत्र मे भी वैसे ही वेसी-कम है अर्थात् उनमे एक परिपूर्ण नियम है यह निश्चित है। इस सख्या का सम्बन्ध विभक्त योगवाली सख्या के साथ है इसलिए उसे (आधा) $\frac{1}{2}$ करके उसके साथ घटाएँ जैसे कि ३४ आधा १७ और ४८ आधा २४ =

$\frac{1}{2}$ = अ तो

अ—८	←अ—१		
		अ—४	अ – ५
अ—२	←अ—७		
		अ—६	अ—३

दोनो यत्रो मे यह समीकरण समान ही होने से यह उनका मूल है—यह निश्चित है। यह वर्गीकरण भी नव के सिद्धान्त पर योजित है। अ को के योग मे ९ हुए है और आधी दो सख्या से भी सख्या ९ हुई। इसलिए आधी सख्या बन सकी। अब १ से ८ तक की दो सख्या का योग ९ लाना हो तो वह चार प्रकार से ही आ सकती है—१+८, २+७, ३+६, ४+५,= अथवा दूसरी प्रकार से करे तो ८+१, ७+२, ६+३, ५+४।

अब यह समग्र समीकरण कैसे याद रहे यह देखना। पहले इस यत्र मे दो प्रकार की सख्या है एक तो मूल सख्या की आधी और दूसरे मे मात्र अ क। इन्हे हम अनुक्रम से ह और स की सज्ञा देते है। इसलिए इस यत्र मे ह और स निम्नोक्त प्रकार से सयोजित है—

ह	ह	स	स
स	स	ह	ह
ह	ह	स	स
स	स	ह	ह

अर्थात् ह और स युगल रूप मे ही आये है। जो एकान्तर सयोजित है। उस हरेक युगल का योग नव होता है। इसलिए उनमे से एक-एक सख्या याद हो तो दूसरी सख्या अपने आप याद आ जाती है। जैसे कि—

अ—८	तो	अ—१		
		अ—४	तो	अ—५
अ—२	तो	अ—७		
		अ—६	तो	अ—३

उसी प्रकार—

२	तो	७
६	तो	३
८	तो	१
४	तो	५

यह परिपूर्ण समीकरण निम्नोक्त दोहे मे समाया हुआ है।

हस युगल एकान्त मे करता पूरण प्रीत।
सरवर मोजा झूलता, रास जमावट रीत ॥

ह और स के युगल को एकान्त मे ले जाना है उनमे हरेक का योग पूर्ण अर्थात् नौ होना चाहिए। ह का योग कम होना चाहिए, कारण कि सख्या का योग अधिक बताता है। इसलिए सर अर्थात् ८२ मोजा अर्थात् ६४, रास अर्थात् २८ और जमा अर्थात् ४६ पक्ति वार स्थापित किये है, जिससे कोई गड़बड न हो। अब दोहे के मुताबिक समीकरण की रचना देखो—

ह ह स स
स स ह ह — हँस युगल एकान्त मे
ह ह स स
स स ह ह

ह (स) हस (२) स — सरवर
स (मो) स ह (जा) ह — मोजा
ह (रा) ह स (स) स — रास
स (ज) स ह (मा) ह — जमावट

इसका अर्थ

ह—८ ह	स—८ स
स—६ स	ह—४ ह
ह—२ ह	स—८ स
स—४ स	ह—६ ह

अब वे—

करता पूरण प्रीत

इसीलिए

ह—८	ह—१	२	७
६	३	ह—४	ह—५
ह—२	ह—७	८	१
४	५	ह—६	ह—३

एक छोटा सा दोहा कितना भाव, कितनी समझ, याद रखने मे सहायक है, वह इससे समझा जा सकता है।

इसी रीति से अलग-अलग सौ संख्या का सार भी भाव-बन्धन से याद रखा जा सकता है।

उसके लिए पच घात का मूल निकालने का दृष्टान्त समझने योग्य है।

निम्नोक्त संख्या पचघात है—

१६१०५१
४१७२३०१
९०२२४१९९

ऊपर लिखित हरेक संख्या एक एक संख्या को ही पांच बार गुणन करने पर निष्पन्न हुई है। क्या संख्या होनी चाहिए अर्थात् इसका मूल क्या है ?

१६१०५१ का मूल ११ है, इसलिए कि वह ११ × ११ × ११ × ११ × ११ का परिणाम है।

४१७३०१ का मूल २१ है, इसलिए कि वह २१ × २१ × २१ × २१ × २१ का परिणाम है।

९०२२४११९ का मूल ३९ है, इसलिए कि वह ३९ × ३९ × ३९ × ३९ × ३९ का परिणाम है।

इस प्रकार १०० तक की संख्या का मूल मात्र संख्या सुनकर बताया जा सकता है। तो वह कैसे बन सके? उसके लिए पहले तो १ से १०० तक का गुणाकार करके देखे कि उसमे क्या सिद्धान्त छिपा हुआ है? वे संख्याएँ निम्नलिखित है।

१ × १ × १ × १ × १	= १
२ × २ × २ × २ × २	= ३२
३ × ३ × ३ × ३ × ३	= २४३
४ × ४ × ४ × ४ × ४	= १०२४
५ × ५ × ५ × ५ × ५	= ३१२५
६ × ६ × ६ × ६ × ६	= ७७७६
७ × ७ × ७ × ७ × ७	= १६८०७
८ × ८ × ८ × ८ × ८	= ३२७६९
९ × ९ × ९ × ९ × ९	= ५९०४९
१० × १० × १० × १० × १०	= १०००००

इतने गुणाकारो का निरीक्षण यह व्यक्त करता है कि जो अंक गुणाकार के मूल मे आता है वही अङ्क इसका मूल होता है, परन्तु ११-२१ ३१-१२ २२-३२ आदि मे अन्त का अंक १-२ होने पर भी पूर्व का अंक पृथक्-पृथक् होता है, इसलिए पूर्व के अंको का निर्णय करने के लिए कोई दूसरा तरीका खोजना चाहिए। उसके लिए निम्नोक्त संख्या देखो—

११X११X११X११X११	= १६१०५१	(छह अंक)
१२X१२X१२X१२X१२	= २४८८३२	,,
१३X१३X१३X१३X१३	= ३९६६४३	,,
१४X१४X१४X१४X१४	= ५३७८२४	,,
१५X१५X१५X१५X१५	= ७५९३७५	,,
१६X१६X१६X१६X१६	= १०४८५७६	(सात अंक)
१७X१७X१७X१७X१७	= १४१९८५७	,,
१८X१८X१८X१८X१८	= १८८९५६८	,,
१९X१९X१९X१९X१९	= २४७६०९९	,,

२०X२०X२०X२०X२०	=३२००००००	,,
२१X२१X२१X२१X२१	=४१७२३०१	,,
२२X२२X२२X२२X२२	=५१५३६३२	,,
२३X२३X२३X२३X२३	= ६४३६२४३	,,
२४X२४X२४X२४X२४	=७९६२६२४	,,
२५X२५X२५X२५X२५	=९७६५६२५	,
२६X२६X२६X२६X२६	= ११८८१५७६	(आठ अक)
२७X२७X२७X२७X२७	= १४१३८९०७	,,
२८X२८X२८X२८X२८	= १७२१०३६८	,,
२९X२९X२९X२९X२९	= २०५१११४९	,,
३०X३०X३०X३०X३०	= २४३००००००	,,
३१X३१X३१X३१X३१	= २८६२९१५१	,,
३२X३२X३२X३२X३२	= ३३५५४४३२	,,
३३X३३X३३X३३X३३	= ३९१३५३९३	,,
३४X३४X३४X३४X३४	= ४५४३५४२४	,,
३५X३५X३५X३५X३५	= ५२५२१८७५	,,
३६X३६X३६X३६X३६	= ६०४६६१७६	,,
३७X३७X३७X३७X३७	= ६९३४३९५७	,,
३८X३८X३८X३८X३८	= ७९१३५१६८	,,
३९X३९X३९X३९X३९	= ९०२२४१९९	,,
४०X४०X४०X४०X४०	= १०२४००००००	(नौ अक)

यहाँ तक का निरीक्षण यह स्पष्ट करता है कि इन सख्याओ को याद रखने के लिए, वे कितने अको की है, यह बात विशेष महत्त्व की है। उसके अन्त की सख्या तो समझी जा सके ऐसी है परन्तु दशक का परिवर्तन कब होता है ? यह जानने योग्य है। उसका इस रीति से विभाग करने पर पता लग सकता है। उनमे भी जिन सख्याओ मे सख्या के अको की वृद्धि होती हो उतनी ही याद रखने की जरूरत है। वे सख्या निम्नोक्त है—

४१X४१X४१X४१X४१	= ११५८५६२०१	(नव अक)
४२X४२X४२X४२X४२	=	
४३X४३X४३X४३X४३	=	
४४X४४X४४X४४X४४	=	

४५X४५X४५X४५X४५	=	
४६X४६X४६X४६X४६	=	
४७X४७X४७X४७X४७	=	
४८X४८X४८X४८X४८	=	
४९X४९X४९X४९X४९	= २८२४७५२४९	(नव अ क)
५०X५०X५०X५०X५०	= ३१२५०००००	,,
६०X६०X६०X६०X६०	= ७७७६०००००	,,
६४X६४X६४X६४x६४	= १०७३७४१८२४	(दस अ क)
७०X७०X७०X७०X७०	= १६८०७००००००	,,
८०X८०X८०X८०X८०	= ३२७६८०००००	,
९०X९०X९०X९०X९०	= ५९०४९०००००	,,
१००X१००X१००X१००X१००	= १००००००००००	(ग्यारह अ क)

इसका सार यह है कि—

१ पाँच अ क की सख्या तक अन्त मे आया हुआ अ क ही पंचघात का मूल है ।

२ छह अ क की किसी भी सख्या मे पूर्व मे एक होता है ।

३ सात अ क की सख्या के अन्त मे ६ से ९ तक की सख्या मे पूर्व मे १ है, और ० से ५ तक की सख्या मे २ है ।

४ आठ अ क को सख्या मे मात्र अन्त की सख्या की गिनती से विभाग हो जाए वैसा नही हैं, क्यो कि इसमे सख्याएँ अधिक है । जिससे इस प्रकार की सख्याएँ दो-दो बार आती है । जैसे कि—

> ११८८१५७६ और ६०४६६१७६
> १४३४८९०७ और ६९३४३९५७ आदि

इसलिए इनका वर्गीकरण पूर्व के अ को द्वारा करना चाहिये । पूर्व के अ को मे से दो अ क इस कार्य के लिए पर्याप्त हैं । उस रीति से ११ से २० तक की सख्या मे आगे २ अ कित होते हैं और २४ को लेकर बाद की सख्या मे ३ अ कित होते है ।

५ नव अ क की सख्या मे भी इसी भाँति वर्गीकरण करते हुए १० से २८ तक की सख्या के पूर्व मे ४ है, ३० से ७६ तक की सख्या के पूर्व मे ५ होते है और ७७ से ९९ तक की सख्या के आगे ६ होते है ।

६ १० अ क की सख्या मे भी इसी तरह वर्गीकरण करते हुए १० से १५ तक की सख्या मे ६, १६ से ३१ तक की सख्या मे ७, ३२ से ५८ तक की सख्या मे ८ और ५६ से ६६ तक की सख्या मे ६ होते है।

७ ग्यारह अ क की सख्या मे केवल १०० की सख्या ही है।

इस समस्त वर्गीकरण को निम्नोक्त पक्तियो के आधार पर याद रखा है—

पच घात नु पकडो पूँछ, रिपु ने आगल एक मूँछ,
वारने अन्ते कोतुक थाय, एक महाद्वीप बे थई जाय।
सिद्धि नानी राधा बे, बाकी नी तो त्रण त्रण छे,
निधि ये चार पाँच ने छँ, राश थी बीमो बाध्यो जो,
दिक्पालो छ थी नव छँ, नप्पु गीनी पाश थी ले।

और इनका भी सार रूप एक ही दोहा है

रिपु मूँछ वार दीवो अने सिद्धि राधा एक।
बाँध्यो बीमो राश थी नप्पु जुगारी छेक।

इसके सार का कल्पना चित्र मन मे इस प्रकार खीचना है। बीमा कम्पनी के रिपु और नप्पु नामक दो नौकर रविवार की रात्रि मे दीपक जलाकर आफिस मे जुआ खेल रहे है। यह दृश्य राधा नाम की नन्ही बालिका देख रही है। इतने मे पुलिस आकर उन्हे पकड लेती हैं, और पचनामा के लिए बयान लेने लगती है।

इस चित्र मे पचनामा पचघात की याद दिलाता है। इसलिए कि इस चित्र का सम्बन्ध पचघात के साथ है. उनमे रिपु, वार, द्वीप नन्ही राधा, बीमा की आफिस, बीमा और नप्पु जुवारी, ये मुख्य विषय है, जो अनुक्रम से ६, ७, ८, ६, और १० की सख्या का स्मरण करते है ये नाम याद आते ही 'पचघात की पकडो' यें पक्तियाँ भी बराबर याद आती है।

इस साधन से १ से १०० तक की पचघात की सख्या का मूल ३० सैकिण्ड एक ? मिनट के अन्दर बताया जा सकता है जैसे कि—

१६८०७ का पचघात मूल क्या है ? ७१ क्योकि सख्या पाँच अ क की है और पाँच अ क वाली सख्या का अन्तिम अ क ही ग्रहण करना है।

२४७६१९९ का पचघात का मूल क्या है ? १९ कारण कि अ क सात है, इसलिए वार सख्या है । वार के अन्त मे कौतुक होता है, इसलिए (महा) ६ से ९ तक आगे १ होता है और (द्वीप) ० से ५ तक आगे २ होते है । इसलिए यहाँ आगे एक होना चाहिये । पीछे का अ क निश्चित ९ ही है । इसलिए उत्तर १९ हुआ ।

२८६२९१५१ का पचघात का मूल क्या है ? ३१ । क्यो कि सख्या आठ अ क की है, इसलिए सिद्धि वर्ग की है । उनमे राधा अर्थात् ११ से २० तक की सख्या के पूर्व मे २ है और बाकी की सख्या मे ३ है । इसलिए पूर्व का अ क ३ पीछे निश्चित १ वे दोनो मिल कर ३१ हुए ।

६९३४३९५७ का पचघात मूल क्या है ? ३७ । सख्या आठ अ क की है, इसलिए सिद्धि वर्ग की है, उनमे आगे २ अ क २० से अधिक है, इसलिए आगे ३ और पीछे का अ क ७ कुल ३७ ।

२०५९६२९७६ का पचघात मूल क्या है? ४६, क्यो कि सख्या नव अ क ही है अर्थात् विधि वर्ग की है । उनमे राशि से अर्थात २८ से आगे की सख्या ४ है । २८ वीमा तक की अर्थात् ७६ तक की सख्या ५ है और बाद की ६ है । यह आगे की सख्या २० है । इसलिए ४ और पीछे के ६ मिलकर ४६ हुई ।

१९३४९१७६३२ का पचघात मूल क्या है ? उत्तर ७२ । क्यो कि सख्या १० अ क की है । इसलिए दिक्पाल वर्ग की है । उसके आगे नप्पु १५ तक की सख्या हो तो ६, गीनी अर्थात् ३१ तक की सख्या हो तो ७, पाश अर्थात् ५८ तक की सख्या हो तो ८ और शेष की सख्या के लिए ९ समझने चाहिए । यहाँ सख्या २० होने से आगे ७ है और पीछे २ है, मिलकर ७२ हुई ।

इस पद्धति से १ से १०० तक की सख्याएँ जो पूर्ण पचघात हैं, उनका मूल भाव-बन्धन से बताया जा सकता है ।

यह विषय अति गहन है, जिमसे इसमे बुद्धि को जितनी कसनी हो उतनी कसी जा सकती है । एक बार बराबर व्यवस्थित विचारणा हो चुकी हो और भाव का बन्धन यदि यथार्थ हो गया हो, तो वह बराबर याद रह सकता है ।

मंगलाकाक्षी
धी०

पत्र तेईसवाँ

व ान-प्र ोग

प्रिय बन्धु,

पिछले पत्र के द्वारा तुम समझ गये होगे कि सामान्य मनुष्य को जो चीज असाधारण लगती है, वह बुद्धि और स्मृति के उचित विकास से साधी जा सकती है। इस बात की विशेष प्रतीति अवधान प्रयोग दिलवाते हैं।

अवधान-प्रयोग अर्थात् अवधान के प्रयोग। 'अवधान' शब्द सामान्यतया धारण करना, ध्यान मे लेना यह अर्थ बताता है। वह यहाँ परम्परा से ग्रहण, धारण और उदबोधन इन तीनो का सयुक्त अर्थ सूचित करता है। इसलिए जिन प्रयोगो मे, अलग-अलग मनुष्यो द्वारा कहे हुए अलग-अलग विषयो को एक के बाद एक ग्रहण किया जाता है और उन समस्त को याद रखकर पीछे तुरन्त ही क्रमश दुहराया जा सके, उन्हे अवधान-प्रयोग कहते है। इनमे कुछेक विषय मूल क्रम मे ही कहने के होते है। कुछेक के प्रत्युत्तर देने होते है और कितनेक प्रश्नो के साथ जुडी, उन उन शर्तो को पूरा करना होता है। इस तरह जो आठ विषयो को धारण कर सकते हैं, वे अष्टावधानी कहलाते है जो सौ विषयो को धारण कर सकते है, उन्हे शतावधानी कहा जाता है और जो हजार विषयो को धारण कर सकते हैं वे सहस्रावधानी कहलाते है। हमारे देश मे हुए अवधानकारो के समुदाय मे से कुछेक का परिचय निम्नोक्त पक्तियो द्वारा मिलता है—

> श्री मुनिसुन्दर सूरीरवधानसहस्रकारक ख्यात।
> व्याकरण-न्याय-गणितादिषु निष्णात कविप्रधानोऽभूत् ॥१०॥
>
> श्रीमद् - यशोविजय - वाचकपुङ्गवोऽभूत्,
> सिद्धचम्वरेन्दु (१०८) कलिताल्ललितार्थविस्ताद्।

ग्रन्थाँश्चकार जितकाश्यबुध प्रकाण्ड
सिद्धावधानकुशलो विबुधाग्रणीयं ॥१२॥

आसीत् महाकविवरश्रुत - गट्टुलाल.
आचार्यशङ्कर गुरुश्च शतावधानी ।
अद्यापि विश्रुत - यशा कविराजचन्द्र,
ख्याति दधाति विदुषा मुनि रत्नचन्द्र ॥१३॥

(शतावधान प्रयोग के अवसर पर बीजापुर मे लेखक को समर्पित शतावधानाभिनन्दनम् नाम के बत्तीस श्लोकी काव्य मे से)*

श्री मुनि सुन्दर सूरि सहस्रावधानी के रूप मे विख्यात है। व्याकरण, न्याय और गणित के विषय मे अत्यन्त निष्णात थे तथा कवियो मे श्रेष्ठ थे।

महामहोपाध्याय श्री यशोविजय जी महाराज विद्वानो मे सुप्रसिद्ध थे। उन्होने तत्त्वबोध से भरपूर और विविध छन्द-अलकार से बहुत कमनीय १०८ ग्रन्थो की रचना की है। उन्होने काशी मे सर्व पण्डितो पर तत्त्व-चर्चा मे विजय पाई थी। वे अवधान के विषय मे अतिशय कुशल थे। इस कारण विद्वान् उनका बहुत सम्मान करते थे।

कविवर गटटूलाल जी तथा शकर लाल माहेश्वर भट्ट शतावधानी थे, वैसे ही आज तक भी जिनका यश गूँज रहा है वे कविराजचन्द्र जी और विद्वानो मे प्रख्यात मुनि रत्नचन्द्र जी भी शतावधानी थे।

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्र जी (सन्त बाल), मुनि श्री जयानन्द जी, मुनि श्री धनराज जी स्वामी का नाम भी इस पक्ति मे अकित करने योग्य है।

अवधान-प्रयोगो मे कौन से विषय किस पद्धति से ग्रहण करने चाहिये, इसका विवेचन लेखक द्वारा ता० १६-४-३६ के दिन प्रात. काल बम्बई के सुप्रसिद्ध मेट्रो थियेटर मे श्रीमान् पुरुषोत्तमदास

---

* शतावधानी पण्डित श्री धीरजलाल शाह जीवन-दर्शन ग्रन्थ मे यह काव्य पूरा छपा है।

ठाकुरदास सी० आई० ई० के सभापतित्व मे किये गये प्रयोग से जाना जा सकता है ।

विषयानुक्रम

१ ६ समान अ कों का वर्ग करना ।

२ ईस्वी सन् के अमुक वर्ष के अमुक महीने की अमुक तारीख को क्या वार था ? यह खोज निकालना ।

३. सीधे आडे और तिरछे खानो को गिनते हुए एक समान सख्या आए, इसी प्रकार नव खाना वाले जादुई यन्त्र बनाना । (प्रश्न-कर्ता द्वारा कथित सख्या का ही परिणाम लाना, सख्या तीन से विभक्त हो ऐसी होनी चाहिए । अवधान-कार प्रथम बार तीन खाने भरायेगा) ।

४ ऊपर के अनुसार ही १६ खानो के चौरस यन्त्र मे कही हुई सख्या भरना (प्रश्नकर्ता कोई भी सख्या दे सकता है) ।

५ ३६ अ को की लम्बी सख्या याद रखना (प्रश्नकर्ता ३६ अ को की एक सख्या लिखकर उसके तीन तीन अ को के १२ टुकड़े बनाएगा । हरेक टुकडे को नम्बर देकर उन्हे क्रम-व्युत्क्रम से बोलेगा । पहली बार उनमे से जो चाहेगा वह एक टुकडा बोलेगा ।

६ सस्कृत भाषा का ६ शब्दो का वाक्य याद रखना (इन शब्दो को प्रश्नकर्ता नम्बर देगा । प्रथम यह नम्बर बोल के शब्द एक ही बार स्पष्टता से कहेगा । ६ शब्दो को आगे पीछे सुनना, प्रत्युत्तर के समय उस वाक्य को क्रमश प्रस्तुत करना ।

७ ३६ अ क की सख्या का दूसरा टुकडा सुनना ।

८ अवधानकार कुछ वार्ता प्रस्तुत करेगा ।

९ हिन्दी भाषा का ६ शब्दो का वाक्य (न० ६ के अनुसार) ।

१० ३६ अ क सख्या का एक टुकडा ।

११-१२. प्रश्नकर्त्ता सख्याबद्ध वस्तुओ मे से ८ वस्तुओ को पसद करके उन्हे नम्बर देगा । उन वस्तुओ के समुदाय से यथेष्ट दो वस्तुओ का अवधानकार को पीछे से स्पर्श करायेगा जब इस प्रकार

इन समस्त वस्तुओं का स्पर्श हो जाएगा। तब नम्बर के क्रम मे उन्हे अवधानकार बताएगा।

१३ ६ अंको का वर्ग करना।

१४-१५ पशु-पक्षियो के चित्रो को देखकर याद रखना। यहाँ दो चित्र दिखाये जायेंगे।

१६-२५ ताश के पत्तो मे से किन्ही दस पत्तो को दिखाना। प्रश्नकर्त्ता पहले अपने नम्बर देगा फिर कोई पत्ता बताएगा।

२६ गुणाकार का गुप्त अंक प्रकाशन। प्रश्नकर्ता एक बडा गुणाकार तैयार करेगा, फिर गुण्य, गुणक और गुणाकार की सख्या सुनाएगा पर गुणाकार की सख्या सुनाते समय एक अंक छुपा लेगा। वह अ क कौन सा है वह प्रत्युत्तर समय मे प्रकट किया जावेगा।

२७ कागज पर लिखे हुए सवत्, मास, तिथि, पक्ष और वार को गणित के आधार पर खोज निकालना।

२८ नव खाना वाले यन्त्र को आगे भरना।

२९ सोलह खाना वाले यन्त्र को आगे भरना।

३० ३६ अ क की सख्या का एक टुकडा।

३१ मराठी भाषा का ६ शब्दो का एक वाक्य। (न० ६ के मुताबिक)।

३२ ३६ अंक की संख्या का एक टुकडा।

३३ अवधानकार अपनी वार्ता को आगे बढाएगा।

३४ अ ग्रेजी भाषा का ६ शब्दो का वाक्य। (न० ६ के अनुसार)।

३५ ३६ अ क की संख्या का एक टुकडा।

३६-३७ दूसरी दो वस्तुओ का पीछे से स्पर्श कराना।

३८ चतुराक्षरी काव्य बनाना। चार अक्षरो का कोई भी शब्द कहना। इस शब्द का क्रमशः एक-एक अक्षर लेकर कविता बनाना।

३९-४० दूसरे दो चित्र देखना।

४१-५० ताश के पत्तो में से अन्य दस पत्तों को याद रखना।

५१ चार व्यक्ति अलग-अलग एक दूसरे को न जाने इस प्रकार कागज पर सख्या लिखेगे। अवधानकार इस तरह गणित करायेंगे कि जिससे चारो की सख्या का उत्तर एक समान आये।

५२ नव मनुष्य अपना एक समूह बना कर प्रत्येक का नम्बर स्थिर करें, फिर कोई भी एक व्यक्ति एक अंगूठी अपने दाये या या दाहिने हाथ की कोई भी अ गुली के कोई भी पैरवे मे छुपा कर रखे। गणित के आधार पर वह मुद्रिका किसके पास, कौन से हाथ की अ गुली के कौन से पैरवे पर है, अवधानकार प्रकट करेंगे।

५३ नव खाना वाला यत्र पूर्ण भरना।

५४ सोलह खाना वाला यत्र आगे भरना।

५५ ३६ अ क की सख्या का एक टुकडा।

५६ ससार की किसी भी भाषा का छह शब्दो का एक वाक्य। (न० ६ के अनुसार)

५७ ३६ अंक की सख्या का एक टुकडा।

५८ अवधानकार वार्ता को आगे बढाएँगे।

५९ ससार की किसी भी भाषा का छह शब्दो का एक वाक्य। (न० ६ के अनुसार)

६० ३६ अ क की सख्या का एक टुकडा।

६१-६२ अन्य दो वस्तुओ का पीछे से स्पर्श कराना।

६३ समान अन्तर वाली पाँच अ को की ११ सख्याओ का योग निकालना। इस समय उनमे से छह सख्याएँ प्रश्नकर्ता सुनाएगा।

६४-६५ दूसरे दो चित्र दिखाने।

६६-७५ ताश के पत्तो मे से तीसरे दस पत्तो को याद रखना।

७६ पाँच घात वाली सख्या का मूल निकालना। सख्या पूर्ण पाँच घातवाली होनी चाहिए। (दस अ को तक)।

७७. एक व्यक्ति एक बोर्ड पर लिखे सख्याबद्ध प्रश्नो मे से मन मे प्रश्न धारण करे, वह प्रश्न क्या है ? कार्ड के आधार पर प्रकट करना।

७८ नं० ६३ का विषय : योग की दूसरी तीन सख्याएँ सुनानी।

७९. सोलहखानों वाला यंत्र पूर्ण करना।

८० ३६ अंक की सख्या का एक टुकडा सुनना।

८१ ससार की किसी भी भाषा का छह शब्दो का एक वाक्य याद रखना। (नं० ६ के अनुसार)।

८२ ३६ अंक की संख्या का एक टुकडा सुनना।

८३ चालू वार्ता को पूर्ण करना।

८४ संसार की किसी भी भाषा का छह शब्दो का वाक्य।

८५. ३६ अंक की सख्या का एक टुकडा।

८६-८७ चौथी दो वस्तुओ का पीछे से स्पर्श कराना।

८८ योगवाली शेष की दो सख्याएँ सुनाना।

८९-९० चौथे दो चित्र देखने।

९१-१०० ताश के पत्तो मे से चौथे समूह के दस पत्तो को याद रखना।

इन विषयो को धारण करने के बाद उनका उत्तर बराबर दिया गया।

ता० १०-१-४२ के दिन सायकाल बम्बई के सर कावस जी जहाँगीर हाल मे सेठ प्राणलाल देवकरण नानजी के जे० पी० के सभापतित्व मे हुए अवधान-प्रयोग मे निम्नोक्त विषयो को धारणा की गई—

१-१६ १६ व्यक्तियो द्वारा अलग-अलग दिखाई गई वस्तुओ को याद रखना।

१७ चार अलग-अलग व्यक्ति अपने मन मे सख्या धारण करेगे अवधानकर्ता उन हरेक को एक साथ गणित कराकर सबका उत्तर एक ला देगे।

१८ नव खाना वाला सर्वतोभद्र यंत्र भरना।

१९ सोलह खाना वाला सर्वतोभद्र यंत्र भरना।

२० ईस्वी सन् की बीसवीं सदी के किसी भी वर्ष के किसी भी महीने की कौन सी तारीख को क्या वार था बताना।

२१. गणित के आधार पर अंकित जन्म, सम्वत्, मास, पक्ष-तिथि और वार अथवा सन्, महीना, तारीख और वार बताना।

२२ एक कागज पर लिखे हुए ३१ प्रश्नों के समूह मे से किसी एक मन मे निर्धारित प्रश्न को कार्ड के द्वारा बताना।

२३. उपर्युक्त प्रकार से ही दूसरा प्रश्न बताना।

२४ नव समान अंकों का वर्ग।

२५ दस अंक तक की पचघात सख्या का मूल प्रकट करना।

२६-७३ ताश के ४८ पत्तो को मात्र पाँच मिनट मे याद रखना। बारह-बारह पत्तो का समूह एक बोर्ड पर बताना। ऐसे कुल चार बोर्ड बताये जायेंगे। हरेक बोर्ड को देखने का समय १ मिनट १५ सैकिण्ड होगा।

७४ हिन्दी भाषा के छह शब्दो को व्युत्क्रम से सुनना।

७५ मराठी भाषा के छह शब्दो को व्युत्क्रम से सुनना।

७६ गुणाकार का गुप्त अंक प्रकट करना।

७७ नव व्यक्तियो के बीच छुपाई गई अंगूठी किसके कौन से हाथ मे, कौन सी अंगुली के, कौन से पैरवे पर है, गणित के आधार पर बताना।

७८ सस्कृत भाषा के छह शब्दो का वाक्य व्युत्क्रम से सुनना।

७९ अंग्रेजी भाषा के छह शब्दो का वाक्य व्युत्क्रम से सुनकर याद रखना।

८० पाँच रुपये के नोट का नम्बर याद रखना।

८१-८४ चार टेलीफोन का नम्बर याद रखना।

८५-८६ ससार की किसी भी भाषा के छह शब्दो के दो वाक्य याद रखने।

८७-९४ टोकरी मे से आठ वस्तुओ को बिना देखे स्पर्श मात्र से क्रमवार याद रखना।

९५-१०४. पृथक्-पृथक् आठ पुस्तको को बिना देखे मात्र स्पर्श से नाम पूर्वक याद रखना।

१०५-१०८ एक ही प्रकार की चार पुस्तको का स्पर्श क्रमश. बताना।

इन विषयो को धारण करने के बाद उन समस्त का क्रम तथा प्रत्युत्तर यथार्थ रूप से बताया गया।

सन् १९३७ के जुलाई महीने मे कराची की विभिन्न सस्थाओं के सान्निध्य मे इस प्रकार के प्रयोग नव बार किये गये। उनमे गुणाकार, निबन्ध - लेखन, पादपूर्ति, अन्तर्लापिका, बहिर्लापिका, सभाषण आदि का भी कार्यक्रम रखा गया। अन्य स्थानो मे किये गये अवधान प्रयोगो के बीच-बीच मे वार्तालाप और चर्चा का समावेश भी रखा गया।

दूसरे अवधानकार अपनी अपनी रुचि के विषयो को अलग अलग प्रकार से सयोजित कर सकते है। जैसे कि पृथक्-पृथक् विषयो पर छन्द वार कविता, शतरज और पासा के दाँव, घंटनाद आदि।

इन विषयो की विवेचना से तुम जान सकोगे कि अवधान प्रयोगो मे विषयो की विविधता खूब ही होती है और उन हरेक विषय को चाहे जितनी अटपटी प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है, परन्तु सभा मे उच्च आसन पर शान्त और स्थिर-चित्त चक्षु बन्द किये बैठा हुआ अवधानकार उन हरेक विषयो को अपने मन मे एक के बाद एक सयोजित करता चला जाता है और चार या पाँच घण्टो के बाद उन समस्त का बराबर प्रत्युत्तर दे देता है। उस समय श्रोताओ के आश्चर्य का कोई पार नही रहता।

परन्तु मेरे प्रिय बन्धु! मेरे इतने पत्र बाँच लेने के बाद अब तुम्हे इस विषय मे विस्मय नही होगा। इनमे से हरेक प्रयोग के बारे मे पिछले पृष्ठो मे विवेचन कर चुका हूँ। ये समस्त प्रयोग किसी न किसी सिद्धान्त पर ही व्यवस्थित है।

मैं मानता हू कि तुम स्वय इन विषयो के पीछे रहे सिद्धान्तो को बराबर समझ सके हो। फिर भी यदि कोई विषय विशदता से ध्यान मे न आया हो तो उसके सम्बन्ध मे स्पष्टता और पूर्णता कर लोगे।

मगलाकाक्षी
धी०

पत्र चौबीसवाँ

प्रिय बन्धु !

तुम्हारा पत्र मिला, तुम्हारे प्रश्नो का उत्तर निम्न प्रकार से है।

प्रश्न—एक साथ कितनी वस्तुओ पर ध्यान दिया मकता है ?

उत्तर—ऐक समय मे एक ही वस्तु पर ध्यान दिया जा सकता है, परन्तु मन यदि बहुत ही कल्पनाशील हो तो अलग-अलग विषयो को एक के बाद एक खूब शीघ्रता से ग्रहण किया जा सकता है। इसलिए वह एक साथ अनेक वस्तुओ पर ध्यान देने जैसा लगता है, परन्तु यथार्थ मे एक साथ दो वस्तु पर ध्यान देना सम्भव नही है।

प्रश्न—अवधान-प्रयोग मे योग-शक्ति का उपयोग होता है—क्या यह सत्य है ?

उत्तर—योग शक्ति क्या है ? यह पहले समझ लेना आवश्यक है। योग, यह किसी भी प्रकार का चमत्कार अथवा प्रकृति के नियम के बाहर की वस्तु नही है, पर एक प्रकार का अभ्यास ही है। फिर वह चाहे शरीर और उसकी नसो के सम्बन्ध मे हो, मन और उसकी वृत्तियो के सम्बन्ध मे हो या परमात्मा की शक्ति के प्रकाश को प्राप्त करने के सम्बन्ध मे हो। इस अभ्यास द्वारा प्राप्त होने वाला शक्ति का खासकर एकाग्रता का उपयोग इस प्रयोग मे किया जाता है।

प्रश्न—अवधान-प्रयोग सहजशक्ति से होता है या शैक्षणिक शक्ति से।

उत्तर—कुछेक व्यक्ति इन प्रयोगो को सहज-शक्ति से कर सकते हैं, जबकि बाकी के शिक्षण-शक्ति द्वारा करते है। सहज शक्ति वाले व्यक्ति विरल और स्वल्प होते है, क्योकि उसमे अति उच्च कक्षा का मानसिक विकास अपेक्षित है।

प्रश्न—अवधान-प्रयोगो मे कोई खास विधि अपनानी पडती है, यह सत्य है न ?

उत्तर—अवधान-प्रयोग स्वय ही एक विधि युक्त प्रक्रिया है। उसमे दूसरे अनुष्ठान की अपेक्षा नही। परन्तु इन प्रयोगो की क्रिया के पूर्व शरीर का मल दूर हो जाए यह जरूर आवश्यक है तथा

उदर पर किसी प्रकार का वजन न हो तो मन की स्फूर्ति प्रशस्त और प्रबल रहती है। इस कारण बहुत से अवधानकार महान् प्रयोग के दिन, बने वहाँ तक, उपवास करते हैं और उपवास न बन सके तो दूध या फलो का स्वल्प आहार ग्रहण करते हैं। इसके सिवाय कोई खास विधि नही है।

प्रश्न अवधानकार अपने देश मे ही है या दूसरे देशो मे भी है ?

उत्तर—अन्य देशो मे भी अदभुत स्मरण-शक्ति वाले पुरुष समय-समय पर उत्पन्न होते हैं। परन्तु अवधान-क्रिया का पद्धति-युक्त विकास तो भारतवर्ष मे ही हुआ मालूम पडता है, उसमे भी जिन जातियो मे मासाहार या मदिरापान बिल्कुल वर्जित होता है, उनमे ही इस प्रकार के व्यक्ति विशेष पैदा होते हैं।

प्रश्न—अवधान कला के विषय मे आपने कोई खास ग्रन्थ देखा है ?

उत्तर—नही, इस कला का कोई खास ग्रन्थ देखने मे नही आया, और ऐसा ग्रन्थ किसी ने लिखा है यह आज तक तो जानने मे नही आया। किन्तु यह कला गुरु द्वारा उत्तरोत्तर शिष्यो को सिखाई जाती रही है, यह प्रतीत अवश्य होता है।

विदेशो मे स्मरण शक्ति और उसके विकास के विषय मे कुछेक पुस्तकें प्रकाशित हुई है पर अब तक उनमे चाहिये जितनी गहराई नही आई है।

प्रश्न—नव और छह अ क का वर्ग किस प्रकार होता है।

उत्तर—इसमे भाव बन्धन का आधार लेना अपेक्षित है।

प्रश्न—ससार की पृथक्-पृथक् भाषाएँ किस पद्धति से याद रखी जाती है।

उत्तर—भाषाएँ कुल दो प्रकार की हैं। एक तो परिचित अर्थात् जिसे हम जानते है वह और दूसरी अपरिचित अर्थात् जिसे हम नही जानते हैं वह। नही जानते है वे समस्त भाषाएँ अपने तो एक समान ही है फिर वह चाहे देश की हो और चाहे किसी प्रकार से बोली जाती हो। इन भाषाओ को सुनते समय अत्यन्त एकाग्रता रखनी अपेक्षित है जिससे उनका उच्चारण बराबर किया जा सके। इसके लिए श्रवणेन्द्रिय का भी परिपूर्ण कार्यक्षेत्र होना जरूरी है। इस तरह भाषा को ग्रहण करने के बाद उन अपरिचित शब्दो का परिचित भाषा के साथ कोई न कोई

सम्बन्ध जोडा जाता है, जैसे कि—

मची (तेलगु) तो मच मची

कदलु (तेलगु) तो कद लू मूली को साफ कर

खेमिया (बर्मी) तो खेमि या दूसरा कोई

फया (बर्मी) तो फूआ-फया।

गार्टन (जमनी) तो गारटन (गार लीपने की एक टन जितनी तैयारी की है।

रीजेम्बल (अंग्रेजी) तो रीसेबल-रिजेम्बल

लीब्रो (Libro पोर्चुगीज) लीबडो (नीम) लीब्डो लीबो।

कोमर (Comor रशीयन) तो कुमार कामार, कोमर आदि-आदि।

प्रश्न—ताश के पत्ते किस विधि से याद रखे जाते है ? उनमे हरेक प्रकार के तेरह-तेरह पत्ते होने के कारण क्या भूल होना सम्भव नही है ?

उत्तर—ताश के पत्ते याद रखने के लिए मैंने खुद ही एक खास पद्धति निश्चित कर रखी है। उसके लिए प्रत्येक पत्ते को पशु, पक्षी या मनुष्य की स्वतत्र सज्ञा दी हुई है जिससे उस वस्तु को याद रखना और उस पत्ते को याद रखना एक समान है। जैसे कि मुझे हुकम का सत्ता याद रखना हो तो उसकी जगह मैं केवल कुत्ता याद रखता हूँ। चिडी का सत्ता याद रखना हो तो सियाल याद रखता हूँ और ईट का सत्ता याद रखना हो तो मुर्गी याद रखता हूँ। उसी प्रकार हुकम का गुलाम याद रखना हो तो भील, चिडी के गुलाम के लिए जागीरदार, लाल पान के लिए राजा का चपरासी और ईट के गुलाम के लिए ब्राह्मण रसोइये को याद रखता हूँ। इन सज्ञाओ को किसी भी पद्धति के वर्गीकरण के अनुसार निश्चित कर लेना चाहिये जिससे कि सुगमता से याद रह सके।

प्रश्न—ताश के पत्तो के बारह पत्ते मात्र एक नजर से देखकर सवा मिनट मे कैसे याद रहते है।

उत्तर—बारह पत्ते चार विभागो मे तीन तीन पत्ते होते है। उन्हे देखते ही अक्षरो की सहायता से शब्द बनाये जाते है। उनके चार शब्द बनते है। उन्हे कल्पना के साथ जोड लेना होता

है। इसलिए ४८ कार्डो मे कुल १६ शब्द तैयार करके याद रखने होते है। यह कार्य मुश्किल है पर अभ्यास से सिद्ध हो जाता है।

प्रश्न—गुणाकार के गुप्त अक प्रकाशन मे क्या रहस्य है?

उत्तर—इसमे स्मृति से गिनने की पटुता खास चाहिए। जब वह कला प्रयुक्त की जाती है तो गणित के आधार पर ही गुप्ताक का प्रकटन किया जा सकता है।

प्रश्न—सवत्, मास, पक्ष, तिथि और वार बताने मे क्या विज्ञान है?

उत्तर—यह स्पष्टतया गणित का ही विषय है। इसमे भागाकार करने की विशेष दक्षता चाहिए। जिस तरह गुणन कराया गया है उसका पृथक्करण करने पर उत्तर उपलब्ध हो जाता है।

प्रश्न—बोर्ड पर लिखे हुए प्रश्नो मे से धारे हुए प्रश्न का उत्तर किस विधि से जाना जाता है?

उत्तर—यह भी गणित का प्रश्न है। उस प्रश्न के सूचक पाच कार्ड दिए जाते है। उनमे से जो कार्ड प्रश्नकर्त्ता वापिस लौटाता है, उनकी गिनती के आधार पर ही प्रश्न का नम्बर निकाला जाता है।

निबन्ध लेखन, सभाषण, चर्चा, कविता, पादपूर्ति इन समस्त विषयो का आधार अवधानकार की विद्वत्ता पर निर्भर है। इसलिए उसकी जिस प्रकार की तैयारी हो उस प्रकार का कार्य कर सकता है। धुरन्धर विद्वान अवधानकार जनता के मन पर इस विषय की गहरी छाप छोड सकता है।

अवधानकार की स्मरण शक्ति की अपेक्षा ग्रहण करने की पद्धति अनोखी होती है। उसकी वजह से एक बार ग्रहण किया हुआ भी वह भूलता नही। विस्मरण की कला भी उसकी परिपूर्ण सीखी हुई होती है। उससे वह इतने समग्र विषय धारण कर सकता है। यदि एक विषय ग्रहण करने के बाद मन का ध्यान उससे हटाकर दूसरे विषय पर न ले जा सके तो विषय ग्रहण ही न हो सके। अत वह एक बार विषय को ग्रहण करने के बाद उसे विश्वासपूर्वक छोड देता है—भूल जाता है।

अवधान प्रयोगो का रहस्य यही है कि वस्तु को ग्रहण करने की कला ठीक-ठीक सीखो।

मगलाकाक्षी
धी०

□

पत्र पच्चीसवाँ

उप ं ार

प्रिय बन्धु,

स्मरण शक्ति के विकास के लिए जो-जो सिद्धान्त उपयोगी माने है, उनमे से बहुत सारो का सार मैने तुम्हे बता दिया है और तुम इन सिद्धान्तो के उपयोग से जान सके हो कि तुम्हारी स्मरण शक्ति मे कितना अधिक परिष्कार हुआ है, इतना ही नही पर उसके साथ तुम्हारे मन की दूसरी शक्तियो मे भी बहुत विकास हुआ है। अत पद्धति-पूर्वक स्मरण-शक्ति का विकास करने पर समस्त मन की अपूर्व जागृति होती है, यह निश्चित हैं।

इस समग्र विवेचन का सार यह है कि किसी भी विषय को याद रखने का आधार वह किस विधि-सग्रह किया जाता है, उसके ऊपर निर्भर है। इसके लिए आठ सिद्धान्तो को चिन्तन मे रखना जरूरी है वे निम्नलिखित है—

१. जो विषय एकाग्रता से ग्रहण किया हुआ हो वह अच्छी तरह से याद रहता है।
२ जो रसपूर्वक ग्रहीत हुआ हो, वह अच्छी तरह याद रहता है।
३ जो विषय जाग्रत इन्द्रियो द्वारा ग्रहण किया हुआ होता है वह अच्छी तरह याद रहता है।
४ जो विषय बने उतनी अधिक इन्द्रियो द्वारा ग्रहीत होता है, वह अच्छी तरह याद रहता है।
५ जो विषय समझपूर्वक ग्रहण किया जाता है, वह अच्छी तरह याद रहता है।
६. जो विषय व्यवस्थापूर्वक ग्रहण किया जाता है, वह अच्छी तरह याद रहता है।

७ जो विषय परिचित विषय के साथ किसी भी प्रकार के साहचर्य से जोड दिया जाता है वह अच्छी तरह याद रहता है।

८ जिस विषय का पुनरावर्तन होता रहता है, वह अच्छी तरह याद रहता है।

इन सिद्धान्तो का तात्पर्य यह है कि प्रथम तो जिस विषय मे निष्णात होना हो, उस विषय मे पूरा रस होना चाहिए। उसके लिए एकाग्रता सीखनी चाहिए, इन्द्रियो को बराबर कार्यक्षम बनाना चाहिए, उनका हो सके उतना उपयोग करना सीखना चाहिए। समझ को परिष्कृत करना चाहिए। अर्थात् विषय का स्मरण स्पष्ट हो वैसा दिमाग बनाना चाहिए, सीखी हुई वस्तुओ को मन के चोक मे बराबर व्यवस्थित करना चाहिए; उन्हे किसी भी विषय के साथ सयोजित कर लेना चाहिए और समय-समय पर उनका पुनरावर्तन करते रहना चाहिए। यदि इस प्रकार प्रयास किया गया तो निश्चित ही प्रगति होगी।

'ज्ञान कण्ठा, दाम अण्टा' इस प्राचीन उक्ति का सार यही है कि जिस विद्या मे निष्णात होना हो वह कठस्थ होनी चाहिए अर्थात् उसके छोटे-बडे तमाम अ ग बराबर ध्यान मे रहने चाहिएँ। प्रमाण पुस्तकें उपयोगी हैं पर हरेक निर्णय मे उनका उपयोग नही किया जा सकता। दूसरे प्रकार से कहे तो जो कार्य आनन फानन मे होता है उसके लिए प्रमाण पुस्तको तक दौडना सम्भव नही।

विद्या को तरोताजा रखने के लिए निम्नोक्त दोहा याद रखो।

पान सडे, घोडा अडे, विद्या विसर जाय।
तवा ऊपर रोटी जले, कहो चेला किण न्याय॥

नागर बेल के पान सड रहे है, घोडा हठ पर चढ गया है, सीखी हुई विद्या भूली जा रही है और तवे पर रोटी जल रही है, प्रिय शिष्य! ऐसा होने का क्या कारण है? गुरु द्वारा पूछे गये इन चार प्रश्नो का उत्तर उसका चतुर शिष्य एक ही वाक्य मे देता है कि—गुरुजी फेरा नही अर्थात् नागर बेल के पानो को फेरा नही इसलिए वे सड रहे है। घोडे को फेरा नही, निरन्तर फिराया घुमाया नही इसलिए वह हठ पर चढ गया है, विद्या का पुनरावर्तन नही किया गया इसलिए वह भूली जा रही है और तवे ऊपर की रोटी को भी

फेरा नही गया इसलिए वह जल रही है अर्थात् इन सारे विषयो मे फेरने की क्रिया नही की गई।

तुम भी इन पत्रो को, इस पत्र मे विज्ञापित सिद्धान्तो को यदि प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक बार, दो बार, तीन बार फेर लोगे तो तुम्हारी स्मरण कला सोलह कलाओ से उद्दीप्त हो उठेगी, इसमे सशय नही। पुनरावर्तन से तुम्हे नया ज्ञान मिलेगा। जैसे गाय समस्त घास चर जाती है और फिर शान्ति से उगल-उगल कर निकलती है वैसे ही तुम भी एक बार विषय को सामान्यतया ग्रहण करने के बाद फिर विशेष रूप से धारण करोगे तो उनके सूक्ष्म अङ्गो का रहस्य तुम्हारे समक्ष एकदम खुल जाएगा।

आज का हमारा शिक्षण जिस ढग से चलता है। उसमे समय और शक्ति का बहुत व्यय होता है और जो परिणाम आना चाहिए वह आता नही है। इसका कारण यह है कि बुद्धि के मुख्य आधारभूत सभी स्मरण-शक्ति के सिद्धान्तो का उसमे यथार्थ रूप से समावेश नही किया गया। यदि इन सिद्धान्तो का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाय, तो उतने समय मे बहुत अधिक और बहुत अच्छी तरह से सीखा जा सकता है।

स्मरण-कला का प्रकाश पाए हुए देश के सब पुरुष और महिलाएँ धर्म और देश की वास्तविक सेवा करने के लिए भाग्यशाली हो यही मङ्गलकामना है।

तुम्हारा सब तरह से अभ्युदय चाहता हुआ इस पत्र को पूर्ण कर रहा हूँ। ॐ शान्ति ! शान्ति. !! शान्तिः !!!